* आश्चर्य प्रश्नविज्ञान *

जिसमें

शुभाशुभ प्रश्नोत्तर अतीव उत्तमोत्तम रीति
से वर्णन हैं जिसके द्वारा मनुष्य सदैव भ
विष्यद्वृत्तान्त शुभ और अशुभ जानकर
सक्ता है और इसके अनुसार चलनेपर
सुन्दर फल सुखपूर्वक प्राप्त होसक्ते हैं

। जिसको ।

उन्नाम प्रदेशान्तर्गत दुबेपुरनिवासि पण्डित
गङ्गाप्रसादजीने विद्वानों के हितके लिये
संस्कृत से देशभाषा में अनुवाद किया

दूसरीबार

लखनऊ
मुन्शी नवलकिशोर (सी, आइ, ई) के छापेखाने में छपी
जुलाई सन् १९०७ ई० ॥

विज्ञापन ॥

"यह आश्चर्य्य प्रश्न विज्ञान," जिसके द्वारा प्रति मनुष्य अपना २ भविष्यद्वृत्तान्त अति सुलभतासे जानकर तथा स्वर काय्यों में सावधान हो हानियों से पृथक् रहकर लाभही लाभ प्राप्त करसक्ता है, सम्पूर्ण प्रच्छकों के हितार्थ संस्कृत से भाषानुवाद कर प्रकाश की जाती है, कि इस के द्वारा सम्पूर्ण सज्जन गण लाभ उठावें इति शम् ॥

२७-१२-६०
दुबेपुर

पं० गंगाप्रसाद शर्म्मा
दुबेपुर
ज़ि० उन्नाउ

॥ स्वर्गप्रश्नविज्ञानकी भूमिका ॥
१६ प्रश्न ॥

१ क्या मेरी इच्छा सिद्ध होगी ।
२ क्या जिसकार्य्य में संकटिबद्धहूं उसमें साफल्यताहोगी ।
३ इसकार्य्य में मुझको हानि या लाभ होगा ।
४ क्या मेरा अमुक स्थान में वास योग्य है ।
५ क्या विदेशी पुनः लौट आवेगा ।
६ क्या चौरोपहृत द्रव्य पुनः मिलजायगी ।
७ क्या मेरामित्र अपने सच्चेदिलसे मित्रता करता है ।
८ क्या मेरी यात्रा होगी ।
९ क्या अमुक पुरुष मेरा सन्मान तथा प्रतिष्ठाकरता है ।
१० क्या यह ब्याह होगा ।
११ मुझे किसतरहका वर या स्त्री मिलेगी ।
१२ क्या अमुक स्त्री के पुत्र या कन्या होगी ।
१३ क्या अमुक रोगी रोग से निर्मुक्त होगा ।
१४ क्या अमुक बंदी बंदीगृहसे छूटेगा ।
१५ मैं आजके दिन प्रसन्न या अप्रसन्न रहूंगा ।
१६ मेरे स्वप्नका फलादेश क्या है ।

प्रश्नचक्रमिदम् ॥

प्रश्न संख्या	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६
१	अ	ब	स	द	य	फ	ग	ह	ज	क	ल	म	न	थ	प	च
२	ब	स	द	य	फ	ग	ह	ज	फ	ख	म	म	ब	प	च	अ
३	स	द	य	फ	ग	ह	ज	फ	ख	म	न	थ	प	च	अ	ब
४	द	य	फ	ग	ह	ज	फ	ख	म	न	थ	प	च	अ	ब	स
५	य	फ	ग	ह	ज	फ	ख	म	न	थ	प	च	अ	ब	स	द
६	फ	ग	ह	ज	फ	ख	म	न	थ	प	च	अ	ब	स	द	य
७	ग	ह	ज	फ	ख	म	न	थ	प	च	अ	ब	स	द	य	फ
८	ह	ज	फ	ख	म	न	थ	प	च	अ	ब	स	द	य	फ	ग
९	ज	फ	ख	म	न	थ	प	च	अ	ब	स	द	य	फ	ग	ह
१०	फ	ख	म	न	थ	प	च	अ	ब	स	द	य	फ	ग	ह	ज
११	ख	म	न	थ	प	च	अ	ब	स	द	य	फ	ग	ह	ज	फ
१२	म	न	थ	प	च	अ	ब	स	द	य	फ	ग	ह	ज	फ	ख
१३	न	थ	प	च	अ	ब	स	द	य	फ	ग	ह	ज	फ	ल	म
१४	थ	प	च	अ	ब	स	द	य	फ	ग	ह	ज	फ	ख	म	न
१५	प	च	अ	ब	स	द	य	फ	ग	ह	ज	फ	ख	म	न	थ
१६	च	अ	ब	स	द	य	फ	ग	ह	ज	फ	ख	म	न	थ	प
बिंदु	⁞	‥	⁝‥	‥	‥	⁝⁝	‥	⁝	⁝‥	⁝‥	∷	⁝⁝	⁝‥	‥	‥	⁞⁞

ग

१ यह मित्रों का शुभ चिन्तक है।
२ द्रव्य न मिलेगी।
३ विदेशी अचानक लौट आवेगा।
४ स्वदेश मेंही सर्व क्लेश निवृत्त हो-होजावेंगे।
५ लाभ न होगा।
६ ईश्वर सिद्धिदान करेगा।
७ नहीं।
८ शीघ्र शत्रुता से ब-चोगे।
९ आजका दिन तुम को शुभ नहीं है।
१० बन्दी न छूटेगा।
११ नैरोग्य होगा।
१२ एक कुत्सित कन्या होगी।
१३ एक सुन्दर युवक वर मिलेगा।
१४ इसव्याह में क्लेश होगा।
१५ मित्रता त्याग दो या तुम्हारीप्रतिष्ठा नहीं करता।
१६ तुम दूर यात्रा न करोगे।

च

१ मित्रों में आनन्द होगा।

२ आजका दिन शुभ नहीं।

३ प्रकाश में क्लेश है परन्तु परिणामआनन्ददायी है।

४ नैरोग्यताकी आश त्यागदो।

५ पुत्रोत्पन्न होगा।

६ तुम्हारावर द्रव्यवान् होगा।

७ इसकाव्याह सिद्ध है।

८ यह पुरुष बहुत स्नेह करता है।

९ निर्भय यात्रा करो

१० इस पुरुषका विश्वास न करो।

११ सुख पूर्वक द्रव्य मिलेगी।

१२ विदेशी शीघ्रलौटेगा।

१३ अन्य स्थानमें रहना योग्य नहीं है।

१४ यात्रामें लाभहोगा

१५ सिद्धि होगी।

१६ उपस्थितही में सतोष रक्खो।

ज

१ पूर्वस्नेह अन्त में घट जावेगा।

२ यात्रा व्यर्थहै।

३ मित्र शुद्धहै।

४ द्रव्य अन्यद्वारा मिलेगा।

५ विदेशी सानन्द गतिशीघ्रलौटेगा।

६ अन्यदेशमें प्रारब्ध बढ़ेगा।

७ ईश्वरपर भरोसा रक्खो तथा याच्ञा करो।

८ यह आनन्द शीघ्रही दुःखदायी होगी।

९ सिद्धि होगी।

१० हानि नहींहै।

११ सावधानरहो शत्रु हानि चाहरहा है।

१२ शीघ्रही मुक्तहोगा।

१३ नैरोग्यहोगा।

१४ सुन्दरीकन्याहोगी।

१५ इच्छानुसारही वर पाओगी।

१६ इसव्याहसे इच्छा सफल न होगी।

द

१ अन्य देश में लाभ होगा।

२ यात्रामेंलाभहोगा।

३ तुम्हारा प्रारब्ध ईश्वर बढ़ायेगा।

४ इच्छा त्यागो अन्यथा क्लेशहोगा।

५ कार्य में विलम्बहै।

६ इच्छा के विरुद्धही होगा।

७ बन्दी छूटजायगा।

८ एकपक्ष में नैरोग्य होगा।

९ पुत्र होगा।

१० वर अत्यन्त स्नेह करेगा।

११ ब्याह सिद्धहोगा।

१२ मित्रस्नेह नहीं करता।

१३ यात्रा सिद्धहोगी।

१४ उसके कथन का विश्वास नहीं।

१५ क्लेशसहनकर द्रव्य मिलेगी।

१६ विदेशी के पुन दर्शन दुर्लभहैं।

न

१ व्याधिसे मुक्तहोगा किन्तु आयु स्वल्प है।
२ कन्या उत्पन्नहोगी
३ तुम्हारा ब्याह कुलीनकेसाथहोगा।
४ इस ब्याहमें लाभ होगा।
५ प्रतीच्छा करो अच्छामित्र मिलेगा।
६ स्थान त्याग न करो।
७ यह शुद्ध मित्र है।
८ चोरीकी द्रव्य न मिलेगी।
९ विदेशी बहुत काल में आवेगा।
१० यात्रा में कुमित्रों से बचो अन्यथा क्लेशहोगा।
११ तुम्हारीइच्छा सफल होगी।
१२ सिद्धहोगा।
१३ उपस्थित वृत्तिपर सन्तोष करो।
१४ क्लेश सहन कर आनन्द होगा।
१५ आनन्दका समय समीप है।
१६ बंदी बदीगृह में ही मरेगा।

प

१ तुम को आज प्रसन्नता होगी।

२ वदी शत्रु से पीड़ित हे।

३ रोगी नैरोग्यहोगा।

४ दो कन्या उत्पन्न होंगी।

५ द्रव्यवान् वर मिलेगा।

६ व्याह में अत्यन्त आनन्द होगा।

७ मित्रता शुद्ध है।

८ गृहमेंही आनन्द होगा यात्रा न करो

९ मित्र अत्यन्त हितेच्छू है।

१० चौरोपहृतद्रव्य न मिलेगी।

११ विदेशी आलस्य से नहीं आता।

१२ स्वदेश के व्यापारही को धन्य समझो।

१३ लाभहोगा।

१४ सिद्धिहोगी।

१५ इच्छा पूर्ण होगी।

१६ आज सावधान रहो बड़ी भय है।

फ

१ प्रयत्न से चोरीकी द्रव्य मिलेगी।

२ विदेशी के सामर्थ्य से लौटनाचाहिये है

३ तुमको लाभ अन्य स्थान में होगा।

४ धीर्य्य धरो तुमको मिलेगा।

५ अभीतुमको सिद्धि होगी।

६ अभी तुम्हारी इच्छा व्यर्थ है।

७ शोक तथा क्लेश जायेगा।

८ आजका दिन तुम को उत्तम नहीं।

९ धर्मोचित होगी।

१० एक सुन्दर पुत्र होगा।

११ तुम्हारा घर अत्यन्त उत्तम है।

१२ तुम्हारी इच्छा आनन्द नाशक है।

१३ संगीकी स्वार्थ में संदेह है।

१४ उसकी मित्रता शुद्ध नहीं त्यागदो।

१५ तुम्हारी यात्रा में सन्देह नहीं।

१६ मित्रता उत्तम नहीं विश्वास न करो।

घ, मं

१ तुम्हारी इच्छा की पूर्णताअन्याधीनहै
२ अभीस्वेच्छा न कर
३ किसीअन्यपुरुषसे कृपाप्रकाशितहोगी
४ हानि होगी।
५ अबके अत्यन्त क्लेशसहनकर मुक्त होगी।
६ रोगी ससारसे यात्राकरेगा।
७ एक बुद्धिमान् पुत्र होगा।
८ धनी मित्र मिलेगा।
९ इस विवाहसे तुम बहुत प्रसन्न और लाभवान् होगे।
१० यहमित्रतास्थायीहै
११ यात्रा में ईश्वर सहायता करेगा।
१२ यहमित्र - मिथ्यावादी तथा विश्वासघाती है।
१३ अचानक चोरीगई द्रव्य मिलेगी।
१४ अभी विदेशी स्नेह वशसेनहींआसक्ता
१५ तुम यात्रार्थ कटिबद्धहो।
१६ तुमको कुछलाभ होगा।

म

१ प्रारब्धी पुत्रहोगा।
२ तुमको द्रव्यवान् मित्र मिलेगा।
३ व्याह सिद्ध होगा।
४ तुम्हारी मानप्रतिष्ठाकरता है।
५ तुम्हारी यात्रा में वृद्धि कीआश है।
६ इस पुरुषपर विश्वास न करो।
७ चोरीकी द्रव्य मिलजावेगी।
८ विदेशी लम्पटता घर नहीं आताहै।
९ तुम अपनी इच्छा से अन्य देश में सिद्ध पास करोगे।
१० लाभनहीं।
११ अत्यन्तानंदहोगा।
१२ अतिशीघ्र इच्छा पूरी होगी।
१३ तुम्हारे व्याह की वार्ता हो रही है।
१४ दुःप्रारब्ध के चिह्न हैं।
१५ बन्दी छूटेगा।
१६ नैरोग्यता में सन्देह है।

फल	छुटना दुर्घट है।
१ विदेशी नहीं लौटै	९ रोग निरोगहो।
२ तुम स्वमित्रता में रहो यही उत्तमहै।	१० एककन्या अत्यन्त प्रारब्धवती होगी।
३ तुम अपने उद्योग में लाभ उठावोगे।	११ तुम्हारा मित्रहित चाहता है।
४ तुम अपने दु:प्रारब्ध के सबब ईश्वरसे प्रार्थनाकरो।	१२ यह ब्याह तुम को क्लेश देगा।
५ तुम्हारी इच्छा मित्रद्वारा सिद्धहोगी।	१३ तुमसेमित्रता छूटी दूसरे से मित्रताहै।
६ तेराशत्रुतेरीहानिकरै।	१४ अभीयात्रा न करो असमय है।
७ सावधान आज तेरा शत्रु तेरी हानि चाहता है।	१५ यह पुरुष उत्तम दोस्त है।
८ पंदी क्लेश में है	१६ तुम्हारी चोरी की द्रव्य न मिलेगी।

[illegible]
१ सुंदर पुरुष मिलेगा
२ इसके ग्राह में अत्यन्त क्लेश, शोक हो।
३ वह तेरा मान नहीं करेगा व मित्रता चिरस्थायी नहीं।
४ यात्रामें तुमको लाभ होगा
५ इसकी मित्रता विश्वासनीय है।
६ चोरोंपहृतद्रव्य न मिलेगी परंतु क्लेश होगा।
७ विदेशी सद्रव्य लौटे
८ यदि तुम स्वस्थान में रहो तो सिद्धि हो
९ स्वल्प लाभकी आशा है।
१० असिद्धि होगी शोक तथा दुःख होगा
११ तेरी इच्छानुसार ही सिद्धि होगी।
१२ तुम को द्रव्य कहीं से प्राप्त होगी।
१३ शत्रुके द्वारही सिद्धि होगी।
१४ बन्दी दीर्घ काल कारावासमें रहेगा
१५ रोगी व्याधि से छूटेगा।
१६ कन्याउत्पन्न होगी।

व	९ चोरीगई द्रव्य मिलेगी।
१ बन्दी सहर्ष मुक्त होगा।	१० विदेशी नहीं लौटेगा।
२ रोगीकी स्वास्थ्यमें संदेह है।	११ किसी स्त्री के द्वारा वृद्धिहोगी।
३ दीर्घायु पुत्र उत्पन्न होगा।	१२ सावधान हो इस उद्योग में हानिहै।
४ तुमको अचानक द्रव्य मिलेगी।	१३ क्लेश दूरहोगा तथा आनन्द होगी।
५ इस व्याहमें अत्यन्त आनन्द होगा।	१४ तुम्हारी आशा व्यर्थ है।
६ तुमसे कोई स्नेह नहीं करता।	१५ तुम को शीघ्रही आनन्द होगा।
७ प्रसन्नता से यात्रा करो।	१६ आज दुःखका सामानहोगा।
८ यह मित्र शत्रु है।	

❋ इश्तिहार ❋

निम्नलिखित पुस्तकों का मूल्य कम किया जायगा । तथा सम्पूर्ण एक साथ मँगाने से डाकव्यय भी न देना पड़ेगा ।

	पूर्वमूल्य	अर्द्धमूल्य	डाकव्यय
१ सन्ध्योपासनविधिःसभाष्य	-)॥	)॥।	)॥
२ अग्निहोत्रविधिः ,,	-)	)॥	)॥
३ बलिवैश्वदेवविधिः ,,	)॥	)।	)॥
४ विवाहगुणसमेलनयन्त्र, जिसके द्वारा एक क्षण में वर वधू के गुण मिला लिये जा सके हैं ।	-)॥	)॥।	)॥
५ मुहूर्त्तशास्त्रचक्र तथा शिवायाम, व मास २ में लगाने का सप्तनाडीचक्र तथा भाष्य ।	-)॥	)॥।	)॥
६ प्रश्नविद्यानपत्रिका	-)	)॥	)॥

७ आयुर्वेद शब्दार्णव प्रति अङ्क मूल्य ।) सार वार्षिक अग्रिम मूल्य २।) सहायक्रपये } इसमें सम्पूर्ण वैद्यक सम्बन्धी शब्दों का अर्थ स्वरादि क्रमानुसार दिया गया है ॥

॥ श्री ॥

मनमोहनचरित्र

जिसको

मुरादाबाद निवासी–

लाला बद्रूलालात्मज–

मुरारिलाल वैश्य ने

बनाया–

और उसीको

लक्ष्मीनारायण प्रेस

मुरादाबाद में

छपवाकर प्रकाशित किया

प्रथमबार १०००

मूल्य ।)

दोहा ।

श्याम अंगहै श्याम रंग,श्यामा अंग है गौर ।
चरित करत इत उत फिरत,मन मोहन चितचोर ॥



कटि पीतपट कर लकुट, उर माला सिर मोर ।
प्रिया संग अधरन धरे, मुरली नन्दकिशोर ॥
कभी चरावत धेनु ब्रज, कभी बजावत वेनु ।
सहित प्रिया ममउर वसहु, मनमोहन दिनरैन ॥

॥ श्रीः ॥

मनमोहनचरित्र

जिसको

मुरादाबाद निवासी-

लाला बट्टूलालात्मज-

मुरारीलाल वैश्य ने

बनाया-

और उसीको

श्रीयुत शिवलाल गणेशीलाल के

लक्ष्मीनारायण प्रेस

मुरादाबाद में

छपवाकर प्रकाशित किया

प्रथमबार १०] [मूल्य -)



श्रीः।

मनमोहन चरित्र



दोहा।

बन्द चरण वारुण वदन, दारुण दहन कलेश।
शोक सघन सशाय समन, संतन सदन सुमेश॥
श्री रमन वारिज नयन, शुभगुण अयन रमेश।
नमत चरण सिरधर धरण, कृपा करण विशेष॥

मैं सुमरन करूं प्रथम आदी अनादी।
उमा सुत अमर अघ हरण सत्यवादी॥
गजानन विकटभाल चन्द्र और विनायक।
विघनराज यकदन्त असुर कष्टदायक॥

अमोदक अहारी व मूषक सवारी ।
व गिरजा हैं माता पिता त्रिपुरारी ॥
मैं फिर इष्टदेव अपना शङ्कर मनाऊ ।
मैं मनसे अभी पास कैलाश जाऊँ ॥
जटिल चन्द्र अवतंश भूषन अहीका ।
उमानाथ ममनाथ ईश्वर महीका ॥
गरल कण्ठ उर मुण्ड कर शूलधारी ॥
दहन मैन त्रिनैन विर्षभ सवारी ।
मैं करजोड शङ्कर नमामी नमामी ।
करू गुण कथन ईश उर अन्तरजामी ॥
अनघ अज अनामय अजित इन्दुलोचन।
अमानुष व अनवद्ध सुर शोक मोचन ॥
व अविरल व अविगत अगोचर नमामी ।
व कजाक्ष अरणव शयन इन्द्र स्वामी ॥

अखण्ड अघहरण आक्ष इन्दु दिनेशा ।
अयन क्षीरसागर सयन नाग शेषा ॥
भुजा चार गल कम्बु अवतंश चन्दन ।
पद्मनाभ करचक्र कैटभ निकन्दन ॥
व करचक्र कम्बू गदा पद्मधारी ।
भुजा वाम कमला की उपमा नियारी ॥
कुरंग कंज लोचन व जन ताप मोचन ।
व चिन्ह उर लता भृगु उरमय अनूपम॥
विजय जयहैं दो पाल द्वारे तुम्हारे ।
मुकट मउतकी बाल हैं घुंगरवारे ॥
लिया तुमने अवतार यमुना किनारे ।
हुवे मधपुरी में व गोकुल पधारे ॥
बकासुर वसासुर असुर बहु विदारे ।
यह सब दैत्य तुमनें लडकपन में मारे॥

मैं सब गोप ग्वालों को करलू नमामी ।
कि जिन साथ खेले हों तुम विश्वस्वामी ॥
उठा गिर बचा ब्रज इन्द्रकोप टाला ।
गिरी के तले सब रखे गोपवाला
कुमुद कज कारन व यमुना में जाकर ।
लिया नाथ काली अही तुमने ह्वाँपर ॥
व सब फूल अम्बोज उसपर लदाकर ।
दिये कंसको तुमने मधुपुर में जाकर ॥
सहीं गालिया थोडे माखनके कारन ।
निरंतर है महिमा तेरी दुख निवारन ॥
व सब ब्रजवालों का माखन चुराया ।
व सब दूध दध तुमने ब्रजमें लुटाया ॥
हरे चीर गुपियन के यमुना किनारे ।
कदम पर चढे आप तुम चीर वारे ॥

मुरारी पुकारी व सव नारी तुमको।
विहारी यह सारी हमारी दो हमको॥
व वंसी बजाकर कहा मुसकराकर।
दिगम्बर लो सव चीर तुम धोरे आकर॥
सुनै वैन सुखदैन तेरे गोपाला॥
नगन गात यमुनासे निकलीं व वाला॥
दिगंवर व आईं सभी नन्द नन्दन।
दिये चीर सव तुमने ऐ मैन मर्दन॥
निशा अर्द्ध में तुमने वंसी वजाकर।
किया रास सव गोपियों को बुलाकर॥
निकट तीर यमुना जहा वंसी वट था।
व पहिने खडा साँवरा पीत पट था॥
करन मे थे कुण्डल व करमे लकुटथा।

अधरपर धरे मुरली सिर पर मुकुटथा ॥
सरद् चंद आनन्द पूरन था धन मे ।
अकेले थे नद नद व्रज चंद वन मे ॥
व सोला सहस्र वहा पै थीं व्रजनारी ।
मदन की सहायक ये गोपी थीं सारी ॥
हुवा युद्ध खट मास उस काम से ।
नजीता मदन पर अजित श्याम से ॥
मदन मद किया भंग सैना बिदारी ।
सराबोर गोपीं हुईं मद मे सारी ॥
तुम्हें काम लव लेश व्यापा न स्वामी ।
तुम्ही काम के ईश होगे अकामी ॥
विपति मे फसी जब के द्रुपद कुमारी ।
सभा मे हो निरआस तुमको पुकारी ॥

अपत से है पत जात गिर्धर हमारी।
पडी दुष्ट फन्दे मे भावज तुमारी॥
जुवे मे हरे प्राणपत आज तन को।
महल से दुसासन पकड लाया हमको॥
पकड केस मेरा नगन तन करे है।
विपति ह्यॉ न कोई हमारी हरे है॥
अधम दुष्ट संगी हसोआ करत हैं।
पती धर्म को खण्ड करना चहत हैं॥
गुरू द्रोण भीष्म जो हैं धर्म धारी।
रिपू अन्न भोजन ने मत उनकी मारी॥
सुसर अध दोऊ नैन मति हीन हैगा।
विदुर हीन बल दीन आधीन हैगा॥
तनय पाण्डु के पाचो बन्दी पडे हैं।

मेरे पास निर्लज्ज पापी खड़े हैं ॥
ऋतु धर्म प्रथम दिवस आज हैगा ।
यहा आओ स्वामी अवशि काज हैगा ॥
नहीं तात और भ्रात मेरा यहां पर ।
जो लावे तुम्हें द्वारिका से बुलाकर ॥
पवन पुत्र ऐ भीम अपने पिता को ।
सुनादो हमारी विपत की कथा को ॥
वही लावे ह्या बेग गोपाल जी को ।
मनोहर मदन मन हरन लाल जी को ॥
वधू मित्र की तेरे यदुनाथ हुंगी ।
विन अपराध स्वामी नगन गात हुगी ॥
सुदामा के कारज को तुम सिद्ध कीना ।
वहां मित्र नारी का दारिद्र छीना ॥

मेरी बेर क्यों देर की नाथ हेगी ।
सरम आज दासी तेरे हाथ हेगी ॥
नगन तन बिना वस्त्र यमुना का न्हाना ।
बताया था गोपो को तुम ने बहाना ॥
भला मैंने अपराध ह्याँ क्या किया है ।
बिन अपराध क्यो कष्ट इतना दिया है ॥
तुम्हीने यह रीती जगत में प्रचारी ।
नगन तन सभा में जो होती है नारी ॥
न तुम तीर यमुना अगर चीर हरते ।
नगन गात ये दुष्ट मुझ को न करते ॥
कुगत गाय की हाय ह्या होरही है ।
विकल धेनु रंभाय कर रोरही है ॥
निबल धेनु को सिंह खा जायगा ।
बे अर्थ नाम गोपाल हो जायगा ॥

अगर गोकि रक्षा न तू ह्यां करेगा।
न फिर कोई गोबिन्द तुझ को कहेगा॥
हमारा न रक्षक जो रिछपाल होगा।
द्वापर मे स्वामी कलीकाल होगा॥
पतित दीन का गर न तू बधु होगा।
जगत मे अंधेरा ऐ सुख सिन्धु होगा॥
रवी सोम चक्र मे आजायंगे।
सुरासुर विमुख तुझ से होजायँगे॥
अनाथों की व्रजनाथ हतलाज होगी।
हँसी आज महाराज बिन काज होगी॥
धर्म हीन झंडा जगत में हिलेगा।
जो हैं नास्तिक उनको अवसर मिलेगा॥
तेरे दासो की मूढ़ निन्दा करेंगे।

व दे दे के तारी यह चर्चा करेंगे ॥
कमरिया उढैया व वनवन फिरय्या ।
जो है ग्वालिया, कृष्ण गौवें चरइय्या ॥
अहीरो के संग जिसने माखन चुराया ।
विरज में छिनाला छलीने सिखाया ॥
जिसे जाने नंद गोप हैं कासे लाया ।
जो हयां आके वसुदेव नन्दन कहाया ॥
सभा मे उसे द्रोपदी वहुत टेरी ।
विपति उसकी उसने न हरगिज निवेरी ॥
हिया उसका पत्थर का विधने वनाया ।
विलकती हुई पर न जो तर्स आया ॥
पड़ू कृष्ण प्यारे में पय्यां तुमारे ।
रखो लाजमेरी ऐ यसुमति दुलारे ॥

तू जा कौन से मद्र मे सो रहा है।
सभामे गहन चन्द्र का होरहा है ॥
परव में सहाये का प्रभु दानदीजे ।
कहा भैन अपनी का यह मानलीजे ॥
मेरे भाग इस वक्त फूटे हुवे हैं ।
जो मुझ से रमानाथ रूठे हुवे हैं ॥
सकल कर्म वो धर्म झूटे हुवे हैं ।
पती प्राण प्राणो से छूटे हुवे हैं ॥
बहुत युद्ध मन वुद्ध मे होरहा है ।
अधीरज मेरा धैर्य को खोरहा है ॥
कहत वुद्धि हैगी न सुधपासकेंगे ।
किसी भाति इस दम न ह्या आसकेंगे ॥
कठन भूमि कोमल चरण चित हरन हैं।

वहां कोटिजन ऐसे उनकी सरन हैं ॥
भयंकर डगर सोला योजन नगर हे।
दुपहरी वहुल घाम वेढव सफर हे ॥
अयन रुक्मनी में वघन श्याम होगा।
छपरखट मे लेटा दिलाराम होगा ॥
गिर कैलाश पर शिभुउर वासहोगा।
यहा उनके आने मे शिवत्रास होगा॥
दिया मनने उत्तर जो सुध पायगे ।
तुरत दौड ह्वासि वह ह्या आयंगे ॥
चतुर दश भवन का जो ईश्वर कहावे।
तिये काज क्या आज मूको छिपावे ॥
स्वय चढ गरुडपर विश्वंभर वह आवे।
वहा से यहा आप वो व्याप जावे ॥

कमल हस्त से दुष्ट खण्डन करेंगे।
मेरे धर्म धीरज का मंडन करेंगे॥
पितामह यतीजी मेरा न्याय कीजें।
मेरे प्रश्न का आप उत्तर तो दीजे॥
जुयेमे हमै प्राणनायक हमारे।
हरे प्रथम या पहिले निजतन को हारे॥
अवश्य नन्दनन्दन हो मेरे प्यारे।
अहीरो के हो पुत्र यसुमति के वारे॥
जो वसुदेव जाये ऐ यदु राज होते।
भरीहुई सभामे न मम लाजखोते॥
अयन मित्र भारत के व्रजराज होते।
अहल रुक्मनी में न वे वक्त सोते॥
भतीजे हमारी जो सासू के होते।

अवश कष्ट तुम अपनी भावज का खोते॥
पिताजी अगन कुछ न उपदेश कीजे।
मेरे तन मे अब आप परिवेश कीजे॥
सहित चीर अब मेरा देहात कीजे।
कलंकी जगत में रमाकात कीजे॥
नगन शीस पापी मेराकर चुका है।
वसनतनपे भी हाथ अब पड़चुका है॥
मेरे त्रास को वेग अवनास कीजे।
दुसासन को ऐसा न अवकाश दीजे॥
तेरे बिन न कोई यहा है हमारा।
अरे मन न आया अगर वो पियारा॥
अभी चीर सारा यह खिच जायगा।
मेरा प्राण संग चीर इँच जायगा॥
अगर फिर व निर्लज्ज ह्या आयगा।

नगन लोथ को दाह ,करजायगा ॥
सुनी टेर द्रुपद सुता दुख निवारन ।
धरा रूप अंबर द्रोपदी के कारन ॥
दुसासन गया हार जब खेंचि सारी ।
बिदारी विपत नारी तुमनें मुरारी ॥
हुई सर में जब ग्राह गजेस लड़ाई ।
व जब ग्राह से गज की कुछ बन न आई ॥
व जौ भर रही सूढ जब जल के ऊपर ।
पुकारा करी तुमको कर कज लेकर ॥
अयुत नाग बल अर्ध जल हो पुकारा ।
ऐ जन कष्ट घालक मैं जन हूं तुम्हारा ॥
अयन जन व ममदीन दुखताप नाशी ।
अजित अघ हरण सुर असुर पुर बिनासी॥

ऐ कमलारमन क्षीर सागर निवासी।
भुजंग सैन उर चिन्ह् वैकुण्ठ वासी॥
अरुण वंस अवतंस कौशल्या नन्दन।
दुखित दोखि वैदेही कर चाप खण्डन॥
महेश चाप कर् खण्ड सीता विनायक।
रखा प्रण सीता ऐ जन प्रण पालक॥
पिताके वचन सुनके वनको सिधारे।
चरित कव अकथ कीन्ह वाँ तुमने प्यारे॥
जटा सीसडर माल कर चाप धारी।
अनुज उरविजा सग कानन विहारी॥
वरस चार दश कीन्ह कानन में वासा।
सहित नुज वहां रह्के भव त्रास नासा॥
विचित्र चित्र परवत को दर्शन से कीना।

पुरंदर तनय जयन्त यक आक्ष कीन्हा ॥
किया दण्डकारन्य का तुमने निस्तारा ।
किया खर व दूषणसे कानन को न्यारा ॥
सहस चौदह निशिचर महूरत में मारे ।
ऋषी और मुनी ब्रह्मचारी उवारे ॥
वधन बंधु सुनकर के लकापतीने ।
किया क्या चरित्र उस निशाचर मतीने ॥
कुरग अग मारीच उसने वनाया ।
सुता अविनी विन तेरे कपटी हरलाया ॥
पवनपुत्र पायक को तुमने पठाया ।
व इकला अक्षय मार गढ़फूक आया ॥
खबर पाके पुल वाध परहस्त मारा ।
रिपू भ्रात सुत मार भव भार टरा ॥

दनुज नुज को दे राज पुर कोष नारी
अवध आये रण जीत लेकर दुलारी।
अजामेल गणिका व शिवरी उवारन
ध्रू और प्रहलाद हरीश्चन्द्र तारन।
सुदामा विदुर और गौतम की नारी
निरग नृप वल और कुवजा भि तारी॥
जटायू निपाद और वालीसे वदर।
दिया सवको वैकुण्ठ अवधेश चदर॥
विराध और कवंध और मारीच आदी।
तुम्हीने हैं तारे ऐ आदी अनादी॥
दिया भक्त को कष्ट जव वापने।
धरा रूप नरसिंह तव आपने॥
सुरारी असुर को पछाड़ा तुम्हीने।

नखों से उदर दुष्ट फाड़ा तुम्हीने ॥
मधु और कैटभ को मारा तुम्हीने ।
वहा रूप कच्छप का धारा तुम्हीने ॥
मगन कष्ट में देख सुर दैत्य सारे ।
चतुर्दश रतन सिन्धू मथकर उवारे ॥
किया मंदराचल को निज तनपै धारन ।
समदर मथन के वने आप कारन ॥
निरख विष असुर सुर लगे कापने ।
दिया शिवको वो भाग तव आपने ॥
तुरग वट व वारुण पुरंदर को दीन्हा ।
मणी और रमा शंख तुम आप लीन्हा ॥
दई सुरभी धेनु सब जोगियों को ।
दिया वैद और त्रिफला रोगियों को ॥

व रंभा को दीना सकल सुर पुरों को।
सुरो को अमे और सुरा आसुरो को॥
वहा वहुत संग्राम तुमने कराया।
सुरो को जिताकर वुरो को हराया॥
निरख पाति रुक्मन जो थे विप्र लाये।
तुरत रथ पै चढ़कर तुम कुन्दनपुर आये॥
जरासंध शिशुपाल सेना विदारी।
रुक्म को हरा मान ऐ मान हारी॥
दनुज दल को दल और लेकर दुलारी।
भवन आये रिपु जीत तुम ऐ मुरारी॥
धरा रूप वामन पुरंदर के कारन।
लई वल से अवनी तनै वन के वामन॥
कपीरूप लंगूर निश्चर उवारे।

उवारे सभी जो कि थे तुम ने मारे ॥
दुखित देखि शिव भस्म भस्मासुर कीना ।
असुर को भी ऐ नाथ सुरपुर ही दीना ॥
पिता मात बंदी से तुम ने छुड़ाये ।
पिता नन्द को तुम वरुणपुर से लाये ॥
व मुष्टक व चाणूर और कंस मारे ।
तैंने जून जड़ से नल कूबर उबारे ॥
व धर रूप बाराह कनक आस मारे ।
अनल से बचाये तैंने गोप सारे ॥
छिपे पाण्डु जब आके तेरी सरन मे ।
सहायक हुवे आप तब उन के रन में ॥
किया प्रण भारत का भारन में पूरण ।
किया जयद्रथ का वहां तुम ने चूरन ॥

व रंभा को दीना सकल सुर पुरों को।
सुरो को अमें और सुरा आसुरो को॥
वहां वहुत संग्राम तुमने कराया।
सुरो को जिताकर वुरो को हराया॥
निरख पाति रुक्मन जो थे विप्र लाये।
तुरत रथ पे चढ़कर तुम कुन्दनपुर आये॥
जरासंध शिशुपाल सेना विदारी।
रुक्म को हरा मान ऐ मान हारी॥
दनुज दल को दल और लेकर दुलारी।
भवन आये रिपु जीत तुम ऐ मुरारी॥
धरा रूप वामन पुरंदर के कारन।
लई वल से अवनी तने वन के वामन॥
कपीऋष लंगूर निश्चर उबारे।

अगोचर अलख रूप आरज अकामी ॥
मेरी वार क्यो वार की दुख विनासी ।
सुदर्शन से काटो मेरे पग की फांसी ॥
उबारो मुझे नाथ तुम ग्राह मारो ।
मेरा हैगा ह्यां कौन जी मे विचारो ॥
विपत में मुझे देख संग छोड़ मेरा ।
गया छोड कुनबा कि था जो घनेरा ॥
हे जल नेत्र मे और अंभोज कर में ।
खड़ा रो रहा हू अकेला में सर मे ॥
अनाथो के ऐ नाथ पालक तुम्हीं हो ।
कहूं जादा क्या विश्व व्यापक तुम्ही हो ॥
सुनी टेर कुजर जो दानव दलन ने ।
यतन यह किया उस कली मद हरन ने ॥

रवी अस्त सन्ध्या समय नासे कीना।
सुदर्शन से सूरज का प्रकाश कीना॥
दिया छोड़ निज प्रण भीष्म के कारण।
व निज जन के कारण किया शस्त्र धारण॥
करण द्रोण भीष्म का मथ मान डाला।
गदा से कलेजा दुसासन का साला॥
हुआ भीत सग्राम अर्जुन करन में।
जिताया उसे जो था तेरी सरन मे॥
वढैयों के वच्चों को रनमे वचाया।
विजय घट के नीचे उनको छिपाया॥
धर्म राज से तुम गुरु पुत्र लाये।
तेने शोक से जननी और गुरु छुड़ाये॥
व मम शोक हरो विश्व व्यापक नमामी।

मेरी भी सुनो कान दे ताप हारी ॥

स्तुति ।

नमामी गुण आगार संसार पालक ।
रमाकत राजीव मम कष्ट-घालक ॥
नमो सीता प्रीतम नमो ग्राह नासी ।
नमो श्यामसुदर नमो घटघट वासी ॥
नमस्ते निराकार निर्गुन निरंजन ।
नमस्ते हरी रूप गज दुख निकन्दन ॥
नमो कृष्ण प्यारे नमो नँद दुलारे ।
नमो बसी वारे नमो कारे कारे ॥
नमो भ्रमनासी नमो बृज वासी ।
नमो चंद्र वंसम् व आनन्द रासी ॥
नमो बृज नाथं नमो ज्ञान सागर ।
नमो चोर माखन नमो कृपा आगर ॥

रमा छोड़ ले शस्त्र चढ कर उर्ग आरी।
चले सुर्ग से जल्द वाके बिहारी॥
कमल को निरख कर मे कमला रमन ने।
दिया छोड वाहन भी सशय समन ने॥
उठाकर वही चक्र फेंका जो सरमें।
सुदर्शन लगा जाके नाके के सरमें॥
तन त्याग धर रूप सरसे निकलकर।
गया स्वर्ग को ग्राह पुष्पक पे चढ़कर॥
मगन गजको हरीने नदीसे निकाला।
व कर कृपा दी करीको निजकर की माला॥
बिना पीर भरनीर नैनों में कुंजर।
चरन भय हरन मे गिरा हस्ति आकर॥
लगा अस्तुति करने तेरी वो मुरारी।

उसी तौर मम लाज रख कृपा कारी॥
मेरा हाल गज ग्राह सा हो रहा है।
तु आ जल्द किस जगह जा सो रहा है॥
यतन गज है मन पग मेरा फसगया है।
जगत सर में नाका कली वसगया है॥
मुझे लोभ मोह काम घवरा रहा है।
क्रोध मध व मतसर भी चपरा रहा है॥
उभारो मुझे इस कलीकाल से।
छुड़ावो मुझे गम के जजाल से॥
पिता मात वंधू न मित्र है वचाता।
तुहीं एसे वक्तों में है काम आता॥
दिखादो मुझे तुम अब उस रूपको।
कि छोड़ूं में जंजाल भव कूप को॥

नमो चोर चीरं नमो यमुना तीरं।
नमो राधाकतं नमो हलधर वीरं॥
नमो मित्र अर्जुन नमो ईश भीषम्।
नमो दिनेश वंशं नमो सैन कीशम्॥
नमो सृष्टि पालक नमो वन विश्व भर्ता।
नमो लयकरंते व उत्पन्न करता॥
नमो कोशलेश्वर नमो वन विहारी।
नमो ग्रीस ईश्वर नमो चाप धारी॥
नमो चक्र पाणी नमो अष्ट रानी॥
कथा जिनकी है भागवत में वखानी॥
मुरारी के भी दुख टारो मुरारी।
मैं करजोड दरपर खड़ा हू भिखारी॥
हरे जिसतरह कष्ट गजके विहारी।

उसी तौर मम लाज रख कृपा कारी ॥
मेरा हाल गज ग्राह सा हो रहा है।
तु आ जल्द किस जगह जा सो रहा है॥
यतन गज है मन पग मेरा फसगया है ।
जगत सर में नाका कली वसगया है ॥
मुझे लोभ मोह काम घबरा रहा है।
क्रोध मध व मतसर भी चपरा रहा है ॥
उभारो मुझे इस कलीकाल से ।
छुडावो मुझे गम के जंजाल से ॥
पिता मात वंधू न मित्र है बचाता।
तुहीं एसे वक्तों में है काम आता ॥
दिखादो मुझे तुम अब उस रूपको।
कि छोड़ूं में जंजाल भव कूप को ॥

मुझे आसरा राम तेरा है तेरा ।
तू बस काट दे भव से अब बेड़ा मेरा ॥

आपका दासानुदास—

मुरारीलाल वैश्य अग्रवाल

दीन्दारपुरा, मुरादाबाद

पुस्तक मिलनेका पता—

लक्ष्मीनारायण प्रेस

मुरादाबाद



नाटक

जिसको

[illegible]ला घनश्याम दास साहब रईस शह-
र कानपूर ने बनाया और वास्ते
फायदे आम के मुंशी विरामसि
शिव चरन लाल वैस्य
बुक सेलर ने
[illegible]ालय शहर फर्रुखाबाद में छापा

विज्ञापन।

प्रथम मैं उस परब्रह्म परमेश्वर परमात्मा सच्चिदानन्द जगदीश्वर ज्योतिस्स्वरूप सर्वशक्तिमान् के को। साष्टांग दण्डवत्करके सर्वसज्जन प्रेमीमहाशयोंसे निवेदन हूँ कि इस दास को बालपन ही से भगवत्चरित्र अ कीर्त्तन श्रवणका अधिक प्रेम रहा और कईबार उलथा मद्भागवत व भाषा रामायण वाल्मीकि आदि का भी अवलोकन किया और बहुधा चौपाई दोहा ब्रज की बोली बनाए परन्तु इस समय तक किसी ने इस को टाइप में छपवाया अब मैंने इस भगवत् कीर्त्तन मनमोहनचरित्र पु को भगवद्भक्त चित्ताहरण हेतु निरूपण किया है और इस सज्जन पुरुषोंके दृष्टिगोचर होने और आनन्द उठाने के निमित्त मेरे छोटे भाई चिरञ्जीव रामरक्षपाल ने नारायण प्रेस में छपवाकर प्रकाशितकिया, अभिलाषा कि जो शब्द स्वर व्यञ्जन अर्थ हीन व अधिकन्यून इस शुद्धोंसे बनगयाहो तो उसको कृपादृष्टि करके क्षमा कीजिये

आपका कृपाभिलाषी—

मुरारीलाल वैश्य

वृद्धा वस्था विवाह

नाटक

जिसको

लाला घनश्याम दास साहब रईस शह
र कान पूर ने बनाया और वास्ते
फायदे आम के मुंशी चिंता मणि
शिव चरन लाल वैश्य
बुक सेलर ने
निज यंत्रालय शहर फर्रुखाबाद में छपा

चिंता मणि प्रेस में छपा

मोल एक आना

स्त्री। अजी हां इस बात में डर किसका है सभी करते हैं मैं हूं मैने चोरी की ? मेरी भी यही सलाह है कि धन ते र ही करना ठीक है।

स्वार्थ० अच्छा ऐसा ही करेंगे। जल्दी क्या है॥

(स्वार्थमल उठकर दूकान पर जाते हैं)

पटाक्षेप

दूसरा दृश्य

कुरूपचंद अपने मित्र न्यायचंद्र के साथ अपनी दूकान पर बैठे परस्पर वार्तालाप कर रहे हैं।

न्याय० मित्र आज उदास क्यों बैठे हो भला कहो तो सही हाल है।

कुरूप० भाई क्या कहें कुछ पूछो मत।

न्याय० अजी भला कहो तो।

कुरूप० क्या भाई कोई चटाए थोड़े ही लेगा कहूं क्या।

न्याय० भला खैर कहो तो।

कुरूप० जब से स्त्री का देहान्त होगया तब से दिल को चैन

नही पडता रात दिन इसी फिकर मे ज्ञान रहती है मेरा यह विचार है कि दूसरा विवाह करूं क्योंकि स्त्री बिना बुढापा पार होना बड़ा कठिन होता है ॥

राय॰ मुझ से क्या राय लेते हो मै तो कभी न कहूंगा क्योंकि आपके दो लड़के है उनकी स्त्री है तुम्हारा बुढापा इसी तरह आनन्द ही मे पार होजायगा ब्याह करने से सुख के बदले दुःख भोगना पड़ेगा पहिले लडाई झगडा दूसरे यह भी कि अभी लड़के आपके काम आवेंगे फिर लड़के भी हाथ खींच जायगे आगे आपकी खुशी ॥

रूप॰ मेरी तो यही इच्छा है कि विवाह कर ही लूं फिर होगा सो देखा जायगा स्त्री बिना घर मे कुछ भी सुख नही है बुढापे मे स्त्री ही सेवा करती है पुत्र कौन करेगा ॥

राय॰ आप की समझ उलटी है यह तो कहिये आपकी इतनी उमर देखकर कौन ऐसा दुष्ट होगा जो अपनी जवान कन्या तुम्हे ब्याह देगा जान बूझ कर कौन भाड़ मे झोकेगा ॥

गुरूद॰ वाह् आपजाने ही क्या ? ...

कोई कैसा ही बुरा क्यों न हो रुपया चाहिये
ही सजरह च्याह नो हम करो सके है सो हम जिस
को रुपया देवेगे वह आप करेगा ॥

॰ वाह साहिब धन्य है आप की बुद्धि को आप तो
पुराने होते जाते है त्यों २ आपकी अकल न
हा जाती है और। पार भला तुम्हे धन ईश्वर
है तो किसी ऐसे काम मे खर्चे ...
हो इस आदमी के ...
से किसी बिचारे की लड़की का गला फास भी लिया
तो के दिन जियेगे आखिर यही होगा कि वह छू
ट देगी तब तुम्हारा ही नाम बदनाम होगा वा
किसी का फिर जरा ईश्वर का भी तो डर करो मे
तो काम कहने का है आगे आप की इच्छा ॥

गुरूद॰ अजी तुम क्या जानो देखो तो भला क्या होता है
तो चारो कहा ही करो भला मानती तो मुझ पर है,
आप थोड़ेही मेरा दुख चालेगे ...

देना है और नौकर पुरोहित जी को बुलाने जाता है और आप दूकान से उठ कर कमरे मे जाते हैं)

पटाक्षेप
तीसरा दृश्य

(कुरूपचन्द्र कमरे में बैठे सोच विचार करता है इतने में नौकर का पुरोहित को बुला कर आना और कुरूपचन्द्र का हर्ष पूर्वक पुरोहित को स्थान देकर वार्ता करना कुबुद्धि सागर पुरोहित का दोनो हाथ उठा कर आशिर्वाद देकर उत्तर देना ॥

कुबुद्धि	जिजमान की जय २ कार हो । कहिये आज मुझे किस कारण बुलाया ।
कुरूप०	दंडवत करके बैठारता है

पुरोहित — ...तो ... है बुढापे मे तो ... का मद्दगार होना है।

कुस्त्र० — अच्छा पुरोहित जी कोई जवान लडकी तलाश नी चाहिये।

पुरोहि० — बहुत अच्छा जिजमान कितनी बडी बात है, ... अभी कलके लडके है अगूठी २ व्याह जायगी • ... खातिर जमा रखिये।

कुस्त्र० — अच्छा तो पुरोहित जी आपकी नजर मे कोई होय तो बता इये।

पुरोहि० — (सोचकर) माधमलकी लडकी है-लडकीका ... वर्षकी उमर होगी लडुकी बडी कबूल सूरत है पर ... रुपया ज्यादा लेगा।

कुस्त्र० — आप रुपया को फिकर न कीजिये जो कुछ खर्च पडे गा हम देगे

पटाक्षेप

चौथा दृश्य

(रस्ते में सोचता हुआ)

आपही आप गदह्ह धन्य है ईश्वर ने बहुत दिनो मे आज यह चिड़िया हाथ आई अब तो पांच चार सौ हाथ लगे स्वार्थ यत्न के पास आना चाहिये ईश्वर उस के हृदय में भी यह बात बैठा दे तो कार्य सिद्ध है आशा है तो भी तो बड़ा है पर कन्या की खराबी है इस्से हमें क्या मतलब है वह मेरी थोड़े ही है अपना तो काम ही है कोई मरे या जिये यह ससुर वैसे कोई टके दिखाव नहीं अवसर क्यों चूके मरे चाहे जिये ॥

पटाक्षेप

पांचवां दृश्य

स्वार्थ मल के पास पुरोहित जी का जाना की कन्या की बातचीत करना ॥

स्वार्थ० | आप ही आप — देखो तिमिरचंद की लड़की का ब्याह होगया उसके दो तीन हज़ार रुपये हाथ लगे [illegible] देखा चाहिये हमारा काम भी [illegible] न दूकानदारी बड़ी सुस्त है ईश्वर भेजे किसी को —

(इतने में पुरोहित जी पधारे)

स्वार्थ० | आइये आइये महाराज दंडवत २ महाराज [illegible] ये हृद हृ आज तो बड़ी कृपा की महाराज ॥

पुरोहित | जिजमान आशीर्वाद देने चला आया हूं और कुछ आपसे कहना भी चाहता हूं ।

स्वार्थ० | कहिये २ महाराज बड़े भाग्य भला मेरे लायक जो काम होगा ज़रूर हो जायगा ।

पुरोहित | जिजमान अब आप अपनी कन्या की शादी [illegible] [illegible]

स्वार्थ० | [illegible] जी मुझे भी तो बड़ी फिक्र लगी [illegible]

	करूं क्या कोई घर नही पुरोहितजी नजर पड़ता ॥
पुरोहित	जिजमान घर तो अच्छा है मै बतलाऊ जो आप की इच्छा हो लाला कुरूपचन्द के साथ आप शादी कर दीजिये ।
स्वार्थ०	(आप ही आप) वाह ईश्वर खूब भेजो अब मनोर्थ पूरा होता देख पड़ता है (प्रगट) पुरोहितजी आप के जिजमान का ब्याह मेरे यहां क्यो होगा इसमे तो खर्च बड़ा भारी है ।
पुरोहित	जिजमान मेरे जिजमान को खर्च का कुछ भी ख्याल नही है आप बतलाइये तो सही क्या खर्च पड़ेगा ।
स्वार्थ०	धीरे से दो हजार से कम तो मैं नही लेऊंगा मेरी लड़की भी आपने देखी है या नही — दो हजार की तो उसकी एक आंख है ।
पुरोहित	दो हजार तो जिजमान बहुत होते है कुछ कम कीजियेगा ।
स्वार्थ०	कम नही ।
पुरोहित	(आप ही आप) देखो तो से शर्मा को कुछ भी शर्म न

ही आती कहो खुलो खुला यानें करता है रहम सुरे-
न्या भी जानेगी कि किसीसे शादी भई थी अगर
खेर आप का ऐसा मन है तो कुछ चिन्ता नहीं पर ए-
क बात पहिले हमारी आप की होजाना चाहिये।

स्वार्थ॰ कहिये क्या।

पुरोहित हमारी चौथ रहेगी।

स्वार्थ॰ मै इसमे से एक कौडी देनेका नहीं तुमको जो कुछ
मिले अपने जिजमान से लेव देव – मुझसे आपको
कोई हक नहीं यो महाराज हमारी खुशी होगी तो
फूल पत्ती आपके हाथ धरेंगे और पैर छुएंगे सही
बात तो यह है।

पुरोहित अच्छा तो हम अपने जिजमान मे २५०० हाई ह-
जार बनावेंगे आपसे पूछे तो आप भी आप कह दे
हमारा भला होजायगा और आप का कोई नुक-
सान नहीं है।

स्वार्थ॰ अच्छा पुरोहित जी हम यही कह देंगे मेरा क्या
हर्ज है॥

पुरोहित	जिजमान यह लीजिये २००० का नोट आपकी लड़की की बातचीत पक्की रही व्याह बसन्त पंचमी को होगा लग्न अच्छी है आप तैयारी कीजिये मैं जाता हूं।
स्वार्थ०	नोट लेकर बहुत अच्छा पुरोहित जी बसन्त पंचमी का दिन तो बहुत नजदीक है परन्तु मैं ऐसा बसन्त पंचमी को ही कर दूंगा ॥
	(पुरोहित जाते हैं और स्वार्थ मल की स्त्री का प्रवेश)
अज्ञान	आज बहुत खुशी होरहे हो कहिये तो क्या बात है।
स्वार्थ०	हह हह अभागवती की मा अभागवती के व्याह की बातचीत होगई (नोट दिखाकर) यह दो हजार रुपये का नोट है।
अज्ञान	अहह किसके साथ (झपटकर नोट लेती है)
स्वार्थ०	कुरूपचन्द के साथ विवाह बसन्त पंचमी को ठहरा है
अज्ञान	व्याह के दिन बहुत नजदीक हैं तैयारी कीजिये।
स्वार्थ०	अच्छा मैं जाता हूं पण्डित भानुप्रकाश के यहां लग्न पूछ आऊं और बाजार से कपड़ा लत्ता भी खरीद लाऊं (गया)

पटाक्षेप

छठा दृश्य

कुरूपचन्द्र कमरे में (आप ही आप) दे... न जो कब तक आवे न जाने कहां चले गये – मुझे ...नो काम धन्धा ही नहीं सुहाता रात दिन खटका मे ...नान रहती है दिनों दिन उमर घटती जाती है (पुरो... हित उसी क्षण आ पहुंचे)

कुरूप० | आइये २ बहुत दिन लगाये कहिये कार्य सिद्ध हुआ

...रोहित | जिजमान आपके प्रताप से एक कार्य क्या पचास का... र्यों में कर सक्ता हूं आपके विवाह का सब ठीक ठा... क कर आया हूं ॥

...रूप० | (प्रसन्न होकर) पुरोहित जी कहो लड़की तो अच्छी है

...रोहित | जिजमान आप मनकी लड़की का क्या पूछना है ल... ड़की क्या है कमल का फूल एक २ आंख उसकी ला... ख २ रुपये की है १५०० रुपये बड़ी मुश्किल से रह... र २००० रु० दे आया हूं ५०० रुपये बाकी रहे हैं।

कुरूप०	पुरोहित जी रुपये का क्या डर है आप शादी की जल्दी कीजिये ॥
पुरोहित	निज मान क्या हम तो बहुत जल्दी कर आया हूं बसंत पञ्चमी को ठहरा आया हूं ।
कुरूप०	अच्छा किया पुरोहित जी अच्छा तो अपनी भी तैयारी करना चाहिये दिन नजदीक है और चुपचुप चलना चाहिये लड़के जानेंगे तो गड़बड़ मचावेंगे ।
पुरोहित	एक दो आदमी साथ ले लीजिये और करना ही क्या है अच्छा तो मैं जाता हूं (पुरोहित गया)

पटाक्षेप

सातवां दृश्य

भानुप्रकाश अपने आप घर में बैठे विचार कर रहे हैं हे । परमात्मा क्या यह पुण्य भूमि भारत वर्ष की यही दशा रहेगी हा । शोक आजकल मेरी ऐसी परिपाटी बिगड़ रही है जिसे देख बड़ा क्रोध होता है कैसी दशा इस देश की हो गई है सब लोगों ने अपना कर्म धर्म छोड़ दिया है वर्णव्यवस्था जन्म से ही मा

मली उत्तम आचरण संसार से उठ गये दिनों दिन नीच वृत्ती सभी को कदि चढ़ देखते हैं जिस से बहुत हानि हो रही है षो श संस्कार ऋषि मुनियों ने मनुष्य को कहे उनमें से तीन रह गये सो भी उन तीनों में से एक का भी यथोचित निर्वाह नहीं करते अब वर्त्तमान में बाल्य विवाह की ऐसी रीति प्रचलित हुई है कि जिसके कारण अधोगति को प्राप्त होते हैं हे ईश्वर तू सहाय कर यह कुरीति उठा जिससे पुनः पूर्व दशा को यह देश प्राप्त हो॥

	तत्क्षण ही स्वार्थ मल्ल का प्रवेश
स्वार्थ०	पण्डित जी पालागे
पण्डित	ईश्वर दया करे आइये कार्य कहिये।
स्वार्थ०	पण्डित जी मेरी बेटी का व्याह बसन्त पञ्चमी का बहुत है-दिन भी उत्तम है॥
पण्डित	सेठ बसन्त पञ्चमी के दिन का तो विवाह तो अच्छा है कहिये आपने किसके लड़के से अपनी कन्या के व्याह की बात चीत पक्की की।
स्वार्थ०	पण्डित जी कुरूप चन्द से।
पण्डित	क्या उमर है लड़के की कुछ विद्या भी है॥

स्वार्थ॰ पण्डितजी उमर होगी कोई ४५.४६ वर्ष के लगभग।

पण्डित सेठ- इनको आपु वाले से क्यो किया क्या कोई युवा अवस्था वाला नही मिलता था यह तो बड़ा अनर्थ है यु वा कन्या का वृद्ध पुरुष से ब्याह देना अन्यन्त लज्जा का वि षय है यह सम्मति आपको किसने दी नारायण २ धि क्कार है ऐसी समझ को भला कही किसी शास्त्र की आज्ञा है भला शास्त्र न सही संसार मे आख खोल क र देखिये तो इसका परिणाम क्या होगा हम तो ऐसे वि वाह की सम्मति कभी न देगे आगे आपकी इच्छा इ समे आपका कल्याण भला न होगा।

स्वार्थ॰ पण्डितजी मेरी क्या लाग मुझे तो पुरोहितजी ने यह स म्मति दी लड़का रोजगारी है और धन को भी मुझे स हायता हो गई मेरा तो कारवार महाराज बन्द था क्या करता।

पण्डित अरे ना समझ यह न जाना तू ने कि कन्या बेचना कित ना बड़ा अधर्म है अरे। तेरा कैसे भला होगा पुरोहित जी को धर्माधर्म का विवेक थोड़े ही है उन्होने भी दक्षि

	नाई क्या दल्लाली टहरा रक्खी है अरे। नादान स
	मझ गो भला भले आदमी कहीं द्रव्य लेकर कन्यादा
	न करते है भला जो द्रव्य लेकर पुत्री देते हैं उसमें और पशु
	ओं मे कुछ फर्क ही क्या रहा देख इसी प्रकार एक म
	हाराजा दो चार हजार देकर वेश्याओं का कन्यादान कि
	या करते है तू बडा अज्ञान है ईश्वर का भय नहीं
	है नारायण २ छी छी छी ॥
स्वार्थ०	(आप ही आप) यह तो पागल है चलना चाहिये
	यहां से अपना काम करे (जाता है)

पटाक्षेप

आठवां दृश्य

दो स्त्रियों का आपस में वार्तालाप करना

प० स्त्री	अरी! आज तो एक बड़ी बुरी बात सुनने में आई है
	तूने सुनी या नहीं।
दू० स्त्री	क्या २ गई गो भला मैं ने तो नहीं सुनी।
प० स्त्री	अरी। स्वार्थपाल ने अपनी बेटी अभागवती का व्याह

कुरूप चन्द से किया बड़ा ही बुरा किया बिचारी भ
भागवती को जन्म बुरा किया कर दिया कुरूप चन्द
बूढ़ा है वह बिचारी अभी कुछ भी दुनियादारी नहीं
जानती उसको कैसे उमर कटेगी। हाय! उस दुष्ट का
बुरा हो बिचारी का जन्म सत्यानाश कर दिया (आ
पस मे बातें करती हुई जाती हैं)

पटाक्षेप

नवां दृश्य

अभागवती का अपने कमरे मे बैठे २ सोच क
रना पति के स्मरण में इतने में दूसरी स्त्री सुभा
गवती का प्रवेश॥

सुभाग० क्यों आज कैसी उदास बैठी हो कहो तो सही।

अभाग० (हंस कर प्रगट) आओ बैठो यों ही खुशी में बैठी थी
उदास तो नही हू॥

सुभाग० मुसकरा कर बैठ गई अरी! बता तो सही तेरा पति
तुझ से कैसा प्रेम करता है॥

रभाग॰	पहिले तू बतला तो मैं भी बतलाऊं तेरा पति कैसे चाहता है॥
सुभाग॰	तुझे शरम आती हो तो मैं ही बतलाऊं तू तो मारे के दीवानी हुई जाती है॥
रभाग॰	(हंसकर) अच्छा बता॥
सुभाग॰	सुन। मेरा पति तो नारायण की कृपा से मुझे तो ही अच्छी तरह चाहता है मैं तो अपनी जवानी का रस लूटती हूं अब तू सो बतला॥
रभाग॰	हा। मैं क्या बतलाऊं मैं तो दुष्ट के पल्ले पड़ी जब का सुख कहा नसीब हो। मैं ने तो कोई नारायन की चोरी की जिसका फल मुझे मिला है सो कैसे मर बिताऊं काम की आग बनी रहती है और न जाने क्या होगा। हा। पति के घर मे धन तो बहुत धन को क्या चाटूं वैसे तो जवानी व्यर्थ ही जाती है न्यानारा हो उस दुष्ट पुरोहित का जिसने मेरा नष्ट किया॥
सुभाग॰	अजी यह पुरोहित तो ऐसा ही किया करते हैं

	तेरे मा बापने कुछ भी न विचारा ॥
अभाग०	हा ! धनके लोभमे कोई बात विचारते हैं मेरे काहे के माता पिता हैं माता पिता होते तो क्यो ऐसेको सौप देते हा मैं तो दुश्मन समझती हू (मा बापका कहु शब्द बारम्बार कह कर रोती है) हा ! मै कहा जाऊं मुझ से तो यह क्लेश नही सहा जाता है। पृथ्वी तू क्यो नही फट जाती है जो मैं तुझ मे समा जाऊं और दुःख से बचूं॥
सुभाग०	अरी प्यारी धीरज धरो अब रोने से क्या होगा अब तुम्हे इसी तरह जन्म बिताना है (मै जाती हूं) (मोहताती जी आती है)
मोहताती	सेठानी जी अब क्यो अनमनी हो कौन ऐसा दुःख तुम को पड़ा है भला बताओ सही॥
अभाग०	अजी ! मोहताती जी दुःख किसर से कहूं कोई सुनने वाला ही नही न कोई सुनकर भी दूर कर सक्ता है।
मोहताती	अजी बताओ सही ऐसा क्या दुःख है ।
अभाग०	मै अपना दुःख नही कहूंगी सुन कर कोई पूरा थोड़े

हीं कर देगा उनकी पेंटी ही हंसी करेगा ॥

मोहनी० अहो कहिये ! मैं पूत की कसम खाती हूं किसी से भी
जो तेरा हाल कहूं और मुझ से जहां तक बनेगा तेरा
दुःख दूर ही करूंगी ॥

सुभाग० अच्छा सुन मेरा पति रूठा है मेरा मनोरथ पूरा नहीं हो
ता है इस का क्या उपाय है बताओ ॥

मोह० अरी ! बावरी ऐसी बातों की क्या फिकर करती है मैं
ऐसी कितनों का दुःख दूर किया है जिससे तू मिल
ने का जी करे मैं मिला दूंगी ॥

सुभाग० मोहनानी जी ! मेरा मन तो अविवेकचन्द्र से मिलने
का है उनसे मिलना यह मेरे मन का अवधान है पर ऐसा
काम कर जिससे मेरा काम हो जाय और किसी को मा
लूम न हो ॥

मोह० [illegible] सेरी [illegible] अविवेकचन्द्र तो मेरे यहां आता जा
ता है उस [illegible] मिलना सहज है - [illegible] देखो जी [illegible]
[illegible] मेरे यहां चलो [illegible] पर ऐसी जो के
[illegible] है जानती हो है और आज तुझे [illegible]

दूसेमिलाऊ जवानी केमज़े चखाऊंगी ॥

राग० अच्छा जीतुमने खूब बात विचारी तो कल में उस कोजरूर आऊंगी तू उनको बुला रखना ॥

इ० अच्छा मैं जाती हू आप कल आना (जाती है)

पटाक्षेप

दसवां दृश्य

मोहमानी जी के घर में अविवेक चन्द जी विराजमान हैं और मोहमानी जी अविवेक चन्द से हंस २ बातें करती है ॥

र० हह ह आज मोहमानी जी खूब हंसती है ॥

इ० अरे ! मैं क्या हसती हूं तेरा नसीब हसाता है आज तुझे वह माल दिलाऊंगी ले अब बहुत दिन बाद मेरा भी मुंह मीठा करना और क्या ॥

र० मोहमानीजी ! कौन माल भला बतलाओ तो सही ॥

इ० अजी ! कुरूप चन्द की बहू से तुझे मिलाऊंगी आज मेरे यहां आती होगी ॥

अवि० सुन कर फूल गया (मूछों पर हाथ फेरने लगा

हैं आप खुश मगन हुआ) ...

मान हाथ लगा (उसी क्षण अभागवती का प्रवेश)

अभाग० (हंस कर) मोहनानी जी क्या करती हैं ॥

नेह० आइये सेठानी जी मैं तुम्हारे ही काम का बंदोबस्त क

रती हूं - लीजिये यह अविनेक घर गेरे हैं मैं अ

स्थाने पर बैठती हूं कोई आय न जाय ॥

अवि० हे प्यारी अब क्यों रार मानी हो तुमने बड़ी मिह

नी की जो मुझ गुलाम को याद किया अब मह

म मन सब तेरे ऊपर न्यौछावर है तेरा नेग जो चाहे

कर मैं तो तेरा तावेदार हूं ॥

अभाग० मैंने आप ऐसा क्यों कहते हैं मेरा मन तो आप से मि

ले को उत्कंठित था जब आप की और मेरी देखा

देखी में चार आंखें हुई थी ॥

अवि० (प्रसन्न होकर) अच्छा सो भला आपने इतनी दे

र क्यों करी ॥

अभाग० मैं क्या करूं अभी तक मिलने का कोई मौका न

ला था आज नारायण की कृपा से आप से मिलना हुआ
यह भी शरीर आप ही का है जो खुशी हो सो कीजिये ॥

पटाक्षेप

ग्यारहवां दृश्य

ढ़ोंढ़ी लाल अपनी दूकान पर खड़ा हुआ आ
प ही आप अविवेकचन्द और अभागवती
की दोस्ती होगई ॥
मोहताजी के घर में रोज जाते हैं और अविवेकचन्द मे
रा दुश्मन है देखो आज मैं कैसा फजीहता अविवेक
चन्द का करता हूं किसी चपरासी से कहकर उन की
फजीहत करनी चाहिये ॥

(पीरुदान अली चपरासी का प्रवेश)

ढ़ोंढ़ी० अजी ! आइये हजरत एक सोने की चिड़िया बताऊं
खुश तौन होंगे मेरे लाशेभेनो नहीं आती तुम लगा
ओ फन्दा मगर एहसान मेरा काहे को मानोगे ॥

पीरु० अरे ! मियां बताओगे भी या एहसान की टहराय

	लोग देखूं भी कैसी चिड़िया या जाल वाल की देखी जायगी ॥
द्रोही०	ये लो। मैं बताता हूं २२ नम्बर वाले मकान में जो विधी के रास्ते में है श्रीहरनामा जी के घर अभाग बली और अविवेक चन्द दोनों गये हैं ये जरूर मुझे कुछ चढ़ावेंगे बस ले लो – चूको मत – उस्ताद अभी जाओ खाली वार हर्गिज न जायगा ॥
पीक०	अच्छा तो याग जाता हूं खुदा चाहेगा जरूर फल ही होगी (गया)
	पटाक्षेप **बारहवां दृश्य**
	पीकदान अली का छिप कर बैठ रहना और उन दोनों का एक साथ निकलना फिर पचासी का पकड़ कर खींच लेना और देनेरक्ता ॥
पीक०	(जूता हाथ में लेकर) चचा बदमाशों में हाथ में

	आज सब कसर निकालूंगा ॥
विवेक	(क्रोध जोड़ कर) मियाजी मुआफ कीजिये अपने किये का फल पाया अब आगे ऐसा काम कभी न करूंगा
कप्तान	वल्ला अब क्यों पछिताते हो अभी पहरे मजे चखाऊंगा नहीं तो जो कुछ माल तुम्हारे पास हो हम को दे दो ॥
विवेक	(जंजीर गले से उतार कर देता है, और कहता है कि भाई छोड़ दो लोग सब इकट्ठा हुए जाते हैं।
कप्तान	अच्छा लाइये मैं जाता हूं (गया)

लने में शहर के सब लोग जमा होगये और दोनों को बीच में घेर कर खड़े होगये अब तो अविवेकचन्द मन ही मन में सोचता है ने अपने किये का फल पाया धन दौलत सब गया अब यहां से चलना चाहिये इसका पति आता होगा (भागता है)

(इतना सुन कर कुमतचन्द आता है और अपनी स्त्री को देख कर कहने लगा) हे! हत्यारिन तूने मेरे कुल को दाग लगाया हा! तेरा जन्म गई हा। अब मैं क्या संसार में मुंह दिखाऊंगा

हा । गगा पे जाकर डूब मरूंगा मुनेने भे परिडत भानुप्रकाश आकर हाथ पकड़ लिया और समझाने लगा ॥

भानुप्र० सुन मूर्ख तू ने अपने तई नहीं विचारा कि युवा अवस्था के साथ विवाह करना है इसका प्रतिफल इसके क्या होगा अब आँखो मे देख और विचार कर, पहिले तू भी जब जवान था तब तेरी क्या दशा थी अब तो तू तो मर्द था यह स्त्री है स्त्रियो को मर्द से अधिक काम सताता है तू ने धन के मद मे आकर ... फल भोग तू ने अच्छो का कहा न माना ।

भोग० अरे । तब तो अधर्म किया उसका फल पाया अब और अधर्म क्यो करता है आत्म ... घात का पाप इसमे भी बुरा है ॥

नूर० सरको नम्रता से ... कहने लगा ।

हे । भद्र पुरुषो इस विषय पर भी कैसा नष्ट भ्रष्ट निर्बल है कि जिस का प्रतिफल सन्मुख दृष्टि पड़ता है ऐसी कुरीतियो मे कितनी प्रजा की हानि होती है इस रीति मे धन देने वाले और लेनेवाले दोनो पर पातक है मेरा

ाहिये - नहीं तो इसी कुरीति पर सब लोग चलने लगे तो वही श
न होगी जिन नो कुरीतियों के अचारित होने से पाप होता है उसके
ाप भागी सम्पूर्ण बांधव गण होते हैं क्योंकि जिस प्रकार राजा के
ान्य में प्रजा अनीति करें तो राजा पाप भागी होता है इसी प्रकार द
ड न देने से कुटुम्बीजन पाप भागी होते हैं आप लोग ऐसा समझते
ोंगे कि जो करेगा सो फल पायेगा परन्तु यह आप लोगों की बु
द्धियों का भ्रम है जैसे कि आप सब कुटुम्बीजन एक घर में रहते
और एक उनमें गढ़ा खोदें और यह विचार करे कि जो गिरेगा उसी
के चोट लगेगी परन्तु कदाचित् आपही गिर पड़े तो क्या आश्चर्य
है मानो आप बचा कर यदि चतुराई से चलें परन्तु आपका सन्तान
अवश्य कोई गिरेहीगा उसका फल क्या आपको न मिलेगा अव
श्य आपको फल भोगने पड़ेगा - हे बंधुवर्गो मनुष्य शरीर का य
ही फल है कि जहां तक बनपड़े शीघ्र इन कुरीतियों को उठा डा
लना चाहिये ॥ ओ३म् शांति शांति शांति ३

———o(o)———

कुतुब नाटक

१	अंधेर नगरी नाटक	७	१५	महा अंधेर नगरी नाटक अति उत्तम है	
२	चोन्निस नाटक	४	१६	अति अंधेर नगरी नाटक यह भी उम्दा है	
३	जयनार सिंह नाटक	७	१७	सत्य हरिश्चन्द्र नाटक	
४	भारत जननी नाटक	४	१८	विद्या अविद्या उपन्यास अति उत्तम है	
५	अद्भुत नाटक	७			
६	बाल्य विवाह नाटक	७॥	१९	[illegible] सकारिन हीर	
७	भारत दुर्दशा नाटक	७॥			
८	भूनीला कार्बिन ईद	४॥	२०	निरुद्ध नौकरी नाटक	
९	पाखंड विडम्बन	७	२१	हिन्दी उर्दू नाटक देखने योग्य है	
१०	मदन मंजरी नाटक	७			
११	विद्या सुंदर नाटक	७	२२	कन्या लम्पो पयी नाटक पहिला भाग	
१२	नील देवी नाटक	७			
१३	हास्य नाटक क्या ही अद्भुत उम्दा है	७	२३	अथवा दूसरा भाग	
			२४	कुसुम कुमारी नाटक	
	कर्पूर मंजरी नाटक	७	२५	वीर नारी नाटक	

पद्मावती नाटक	।=)	३३	सच्चा मित्र (मित्र हो तो ऐसा हो) यह नाटक अवश्य देखिये	=)
सन्यो दयं नाटक यह नये ढंग का है	=)			
शकुन्तला नाटक मये परी व तसवीर आदि	।।)	३४	अनाथ पत्नी नाटक यह नया तैयार हुआ है काबिल दीद है	=)
शकुन्तला नाटक लाला गणेश प्रसाद सा० फर्रुखाबादी कृत	।)।।	३५	नूतन चरित्र नाटक	४)
		३६	तमाशा गार्डेश नक़दीर यानी सत्य हरिश्चन्द्र नाटक	।)।।
समुद्र यात्रा नाटक	=)४			
सती नाटक सफा १६०	।।)			
अति उत्तम और दिलचस्प नाटक है		३७	भ्रमजाल नाटक	२=)।।
भारत हिम हिमा नाटक काबिल दीद है	।)	३८	गुलशन पद्दाम नाटक अवश्य देखने योग्य है	।)।।

ह० चिन्तामणी शिव चरण लाल बुकसेल्लर
शहर फर्रुखाबाद



श्रीः ॥

चम्पकवरणी

(उपन्यास)

जिसको
रायगढ़ निवासी प० अनिरुद्ध चौबे
हेडमास्टर ने रचा
उसीको
शिवलाल गणेशीलाल ने
मुम्बई टाइप से
अपने 'लक्ष्मीनारायण' यन्त्रालय
में छपाकर प्रकाशित किया
MORADABAD

प्रथमबार] सन् १९०४

चम्पक वरणी

(काल्पनिक उपन्यास)

प्रथम परिच्छेद.

चन्द्र प्रतापपुरी एक अति रमणीय और शोभायमानपुरी दण्डकारण्यके ईशान दिशाकी ओर-सुशोभित थी, पुरी की रम्यता विलक्षण थी उसके निकटस्थ सघन झाड़ियां थीं और नगरके समीप कहीं २ अनुपम पुष्प वाटिकाएँ सुशोभित थीं तहां वीराशिरोमणि धर्मधुरंधर ऐश्वर्यशाली महाराज विक्रम प्रतापदेव सिंहासनारूढ़ होकर निज अनुपम शाशन द्वारा प्रजागणों को शाशित एवं अप्रातिहत प्रताप से प्रतापित थे इनके एकही लड़का चन्द्रप्रतापदेव नामक परम चतुर राजनीतिज्ञ और सकल कलाभिज्ञ

थे इन्हें आखेट खेलनेका एक ऐसा दुर्व्यसन प
गयाथा कि विना इसके उन्हें कल नहीं पड़ती थ
एकदिन सवेरे अपने पितासे आज्ञालेकर अपनी
परम बलशाली सेनाको साथले आखेट निमि
त्त आरण्य में प्रवेश किया और जङ्गल की परम
रम्य शोभा देखतेर बहुत दूर निकलगये और व
हां अनेक भांतिके हिंसक पशुओंका घातकर
पने पुरीको चलने की सबोंको उत्तेजना दिय
कि तुम लोग पुरीके निकट किसी स्थान में बा
सकरोगे, मैं कुछ कालोपरान्त तुम लोगोंसे आमि
लूंगा ऐसी सम्मति दे आप अकेले अश्वारूढ़
हो जंगल की ओर चले उधर सैनिकगण पुरी
कीओर चले और एकसरोवर के तटपर उतर
अपने २ भोजन बनानेके कार्य में उद्यत हुए।
अब भगवान अंशुमालीके अन्तर्धान होने

काऔसरहै भगवान प्रभाकर अपने प्रफुल्लित मुखारविन्द को शनै २ छिपाने कीचेष्टा कर रहे हैं गगन मण्डलभी रक्तवर्ण भाषताहै विहगगण अपने २ विश्रामस्थान को , मानो सन्ध्या होने का औसर होरहा है ऐसें सम्भाषणकर, क्रमश. जारहेहैं इसी औसर पर एक युवक घोडेपर चढतृपासे आतुरहो जलस्थानका राह खोज रहाहै उसके चेहरे से वोधहोताहै किवह तमाम दिवसकी कराल धूप सहनकियाहै और रास्ता भी भूलाहुआहै निदान जलस्थान की आशा छोड एक राहपकड उसी पर चलना आरम्भ कर दियाहै इधर मयंक महाराज अपनी शीतलप्रकाश से प्रकाशित हो सम्पूर्ण जगतमें प्रकाशकरतेहैं तारागणोंकीज्योति आकाशमें जगमगाती है

इसअवसर पर हमारेयुवक को एक बड़ा
गीचा दिखाई दिया इसे देखहमारे युवक कि
न्ताऔर हर्ष दोनोंमें डामाडोल हुए
पर हमारे युवक जैसे साहसी थे वैसेही बुद्धि
मानभीथे महामदिपी चिन्ताका परित्याग कर
आगे बढने का उत्तेजन अपत अश्वको दिया, आ
ज सरद काल की शुक्लाष्टमी है और थोड़ी देर
में मयक महाराजभी निजस्थान जाने में कदा
पि देरी न करेंगे ऐसे अवसर पर हमारे युवक
को एक महल दिखाई दिया जो अति विस्तार
और चहुंओर सघन वृक्ष तथा लताओं से सुस
ज्जित था उसके समीप एक परम मनोहर सरो
वर संगमर्मर सिला से बंधी हुई सीढ़ियों से
सुशोभित था इसके उत्तर की ओर एक मनभा
वनी वाटिका (कुसुम कानन) थी जहां बने

क प्रकार के पौदे तथा लताएं अपने २ मद से मदान्ध हो लहरा रही थीं हमारे युवक आनन्द हो निर्मल जल का पानकर और घोड़े को हरियाली घास में छोड़ कर आप एक विसाल रसाल वृक्ष के नीचे बैठ सोचने लगे कि इस शुन्य स्थल पर इतना मनोरम्य उद्यान तथा सरोवर और इतना विशाल महल किसने बनवाया यह तो कोई देवस्थल और न कोई महर्षि का वास स्थान है, ऐसे सकल्पों में लगे ॥

अब सम्राट प्रभाकर के आगमन हमारे युवक को पक्षियों तथा भृंगगण की मधुर कलख द्वारा बोध हो रहा है आकाश का रंग कुछ और ही प्रकार दीख रहा हो इस अवसर पर हमारे युवक को मधुर स्वर की ध्वनि श्रवण गोचर हुई वे उस माधुर्य आहट की ओर देखने लगे पर कुछ-

इसअवसर पर हमारेयुवक को एक बड़ा गीचा दिखाई दिया इसे देखहमारे युवक न्तोश्रौर हर्ष दोनोंमें डामाडोल हुए पर हमारे युवक जैसे साहसी थे वैसेही बुद्धि मानभीथे महामहिपी चिन्ताका परित्याग क आगे वढने का उत्तेजन अपने अश्वको दिया, भ ज सरद कान्त की शुक्काअष्टमी है और थोडी दे में मयक महाराजभी निजस्थान जाने में कदा पि देरी न करेंगे ऐसे अवसर पर हमारे युवक को एक महल दिखाई दिया जो अति विस्तार श्रौर चहुंओर सघन वृक्ष तथा लताओं से सुस ज्जित था उसके समीप एक परम मनोहर सरो वर संगमर्मर सिला से बँधी हुई सीढियों के सुशोभित था इसने उत्तरकी ओर एक मनभा वनी वाटिका (कुसुम कानन) थी जहां घने

क प्रकार के पौधे तथा लताएं अपने २ मद से मदान्ध हो लहरा रही थीं हमारे युवक आनन्द हो निर्मल जल का पान कर और घोड़े को हरियाली घास में छोड़ कर आप एक विसाल रसाल वृक्ष के नीचे बैठ सोचने लगे कि इस शून्य स्थल पर इतना मनोरम्य उद्यान तथा सरोवर और इतना विशाल महल किसने बनवाया, यह न तो कोई देवस्थल और न कोई महर्षि का वास स्थान है, ऐसे संकल्पों में लगे ॥

अब सम्राट प्रभाकर के आगमन हमारे युवक को पक्षियों तथा भृंगगणं की मधुर कलख द्वारा बोध हो रहा है, आकाश का रंग कुछ और ही प्रकार दीख रहा है इस अवसर पर हमारे युवक को मधुर स्वर की ध्वनि श्रवण गोचर हुई वे उस माधुर्य आहट की ओर देखने लगे पर कुछ-

चक्षु गोचर नहीं हुआ पर शनै२ वोध होनेल
कि यह आवाज किसी सुन्दरीकी है ऐसा सो
ही रहेथे कि वो अनुपम शृंगारवाली तरुणी उ
के चक्षु गोचर होनेलगी जोकि उस सरोवर
एक घाटमें गात्रमाजन कर, वस्त्र बदलकर उ
उद्यान में भ्रमण कररही थी देखने में उभ
सुंदरी चतुर्दश वर्ष की अवस्था वाली थीं।
अव हमारे युवक उनकी लावण्यता की
द्भुत घटा निहार मोंचिक सा होगये और मन
मन कहने लगे कि इन कामिनियों की सौ
र्यता इन्द्र की परियों से न्यून नहीं चक्षुगोच
होती इसी प्रकार हमारे नव युवक उन दो
मेंसे एक जो अतीव सुन्दरी थी उस मृगनय
के कटाक्ष से चोट खा चकरा गये।
भगवान प्रभाकर के उदयहोने का समय

रहाहै चिड़ियों का चहचहाना, शीतल मन्दसुगन्ध वायु का सनसनाना, देख उन कामिनियों का चित्त प्रसन्न होरहा है ऐसे समयपर एक अपरिचित पुरुष देख वे अपनी २ घूघंट की वृद्धि करने लगीं, हमारे युवक ने उन्हें स्नान करती देख पाकेट से सीसपेंसिल और कागज निकाल उसमें कुछ लिख घाटपर डाल दिया था जिसे उनमेंसे एकने उस कागज को उठा अपने पास रखलिया था

अब हमारे वाचकवृन्द को भी उस चन्द्रकान्ता की शोभा देखने की रुचि होगी पर हमतो अभी अपने नव युवक की ही खट राग में फसे हैं समयानुसार उसकी अद्वितीय शोभा का वर्णन कर हम अपने पाठकों को सतोषित करेंगे

वाचकवृन्द आप लोग तो समझ ही गये होंगे

कि वह कागजका टुकडा,कागजका टुकडा नहीं वह लिहरातीहुई प्रेम का सुन्दर लता है भ पूरब की ओर से घोडे के टाप का शब्द सुना दिया और धीरे २ वहीं एक अजनबी युवक आन पहुंचा उसे देख युवतीगण ने अपने महल में प्रवे कर महल का द्वारा बन्द किया.

द्वितीय परिच्छेद

युवक—महाशय आप इतना दुख सहन कर अकेले इस आरण्य में क्यों कर प्रवेश किया

अपरिचितपुरुष—महाराज आप की सेवा में उपस्थित होना मेरा परम धर्म है अब आप मुझे आज्ञा देवें कि मैं आप की सेवा में सर्वदा उद्यत रहूं

युवक—तो महाशय मुझे इस स्थलसे बाहर निकालने में सहायता कीजिये पीछे पुन आप

से प्रार्थना और विषय की करूगा.
अपरिचित—नो आज्ञा आइये मेरेपीछे अपने अश्वपर सवारहो चालिये ऐसे स्थानमें ठहरना आप लोगोंको नहीं चाहिये, उसअपरिचित पुरुष की बातसुन हमारे युवक घोडेपर सवारहो उसके पीछेहो लिये और जगलको मनोरम्य शोभादेखते एक ऐसी जगह पर पहुचे जहा बहुत से सैनिक गण उपस्थित थे, हमारे युवक को देख सबोंने प्रणाम किया और सब उन्ही के पीछे २ चलने लगे उस समय सन्ध्याकाल, सम्राट प्रभाकर अस्ता चल की ओर बिदा हुये चन्द्रमा भी धीरेधीरे हँसते हँसते अपने प्रकाश से प्रकाशित हुयेऔर हमारे युवक अपने बलशालीसेनाके साथ अपने पुरी को कुशल से पहुचे हमारे पाठक गण समझही गये होंगे कि वे युवक कौनथे पर अपरिचित पुरुष का बोधहमारे बाचकवृन्द को न

हीं होगा " वे हमारे राज कुमार चन्द्रप्रताप के
सके मित्र वरुण देवथे जिन्होंनें राज कुमार की
खोज रात्रि ही भरमें की, और उनसे मिल
उन्हें लेही आये अब पाठक वृन्द जान गये होंगे
कि उनमें और वरुणदेव में कैसी गाढी मि
त्रता थी।

समय शरदकाल दक्षिण ओर से शीतल
मन्द सुगंध वायु प्रवाहित हो रही है आकाश
निर्मल चन्द्रमा का विकास चम्पकवरणी पलं
गपर पड़ी है और कुन्द उसके पास खड़ी उसे
समझारही है, चम्पकवरणी एक पत्रको अपने
वक्षस्थलपर रख ठन्डी सांस लेरही है

कुन्द—सखीन्तू बावरीसी क्योंबनीजाती है ?

चम्पक—बाहिन क्या कहूं कलेजा फटाजाता
है पर रो नहीं सकी।

कुन्द—कहतो कुछ

चम्पक—मुझे यही व्यथा व्याकुल कररही है कि वह माधुर्य मूर्त्ति कबप्राप्तहो।

कुन्द—बहिन ! ईश्वर दयामय हैं क्या एक अनाथ अबलाकी प्रार्थना नहीं सुनेगा।

चम्पक—हा वहिन मैंभी पुराणों में पढी हू कि ईश्वर दया मय हैं पर मेरे लिये क्या वह सहायता करेगा

कुन्द— अवश्य करेगा

तव तो चम्पक ईश्वरसे प्रार्थना करने लगी कि हे दयामय परमेश्वर तेरी महिमा का पारावार पानी दुस्तर है किन्तु जब तेरी अनुग्रह मुझ अभागिनी अनाथ बालिका परहोगी तो अवश्य ही मेरा मनोर्थ सिद्ध होगा ऐसाकह फिर पत्री का पाठ करने लगी।

उसमें यही लिखाथा—

प्राणवल्लभे !

आपके शशिवत मुख के दर्शन को सदैव मैं चकोर की भांति जोह रही हूं आशा है कि मयंक वत मुख के प्रभाव से कण्ठ रजनीवत चिन्ता शीघ्रही दूर हो जायेगी,

दोहा।

कोमल गोल कपोल अति, अजब गुलाबी रङ्ग।
मन मथ वाको भौंह वसि, मार्‌यो सर मम अङ्ग॥
चित चंचल धीरज नहीं दहत अग निस काम।
शेखर कंचन कुम्भ बिन, और कहां विश्राम॥
भरा सलिल योवन प्रिये, बँध्यो प्रेमकी डोर।
सरजी प्यारी वीजिये, गोता लेउ हिलोर॥

सम्पर्क—पत्र पढ़कर वहिन क्याकहूं मैं अपना तन मन राजकुमार को उसीसमय समर्पण कर चुकी पर वे मुझे पाकर भी सुख भोगने की इच्छा नहीं करते

कुन्द--बहिन ! ऐसी अधीर तू न हो, आपत्तिकाल में धैर्य का त्याग न करना चाहिये किन्तु प्रमाद को छोड़ उद्योग का आश्रय लेनाही ठीक है।

चम्पक-- किसका

कुन्द--बहिन मैं आज जाती हूं परसों कोई खबर तुझको अवश्यही मिलजावेगी पर जो कुछ तुझे उन्हें लिखनाहो लिखकरदे।

चम्पक-एक कागज लिख उसे देदिया इस के उपरात कुन्द अपने विश्राम स्थल को चली गई, आनन्दवर्धक मयंक महाराज निज छवि बढा रहे हैं, स्तब्ध का अटलराज्य जमा है, निद्रा देवी भूल कर भी आज हमारे राजकुमारी के समक्ष नहीं उपस्थित होतीं

तृतीय परिच्छेद

इधर हमारे राजकुमार चन्द्रप्रतापदेव भी

सब काम काज तृणवत त्यागे यही विचार कर रहे हैं कि वह मृगनयनी मुझे क्यों कर प्राप्त हो कामके संचार से हमारे राजकुमार ऐसे दुख में पड़े कि उसे देखकर हमारी लेखनी आगे नहीं बढ़ती हायरे कामदेव लोगों को अनायास ही में उपहास भाजन बना देता है।

अबतो हमारे राजकुमार की भद्रता का लेश न रहा, धीर विनय और गाम्भीर्य भी उस मृग नयनी के वश होगये, लज्जा को तो प्रथम ही से हमारे राजकुमार ने उस तरुणी को तिला ञ्जली करदिया था॥

ऐसी दशामें हमारे राजकुमार के मुख से बात नहीं निकलती है और उनके प्रियमित्र वरुणदेव बैठे २ ये सब बातें देख –

वरुण–प्यारेमित्र! यदि अनुग्रह पूर्वक मेरी

प्रार्थनाको श्रवणकर अंगीकृत करने की सहानु-
भूति प्रकट करें तो प्रार्थना करू।

राजकुमार- कहिये।

बरुण--राजकुमार आप इतनी चिन्ता क्यों
करतेहैं, यह नीतिहै, कि--जो जिसके हृदय में
हता है अर्थात जो जिससे प्रेम रखता है वह
र रहने पर भी उसके निकट है और जो जिसके
दय में नहीं रहता है वह समीप रहकरभी उसे
र है कामनाओं के चिन्तन से कामना कभी
ान्ति नहीं होती सोये हुए सिंह के मुख में
ृग नहीं घुस जाते,कौन विना उद्योग के तिल
ा तेल प्राप्त कर सक्ता है, अतएव-राजकुमार
ाप चिन्ता का परित्याग करिये यदि ईश्वर की
ृपा होगी तो आप का मनोर्थ अवश्य ही सफल
ोगा और मैं भी प्रण कर कहता हू, कि-आप

को इस विषय पर पूर्ण सहायता दूगा, ऐसे स्व
वरुणदेव अपने स्वकार्य में उद्यत हुए, पर रा
कुमार हमारे क्यों कोई कार्य करते हैं
अपनेही करतव्य को ठीक जान फिर उस
सुन्दरी की अनुपम छटा की ओर ध्यान करने
लगे अब तो यह दुख हमारे राजकुमार को दु
सह होगया उस चन्द्रकान्ताके अतिरिक्त उ
न्हें कुछ सूझे ही नहीं पड़ता था।

अब भगवान प्रभाकरके अन्तर्ध्यान होने का
अवसरहो रहाहै इस अवसरपर हमारेराजकुमार
के मित्र वरुणजी आकर अपने स्थान पर बैठे रहे

वरुण–राजकुमार आप को ऐसा उदास न
होजाना चाहिये इस कार्यके सिद्धार्थ मैंने जो
यत्न सोची है उससे बोध होता कि अवश्य वह
सुन्दरी आपको मिलजावेगी।

राजकुमार—प्रसन्न वदन से,कहिये क्या आ-पने विचाराहै,

वरुण—उसमें कहना क्या है जब श्रीमानको अभी इस बातका सिलसिला यहांलों पहुंचाहै कि एकद्वार पाल आया और कहा महाराज एक औरत बाहर खडीहै और कहतीहै कि यह पत्र स्वय मैं राजकुमार के हाथ में दूगी

राजकुमार—अच्छा तो बुलाओ

द्वारपाल—बुलाकर लाया और आगन्तुक स्त्री के पत्रको राजकुमार केहाथ में दिया,

पाठकगण— अबतो राजकुमारकी चेष्टा और ही कुछ दीखने लगी छाती दुनी होने लगी प्रेमालिङ्गन की आशा बढने लगी—

उसमें यही लिखा था —

प्राणनाथ !

मैं अपनेको सब भांति से आपको सौंप चुकी-

प्यारे! मैं आपके मन्द मुसकान और प्यार भरी चितवनको निज नैनोंसे कब देखूगी और इसी आशासे जंगलकी राह सदैव निहारतीहूं,

हा! करतार कीबुद्धिअल्प है जोकि आपकी राह देखनेमें विघ्न डालनेके हेतु पलकें बनादी हैं, आशा करतीहूं किआप अपने प्रसन्न भरे मुख की शोभा को दिखा कर तापको हरेंगे,

करि शृगार नित चितवती, पीतम पंथ तुम्हार।
पत्रि आपकी बसति उर, यथा रत्न की हार॥
बढत सदाअनुराग हिय, मिलन प्रीति कीरीति।
शेखर प्यारे आपबिन, धीर रहै नहिं चीत॥

राजकुमार बडेचाव से, पूछने लगेकि तुम्हारी स्वामिनी ने औरभी कुछ कहा है?

कुन्द- नहीं इनबातोंसे हमारा प्रयोजन नहीं मुझे अब जाने की आज्ञा हो।

राजकुमार ने एक कागज दे उसे बिदाकिया इधर राजकुमार फूले अंग नसमाये,भांति२ के तर्क वितर्क अपने हृदय में करने लगेकि धन्य भाग जो उस कामिनी ने मेरी स्मरण करी। पाठकगण!आज पूर्णिमाहै आज भगवान् निशानाथ अपनी सम्पूर्ण कलाओंसे जगतको आनन्द करेंगे भगवान दिवाकरके लाल मण्डल का प्रति बिम्ब हमारे राजकुमार के चक्षुगोचर होरहा है, वरुणदेव प्रथमहीसे चलेगये,हमारे राजकुमारभी आज आनन्द हृदय से सब काम काज सन्ध्या अवसरका निपट। आकाशकी ओर देखते पलंग पर लेटेहैं,निशानाथ अपने प्रफुल्लितमुखारविंदसे सम्पूर्ण जगतको आनन्द कररहे हैं आज निद्रा देवी भी हमारे राजकुमार पर सहसा आक्रमण करने को तैयारहैं।

चतुर्थ परिच्छेद ।

(चम्पकवरणी पलंगपर लेटी है कमला शीतलोपचार कररही है)

चम्पकवरणी--ऐ कलंकी मयङ्क तूने ने अपनी दाहककिरणोंसे विरही जनों को जलानेकी निर्दयता किस गुरु से सीखी है ।

कमला--प्यारी धीरज धर ये देख कुन्द भी आगई,

कुन्द के आगमन की खवर सुन झट पलङ्ग से उठी कुन्द ने पत्र हाथ में देदिया ।

चम्पक-पत्र पढकर प्यारी सखी इस उपकार को बदला तुझे मैं देनहीं सक्ती जो तू ऐसे अगम तथा अनजाने जगह से यह कार्य-कर लाई, भला बतातो राजकुमार ने और भी कुछ कहा है ।

कुन्द- सखी अबतू क्यों नाहक सन्देह के

जाल में पड़ोहैं अवतेरे भाग जगे यह वही राजकुमार हैं, जिसपर तू इतने दिनोंसे लौ लगाये थी कल वह अनोखाप हुना तुझसे आकर मिलैंगे और हम सबलोग भी उनकी पहुनाई कर अपना जीवन सफल करेंगे।

चम्पक–प्रसन्न वदन से क्यों सखी कल वे राजकुमार यहां आवेंगे ?

कुन्द–तो क्या मैं झूठी हूं।

चम्पक–नहीं नहीं कहतो के बजे आवेंगे

कुन्द–मध्यान्ह के समय।

चम्पक–तो कल सवेरे होते ही हमारे जगल भ्रमण का सब सामान इकट्ठा करना।

कुन्द–अवश्य करूगी।

पाठकवृन्द अभी आधीरात का अवसर है मयंक महाराज निज अप्रातिहत प्रतापसे प्रता-

मित होरहे हैं कुन्द और चम्पक अब शयन करने को निजस्थान को चलीगई हैं, ठीक है विधाता की इच्छा जिसे अवश्य होनहार के सुघटित करने का हठ है, जिस ओर अपनी झुकावट प्रगट करती है उसी ओर मनुष्य का चित्त भी हवा के झोंके से तृण के समान विवशहो दौड़ जाता है।

पाठकगण अब आधी रात्रि बीतगई है दो युवक घोड़े पर चढ़ पुरी की नैर्ऋत्य दिशा की ओर जंगल लाघते चले जाते हैं उनके स्वरूप से बोध होता है कि किसी की खोज में जारहे हैं उन में से पहिला युवक कहता है कि मित्र- क्या उस शीतलमूर्ति द्वारा मेरा संतप्त हृदय शांत होगा प्यारे मित्र जो उस तरुणी का चित्र मेरे हृदय में जड़ गया है अब वह मेरे हृदयसे कभी अलग नहीं होसक्ता।

ऐसे ही अनेक तरह की बातें करते हमारे युवकगण चले जारहे हैं।

पंचम परिच्छेद।

पाठकवृन्द प्रातःकाल का अवसर है मन्द सुगन्ध शीतल वायु चल रही है, कहीं सुन्दर सुगंधवाले पुष्प खिल रहे हैं, कहीं सुन्दर मीठे२ फल वृक्षोंमें लटक रहे हैं कहीं पक्षीगण अनमोल रागसे रिझाते हैं कहीं सूर्य की किरणोंकी अरुणाई सुखदसी हो रही हो।

चम्पक—प्यारी सखी कुन्द आजतू क्यों ऐसी घबड़ाईसी हो चित्त दीख पड़ती है बोलने पर भी नहीं सुनती राजकुमार का और कुछ हाल सुनती है

कुन्द—सखी मेरा अपराध क्षमाकर, मैं राजकुमार के प्रेम से मग्न थी सखी तू धन्य है जो

तूने अपने उदारगुणोंसे राजकुमार को वशीभूत कर लिया है वे भी तुमपर ऐसेही लवलीन हो रहे हैं अब स्नान करनेका औसर है चल-इस बचन को सुन चम्पक उठ आनन्द हृदयसे चली और उस सरोवर में पहुंची और सुगन्ध उब-टन लगा स्नान कर अपने गृह में आई।

पाठक वृन्द !-आज चम्पक का कुछ और ही हाल है शृंगार तो पहिले ही सजगई है और पीतम को मिलने की आशा बढ़ रही है।

भगवान सूर्यदेव अपने किरणोंसे प्रकाश कर रहे हैं और चम्पक सरोवरके पासवाली कुसुम कानन में अपनी प्रियसखी कुन्द को लेकर भ्रमण कररही है इतनेमें इनको दो युवक घोडे दौड़ाते चले आते हैं ऐसा दीख रहा है।

चम्पक-सखी देख तो दो युवक घोडे पर सवार हो चले आरहे हैं।

कुन्द—बस, बस, मैं जानगई वे वही चित-चोर हैं ।

चम्पक—अपना घूंघट बढ़ाकर उधरही देख-रही है धीरे २ वे दोनों युवक उस सरोवर के किनारे पहुंचे और अपने घोड़ों को एक रसाल वृक्ष में बांध सरोवर के किनारे बैठ—अचानक २ रमणी जिन में से एक सर्वाङ्ग सुन्दरी जिसके घुंघरारी काली रात्रिवत बालोंपर दामिनीसी ज्योति मांगमोती तथा उज्ज्वल गोल कपोलपर ऐसी रक्तमई वर्णहै मानो उष्ण कंचनकी आभा नासिका कीर चञ्चुवत तथा दसन दाड़िम-पंक्ति सदृश तथा कज्जल पूरित नेत्र हरिणवत देख युवकगण प्रसन्न होने लगे।

पाठक वृन्द! समझ ही गये होंगे कि वे युवक कौन हैं और वह चन्द्रकान्ता भी कौनहै, प्रिय-

वरो थे युवक, वेही अर्थात् राजकुमार चन्द्रप्रतापदेव और वरुणदेव हैं और वही रमणी है जिसकी खोज के लिये आये थे देखकर प्रसन्न होने लगे और कुन्द राजकुमार को आते देख कहीं जाछिपी।

षष्ठम परिच्छेद।

वाचक वृन्द ! इससमय दोघड़ी दिन चढ़ाये भगवान प्रभाकर अपने पूर्ण प्रकाश से प्रकाशित होरहे हैं राजकुमार चम्पकके पास जाकर

राजकुमार—चम्पककी ओर देख व्यक्त चातुरी का अनोखा ढगकर प्रिये ! तुम्हारे वियोग में मुझे किसी भाँति कल नहीं पड़ती अब मैं आप की सेवा में उपस्थित होकर यही विनय करता हूं कि आप मुझे अवश्य अपना दास बनावेंगी।

चम्पक—स्मरसुन्दर ! कानोंको अमृत के

समान तृप्ति पहुंचाने वाली आपकी वाणी सुनने की अभिलाषा मेरी सदैव बनी है, प्यारे आप सरीखे नायक रत्न को ऐसी वाणी कहना नहीं चाहिये कारण मैं तो आपकी दासी हूं।

राजकुमार—बुद्धिमती! इन विडम्बनाओंसे मेरी अभिलाषा कब पूरी होती है पर उसका तो कुछ उत्तर मिले जिसकारणमैं यहां आयाहूं।

चम्पक—राजकुमार आपतो अब हमारे मालिक हैं अबमैं आपको इसका उत्तर दूंगी

राजकुमार—कहिये

चम्पक—मैं आपको तन्मय जीवन से सब भांति अपनेको सौंप चुकीहूं बातयोंही हो रहीहैं किकुछ घोड़ोंके टापसुनाई देने लगे चम्पक झट अपने महलमें। राजकुमार को कल इसी अवसर पर मिलने का प्रण करगई और हमारे

युवकगण भी अपने अश्वोंपर चढ़ चलेमये कुन्द द्वारही पर चम्पक से मिली।

चम्पक—वाह सखी क्योनहो! भले मुझे ही धोखेमें अकेली छोड़कहीं चली गई।

कुन्द—(मुस्कुराकर) क्यों अकेली काहेकोरही भला कहतो सही कि मनोकामना सिद्ध हुई या नहीं।

चम्पक—हसतीहुई चल।

कुन्द—अबकाहेको ऐसी नकहेगी अच्छा मौके परदेखा जायगा, अब हमारे वरांगणाओं का घोडेके टाप टपा टप सुनाई दिये देखतेही विलम्ब होगया थोडी देरमें एकदल सवारों का उसी मेहलके द्वारपर खडा होगया कुन्द ने देखकर झट किवाड खोल दिये

सवारगण—चम्पक कोदेख प्रणाम कर एक पत्री दी।

चम्पक— इसपत्रको पढ़कर झट एक डोली पर सवार पूरवादिशा की ओर अपनी प्रिय सखी कुन्दको लेकर सब सवारोंके साथ चली और कुछ देर के बाद एक नगर में पहुची,

अथ सप्तम परिच्छेद।

अब हमारेसुवक चन्द्रप्रतापदेव तथा वरुणदेव अपने२ अश्वपर आरूढ होचले और उस ताला बके किनारे पहुचे जहां कि चम्पकसे भेंट हुईथी महल का द्वार बन्द था महल के देखने से बोध होताथा कि यह जनहीन है, हमारे राज-कुमार अपने मन में धैर्य ला कुछ देर बैठे पर वह तरुणी कांहेको निकले राह देखते २ संध्या भी होगई, निराश होकर राजकुमार तथा वरुण उस महल के पास जाकर बैठे सध्या का

औसर है हमारे राजकुमार चिन्ता के महा-
ताल में पड़े रात्रि भी वीतगई बालरवि के
आगमन की सूचना भी इन्हें पक्षियों द्वारा
मिली तौ भी वह तरुणी न निकली।

राजकुमार अवतो घवड़ाकर कहनेलगे कि
प्यारी ! क्या आप अपनी प्रतिज्ञा भूल गईं
प्यारी! आपने यह निठुरपन कबसे ग्रहण किया
क्या आप नहीं जानतीं कि आशा देकर विमुख
हो जाने से कितनी ग्लानि आशाग्राही को
होती है इस लिये अब चन्द्रमा के मुख को
फीका करने वाली सुंदरी! मेरी विरहरूपी मान
सिक वेदना को कटाक्षरूपी कटार से क्यों नहीं
छेदन करती।

वरुण -मित्र आप धैर्य धरिये जिस भांति
मैंने पहिले से आपको वचन दे रक्खा है, वह
कदापि अन्यथा होनेका नहीं।

ऐसीही आशा दे राजकुमार को चंद्रप्रताप पुरी लेगए राजकुमार को भूख प्यास तो रहीही नहीं अपने पिता को दिखाने के लिये कुछ भोजन कर अपने बाटिका में चित्त बहलाने गए पर चित्त क्या बहलाते वही मूर्ति की ध्यान उनके हृदय में आया फिरभी व्याकुलहो कहने लगे कि हा ! आज कल नव छैलेगण अपनी२ रमणी के आगमन की आशा करतेहैं और मिलकर आनन्द प्राप्त करतेहैं किन्तु मैंतो स्वय चिर सन्तापित हूं दूसरे का सुख वर्धन क्यों कर सक्ता हूं । विधाता ने ये सब आनन्द चखनेको मुझे प्रगट नहीं किया ।

उस समय हमारे राजकुमार के चित्त में जिसप्रकार वेदना हुई उसका अनुभव हमारे पाठकगण ! स्वय कर सक्तेहैं, जिन्हें कभी ऐसा

कुन्द उसके समीप बैठ कर पंखा करती है सिर्फ हा ! हा ! की ध्वनि है।

कुन्द—सखी क्यों ऐसी करती है।

चम्पक—सखी मुझ से न बोल तूजा (स्तब्ध) पीछे फिर हटती है कि हाय एक २ क्षण सौ युगके समान बिताये नहीं बीतते तो भी वाम विधाता इस यातना का अंत नहीं करता हा ! रमण के वियोग अग्नि की ज्वाला का ताप बढता ही जाताहै, हा ! प्राणेश मुझे अपना जान कर भी दर्शन नहीं देते।

कुन्द—प्यारी सखीअब तू इस व्यथा से अलग हो क्यों कि राजकुमार और वरुणदेव इस नगर में आयेहैं।

चम्पक—क्या सत्य कहतीहै।

कुन्द—तेरी सौंह जो मैं झूठ कहती हूं।

चम्पक—उठकर के वे कहाँ उतरे हैं।

कुन्द–तालाब के किनारे जो महाराज के वागके समीप हैं।

चम्पक–तूने कहा सुना।

कुन्द–मैंने अपने आंखों से देखा हैं।

चम्पक–तो आज जा पिताजी से कह कि चम्पक आज आपका वगीचा देखने जावेगी-

कुन्द– अच्छा जातीहू-

चम्पक–सखी आज मेरी वाईं आख भी फरक रहीहै-तू जा शीघ्र पूछ कर आ

कुन्द–पूछने की क्या वातहै चल अपनी स हेलियों को लेके इतने में घोडों के टाप के शब्द सुनाई दिये-

कुन्द–झरोखे से देख कर सखी देख तो ये वही हैं या और कोई,

चम्पक–सखी मैं धन्यहूं जो मेरे निमित्त राज

हमारे यहाकी छपी पुस्तकें इन स्पतोंपर मिलती हैं

☞ प० नीलकण्ठ-द्वारकाप्रसाद
अमीनावाद-लखनऊ

☞ मुंशीस्वामीदयाल
ताजरकुतव-निवारघाट
पटना सिटी

☞ बाबू गोकुलचन्द
ताजरकुतव-अलीगढ

☞ लक्ष्मीनारायण प्रेस
मुरादाबाद.

"मुझे आज जूरीने यद्यपि अपराधी ठहराया है, तो भी मेरे मनने मुझको निर्दोषी बतलाया है, मानव शक्ति कहीं भी जिसके आगे कोई चीज नहीं, ऐसी ऊंची शक्ति सदा संसार-चक्र है चला रही, ईश्वरका संकेत मनोगत दिखलाने यह 'मुझे पड़े मेरे संकट सहन नहीं इस हलचलका तेजपर्व"

हतो वा प्राप्स्यसि स्वर्गं जित्वा वा भोक्ष्यसे महीम् ।
तस्मादुत्तिष्ठ कौन्तेय युद्धाय कृतनिश्चय ॥ भ गी ॥

तिलक केस.

(संक्षिप्त जीवन और अपील सहित)



रामदेव शर्म्मानें 'नागरी प्रेस बम्बई नं० ४ में छाप'
कर प्रसिद्ध किया ।

वन्दे मातरम्

ॐ

उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत ।
क्षुरस्य धारा निशिता दुरत्यया
दुर्गं पथस्तत्कवयो वदन्ति ।

क० नि० व० ३ सं०

भावार्थ—हे मनुष्यो ! उस अनामय पदकी प्राप्तिके लिये जागो !! महात्मा आचार्यों के उपदेशद्वारा ज्ञानको बढ़ाओ । जैसे सानपर चढ़े हुए छुरेकीधार तीक्ष्ण और कठिन होतीहै, ही यह श्रेयमार्ग भी बड़ा दुर्गम और कठिन है। इसमें कोई वि ही मनुष्य (जो शम दमादि साधनों से युक्त है) चलसकता कठोपनिषद् तृतीय वल्ली संख्या १४ ।

श्रीयुत लोकमान्य प० बालगंगाधर तिलकका संक्षिप्त जीवन ।

आप महाराष्ट्र ब्राह्मण हैं । आपका जन्म रत्नागिरिप्रान्तमें स

१८५७ ई० में हुआथा। आपके जन्मका वर्ष भारतीय इतिहासमें अधिक प्रसिद्ध है। आपके पिता शिक्षाविभागके डिपुटी इन्सपेक्टर थे आपको आपके पिताने पूना हाईस्कूल और डक्कन कॉलिजमें शिक्षा दिलाई थी। बी० ऐ० की परीक्षामें प्रथमवार उत्तीर्ण नहोकर आप बम्बई को चले गये। और वहांजाकर बी०ए० की परीक्षा में उत्तीर्ण हुये और सन् १८७९ में एल० एल० बी० की डिगरी प्राप्तकी थी आप इंगरेजीमें वक्तृतादेने तथा लेखलिखनेमें एकहीथे संस्कृत विद्यामें भी आप अच्छे निपुणथे। और अपने दो मित्र मि० चिपलूनकर और मि० एप्टे की सहायतासे एक मदरसा "पूना न्यूहाईस्कूल" नामकस्थापित किया। जोकि उन्नतिकरते २ "डक्कन ऐजुकेशन सुसाइटी" होगया। जिसके अधिकारमें आजकल "हाईस्कूल" "और फरगुसन कॉलिज" हैं आपफरगुसन कॉलिजके प्रोफेसर भी रहेथे। इसबीचमें डक्कन एजुकेशन सुसाइटीने दोसमाचार पत्र " मरहट्टा " और " केसरी " नामक प्रकाशित किये। जिनके सम्पादकत्वकाभार आपही को मिला। इस समय आपने कॉलिजकी प्रोफेसरीको छोडदिया। कुछ समयके बाद आप लेजिस्लेटिवकौंसिलके मेम्बर चुनेगये। आपको सन् १८०७ में १८ मासके लिये कारा गृह भेज दियागया क्योंकि आपने अपने पूनके केशरी पत्रमें कुछ राज विद्रोहीलेख लिखाथा। इसमुकद्दमें

मे मि० पग और मि० दावर आपके वकील थे। यह वही मि० दावर हैं जिन्होंने अब जास्टिस दावर के भेषमें आपको छै सालके लिये देशनिर्वासन करदिया।

१८ मासका दुःखसहन करके कारागृह से मुक्तहोनेके बाद कुछ दिन तकतो आप चुपचाप रहे। हां मरहठा और केशरी में कभी २ कुछ लेख अवश्य भेजते रहे। बंगविच्छेद और इस आन्दोलनने आपको फिर उसीकार्य्यमें मग्न कर दिया। और फिरः मरहठा और केशरी के सम्पादन करनेका भार अपने हाथ में लेलिया। आप गरम दलके नेता माने जाते हैं।

आप के मति गत १२ वीं मई सन १९०८ वाले "केशरी" के अंकमें "अपने देशकादुर्दैव" वाले शीर्षक पर लगाया हुआ राजद्रोही और फिनूरी लेख लिखनेका और जिस करके भारत वर्षकी नियमानुसार स्थापित सरकारके सन्मुख विरोध फैलने, प्रजा तथा सरकार के बीच भयकर शत्रुता फैलाने अथवा फैलवाने के मयत्न करनेका अभियोग चलाया गयाहै।

वह लेख निम्नलिखित अभिप्रायका मराठी में है

"देशकादुर्दैव"

"स्वभावसे गरीब और शांतिप्रिय भारतवर्ष युरप के रसियाकी

स्थिती में पहुंचनेलगाहै । यह देखकर किसी को भी असमंजसी और दुःख हुये विना नहीं रहसकता । जिसपर मुजफ्फरपुर में दो निरपराधी गोरी स्त्रियां बमगोलेकी बलिहोगई, इससे तो बहुत लोगोंको यदवाई पक्षके लोगोंकी ओर बहुत तिरस्कारहोगा । यह निर्विवाद बात है इस प्रकारकी बातें युरुपक्रेसियामें बनचुकी हैं और अबभी बनतीहैं जो इतिहास प्रसिद्ध हैं परंतु भारतवर्षका राजकीय प्रकरण इन सब बातों तक पहुंचेगा, हमारे गोरे अधिकारियोंका हठ और दुराग्रह, स्वदेशोत्कर्ष के लिये सहन करने वाले युवकोंको, पूर्ण हताशकरके भयंकरीयों के मार्ग में इतना शीघ्र प्रवृत्त करेंगे यह हमको मालूम नहीं होताथा । परंतु ईश्वर के अटल नियम कुछ जुदाहीहै । मुजफ्फरपुरमें जो बमगोला उड़ायागया वह किसी व्यक्तिके लिये द्वेपसे अथवा एक आध बदमाश बुद्धि हीनके कर्तव्य से बनाहो, ऐसा उपरोक्त विषय से पढ़ते हुये लोगोंकी साक्षिसे दर्शाई नहीं देता । मि० किंग्सफर्डके बदले मि० केनाडीके घरकी दो निरपराधी स्त्रियोंकी बलि पड़ाई इसके लिये स्वय बमगोलाफेंकने वाले खुदीराम बोसको भी बुरा मालूम हुआ है । तो फिर दूसरों के लिये लिखनाही क्याहै । जिस-युवा पुरुषने ऐक गुप्त मंडली स्थापित करके यह काम उठाया, उनके ऐसे अघोर कृत्यसे अंग्रेज सरकार का राज्य इस देश से नष्ट नहीं होसकता। इससे यह पूर्ण

तथापि अथवा यह बात स्वप उनके उद्गारों से सिद्ध है। ऐसी एक आध गुप्त मण्डली निकली, इतनेसे " जुल्मी अधिकारी वर्गका नाशहोगा " ऐसा पक्के हुये लोगोंमे किसीने भी नहीं कहा है। किसनेही इंगलोइंडियन पत्रकारोंने [सो बन्दूकें अथवा दस पांच बमगोलाके बनानेसे क्या अंग्रेज राज चला जायेगा !] ऐसी उपरम्ब छत्रा से प्रश्नकरके इन युवाओंकी हंसीकी। परंतु उक्त पत्रकारोंसे हमारी नम्रविनयहै कि यह कोई हंसीका प्रसंग नहीं हैं।

जो बंगाली गृहस्थ ऐसी भयंकर बातें करनेवाले हैं, वह कुछ चोर अथवा बदमाश वर्गमेंके नहीं है जो ऐसा होता तो पुलिसके आगे यह अब कासा खुल्लम खुल्ला जबाव न देते। बंगालके युवाओंके गुप्त दुष्कृत्य रुसियाके समान बलवाई लोगोंके अनुसार अधिकारियोंका गुप्त खून करनेके लिये कदाचित हो! परंतु यह स्वार्थके वास्ते नहीं किन्तु अनियंत्रित सतापसे हुई है, यह बात उनके इजहारोंसे स्पष्ट मालुम होती है। रसियामें (निहिलिष्ट) लोगोंके यत्कार जो हुल्लड और बलवे होते हैं वह ऐसेही कारण के लिये होते हैं। यह समझ मानमें हैं और ऐसी दृष्टिसे चाहिये यानी स्वदेशी अधिकारी वर्गके अन्यायसे रसियामें जो दशा हुई है वैसीही परदेशी अधिकारियोंके अन्यायसे भारतवर्षमें होनेको अब आरंभ हुआ है। ऐसा कहे बिना रहा नहीं जाता। अंगरेज सरकारका सामर्थ्य रसियन सरकारसे

प्रजाका धर्म मात्र उनसे ऐसी धारानतके अनुसार पालन नहीं करा सकते इतना नहीं किंतु गोनोंमेंसे किसीको भी लाभदायक नहीं है, ऐसा राज्य धर्म शाज कर रहा है धर्म का जहां नाश होता है वहां किसी न किसी समयमें मुजफ्फरपुर सरीखे अनर्थ होनेमें उसमें नवीनता नहीं है इस लिये ऐसा अनिष्ट घटना, ते बने, यह जो राज्यप्रर्वतकी इच्छा होतो अपनी वर्त्तमान राज्य प्रणालीकाही उनपे प्रथम दोष देना, चाहिये यह हमारी उनसे सूचना है। और इसी हहुसे आजका लेख लिखा है।"।

आपने उपर हमारि भारत सरकारने इसको राजद्रोह ख्याल करके फौजदारी १२३ ए और १२४ ए धारा लगाई थी। प्रेसीडेन्सी मजिष्ट्रट मि० एष्टनके वारंटसे बुदवार ता० २४ वीं जून १९०८ मैं मेन्या के ६।। बजे सिताराम बिल्डिंग के सरदार आश्रम में तिलक महोदय पकडे गये थे। और रातभर पुलिसकोर्टकि चौकीमें रखे गयेथे।

गुरुवार ता० २५ जून १९०८ ई०

आज दिनके ११ बजे श्रयुत तिलक महोदय का चीफ प्रेसीडेन्सी मजिस्ट्रेटके सम्मुख हाजिर किया गया सरकार की ओरके वकील मि० बावा थे और जानिबुतार्फ ओरसे मि० दावर आदि कई वकील थे।

श्रयुत तिलक आमी नहीं साधारण पोशाकसे न्यायालयमें उपस्थित हुए थे। इनके पकडे जानेका समाचार सब शहरमें भडके और घर २

में पहुंच गये थे। और इसी कारण आज इस मुकदमे के सुननेके लिये असंख्य मनुष्य उपस्थित हुये थे। न्यायालयके भीतर स्थान न होनेके कारण सबको एक मैदानमें जो न्यायालयके सामने है खड़ा रहना पड़ा था। उस स्थान पर कुछ मुकदमें का हाल सुननेमें नहीं आता था, किन्तु सब मनुष्य तिलक महोदय के प्रेमके कारण मुकदमेंका परिणाम सुननेकी इच्छासे खड़े थे पुलिस की तरफ से इस मुकदमें को चलानेवाले सुपिरिंटेंड मि० स्लोन मुकर्रिर हुये थे

आरम्भमें सरकारी वकील मि० बोमनके पूछने से मि० स्लोनने कहा कि मैं बंबई की छिपी हुई पुलिस में सुपिरिन्टेन्डेन्ट की पदवी पर हूं।

इस मुकदमे के अभियुक्त मि० बालगंगाधर तिलक हैं जिनको कि मैं पहिचानताहूं अधिक दिवसों से केशरी पत्र खरीदताहूं गत तारीख १२ मईका केशरी भी मैने खरीदाथा यह राजविद्रोहि व्याख्या-नथा।

मि० बोमनने मुकदमा मुल्तवी रखनेके लिये विनयकी कि मैं मुकदमा चलाने के लिये तइयार नहीं हूं। बैरिस्टरदावरने इसका विरो ध्या इस पर कुछ देर तक दोनों पक्षके बैरिस्टरोंकी बहस होती

रही फिर आगामी सोमवार ता० २९ जून तकके वास्ते मुकद्दमा मुल्तवी किया गया।

इसके बाद मि० तिलकके बैरिस्टरने जमानतके वास्ते अर्जी पेश की जिसका विरोध सरकारी वकीलने किया। बहुतसा वादानुवाद करनेपर भी मजिस्ट्रेट साहिबने जमानतपर छोड़ना स्वीकार न किया।

ता० २७ जून शनिवार

श्री० तिलक के ९ जूनवाले केसरीके अंकमें निम्न लिखित लेख प्रकाशित हुआ था। जिसपर सरकारकी तरफसे दूसरा अभियोग खड़ा करके आज प्रेसीडेन्सी मजिस्ट्रेटकी अदालतमें श्री० तिलकके ऊपर दूसरा वारंट काटनेकी प्रार्थना की गई, जो साहब बहादुरने स्वीकार की। और इस अभियोगकी बाबत भी आपको २९ जूनकोही हाजिर होना पड़ा। वह लेख निम्न लिखित अभिप्रायका मराठी में है।

" इस सप्ताहसे सरकारने फिर अनेकों राजनीति आरम्भ की है मालूम होता भूत हिन्दी सरकारके दिलमें हर पांच या दस वर्ष में समा जाता है इस समयका मामला भी उसी प्रकारका लगा है सभा बन्दीका कानून लॉर्ड मोर्ले हिन्दुस्तानके प्रधान हुए उसके पीछे पास हुआ था तथा अब हिन्दुस्तानी समाचार पत्रोंके सम्बन्धका कानून पास हुआ है। उदार पक्ष इस समय राज्य शासन पर है, मि० मोर्ले एक ऐसा

बुद्धिमान् तथा उदार पक्षके नियमों का तरफदार कारबारकी लगाम रखने वाला है इसीसे भारतकी राजनीतिके हिमायती स्थान स्थान देख नेमें आये उस परसे हमारे पाठक बराबर विचार सकेंगे कि शासन कर्त्ताओंने अपनी राजनीति स्वयं किस तरह तुड़वा डाली है आगेकी राजनीतिका क्या अर्थ होताहै आगेका अर्थ यही नहीं है कि आगे बढने वालोंको रोकना बल्कि आगे होनेवाली तरक्कियोंको भी तोड़ डाल ना होताहै जिनकारणोंने भारतीय प्रजाको उत्पन्न किया है उन्होंने प्रजाकी उन्नति की है। तथा प्रजाके अभ्युदय के लिये प्रजामें अग्नि सुलगाई है। उसीके भविष्योन्नति रोकनेके लिये हाथ और पैर कुचल कर तोड़ दें, इन कारणोंको पीछे हटानेके कामको छोटा देने अथवा वाक्यायदे राजनीतिकी उपमा दीजा सकेगी भाषा तथा भविष्यकी उन्नति प्रजाको जन्म देती है तथा उसे दृढ़ करती है, इस कारण भारत में एक प्रजामें उपस्थित होती थी, ऐसा देखकर अधिकारी वर्ग बहुत दिन हुये उन दोनोंको नाश कर देनेकी इच्छा रखते थे और यह दृढ़ इच्छा व्यवहार में लाने के लिये उनको बंगालमें गोला फेंकने वाली घटना का अवसर हाथ आगया अब यह प्रश्न होताहै कि यह नातेके कायदों से अधिकारी वर्ग जो इरादा रखते हैं क्या वह पार सकेगा। अधिकारी वर्गकी पहली इच्छा यह है कि भारतमें बमगोला की घटनायें बन्द करना और दूसरी यह करना कि ऐसे गोले

पर किसीका ध्यान न रह । राज्य करता जो यह इच्छा रखते हैं वह ईश्वरीय नियम ह तथा प्रशंसा करनेके योग्य भी हैं परन्तु जैसे एक मनुष्य जिसको उत्तरकी ओर जाना हो और दक्षिणकी तर्फ मार्ग लेता हो । इसीतरह राज्य कर्त्ताओंने अपना विचार पार पाडनेको मार्ग से विल्कुल उलटा मार्ग ग्रहण कियाहै । इस बातको जिसमनुष्यकी विचार शक्ति बुरेकर्मोमे दौड़जाय उसी माफिक समझतेहै मस्तिष्क इस प्रकार बुरेमार्गकी ओर दौड़ता है यह भविष्यके नाशका संकेत अपनेको करताहै । सरकारने जो आमेकी राजनीति अखतियारकी है जिसके उपर हमे भारी खेदके साथ विचार अता है, कि प्रजा तथा शासकोंको अबसे अधिकतर हानिकारक दिन देखने होंगे सरकारकी विचार शक्ति कैसी मुर्खताकी बनाई है यह देखो अधि कर्मी ओंने झूठी खबर फैलाई है कि बंगालियोंकी तरफसे जो गोले फेंके जारहे हैं यह मंडलके वेयनका नाश करने पाले हैं मंडलके बांधो वाधेका नाश करनेके लिये यूरूपर तथा बंगालके गोलोंके बीच आकाश पाताल का अन्तर है । बंगालमें गोला फेकनेकी जड देशके लिये परिश्रमकी है, तथ यूरूपमें गोला फेकनेकी जड स्वार्थ और उत्पत्तियों से घृणाही है । बंगाली कुछ अनारकिस्ट नहीं है लेकिन अनारकिस्टों के हथियारोंका व्यवहार करते हैं, बस इतना होहै जिस अनारकिस्टने

फ्रांस के राजाको इसकारणकि यह राज करता है पेरिस मे मारडाला था । यह एक प्रकार का मनुष्य है, इसी तरह पुर्तगालके फिरीहुई बुद्धिके देश हितकारी मनुष्यने वहांके राजापर इस समबसे कि उसने राज सभाको बंद करदीथी गोला फेंका था वह दूसरी किस्मका आदमी है जो अनारकिष्ट अमरीकामें एक लखपती का सिर्फ लखपती होनेके कारण खून करता है यह एक किस्मका आदमी है और जीवपर आनेवाला रसियन देश हितकारी आदमी जो निराश होकर गोला फेंकता है कि रसियन शाहशाहके अधिकारी रसियन राज सभाको हक नहीं देते हैं यह और किस्मका आदमी है रसियन राज सभाको अधिकार प्रदान नहीं करते यह दूसरी किस्मका आदमी है । किसीको भी यह बात नहीं भुल जानी चाहिये कि बंगालमें गोला फेकनेकी घटना पहले वर्गकी नहीं किन्तु दूसरे वर्ग मे आती है । पुर्तगालके फेंक हुये गोलेसे वहांके राजकारोबारके सिलसिलेमें फेरफार किया था तथा उसके बाद जो लड़का राज गद्दीपर बैठा था उसके प्रधान मंडलको अगली जासेकी राजनीति छोड़ देनी पड़ी थी । और रसियाके सबसे बलवान महाराजाको भी गोलों के सामने नमना पड़ा था और राज सभाके तोड़नेकी कोशिशको छोड़कर अन्त उसको स्थापन करनी पड़ी थी । इससे पुर्तगालमें गोला फेकना बन्द होगया और रसियामें भी गोले फेंकनेकी घटनायें न बढने पाई इसकी

उज्वल कोई मनुष्य मासेकी राजनीतिको नहीं देता । लोगोंमें नई इच्छायें तथा चाव पैदा होता, और वह दिन पर दिन जोर पकड़ता जाता है। बम गोला फेंकनेकी घटनाओंके कारणसे बताये हुये कर्मचारियोंने भी यही समझा था तथा उन्होंने राज्य कार्यकी प्रथामें ऐसा फेरफार कियाथा कि जिससे लोगोंकी इच्छायें और चाव रोक नहीं तो थोड़ेही पार पड़ें । जिससे वह एकदम उछलकर मारधाड़ के इलाजोंको काममें न लावें सरकारका अपनेवाली वर्तमानराजनीति दो प्रकारकीहै प्रथमतो बोम्बा बनानेका काम कठिन करदेनेका है और दूसरे वह ध्यान रखना चाहता है जिससे लोग बारूद गोले फेंकनेकी तरफ न झुके ।

जैसे तोतेको पिंजड़ेमें डालकर उसका दरवाजा बन्द करा जाता है वैसेही सरकारने पहले काम यह किया कि लोगोंके हाथमेंसे हथियार छीन लीना लिये । जिसका तोता पिंजरेमेंही रहने को ही आनन्दमाने इसलिये जो लोग जानवरोंके शौकीन होते हैं वे उसको पिंजरेमें मीठे फल तथा घने पानी गेरनेका सामान रखतेहैं । लेकिन अरसमरकारने पिंजरे का द्वारही बन्द नहीं किया बल्कि तोता पिंजरेमेंसे बाहर नहीं जासके इसलिये उसके पंख तोड़ना आरम्भ किया है ।

सोमवार ता० २९ जून

आजभेर श्री० तिलक चीफ प्रेसीडेन्सी मैजिस्ट्रेट मि० ए एच एस्टनकी अदालतमें हाजिर किये गये।

आजभी पहले दिनके माफिक कचेहरीके बाहर हजारों मनुष्य खडेथे और "तिलक महाराजकी जय वन्देमातरम्" की पुकार कर रहेथे ११। बजे कोर्टकी कार्यवाही आरंभ हुई

तिलक महाराज पर मुकद्दमा चलानेके लिये सरकारकी तरफसे मि० विनिंग बारिस्टर सरकारी सोलिसटर मि० बोवन और गुप्त पुलिसके सुपरिण्टेण्डेण्ट मि० स्लेन नियत थे। लोकमान्य तिलककी ओर मि० जहांगीर गीनशाह दावर मि० गाडगील और मि० इन्द्रमीत बारिस्टर, मि० बोडस मि० कारंडीकर, और मि० खापर्डे उपस्थित थे।

रिपोर्टरोंको चेतावनी।

मि० दावरने प्रथमही यह कहा कि वर्तमान समाचार पत्रोंमें जो समाचार प्रकट हेते हैं उनमें बहुत हेरफेर कर दिया जाता है, उन्होंने ऐसे पत्रोंके नाम लिये जैसे बम्बेगजट टाईम्स आफ इण्डिया, एडवोकेट आफइण्डिया। पश्चात् कहा कि सम्वाददातागण उतनाही सम्वाद लिखें जो सत्य सत्य हो। विनिंगने भी कहा कि सम्वाद दातागण उपर्युक्त बातोंको ध्यानमें रखें।

सरकारी वकील, मि० विनिंगने कहा, कि जो अभियोग एकही

मेरी रायमें अलग अलग चलानाही ठीक है। आसामी पक्षके वकीलने कहा था कि अलग अलग मुकद्दमा चलानेकी कुछ जरूरत नहीं मालूम पड़ती परन्तु मैजिस्ट्रेटने दोनों अभियोगोंको अलग अलग चलानाही स्वीकार किया।

मि० तिलकका डिक्लेरेशन।

सरकारी वकील मि० विनिंगने कहा कि मि० तिलक का दाखिल किया हुआ-२ जुलाई सन् १९०७ का केसरी डिक्लेरेशन अथवा प्रिन्टर या प्रकाशकका दस्तावेज मैं पेश करता हूं

मि० जोशीका बयान।

देशी भाषाओंके सरकारी अनुवादकके प्रधान क्लर्क भास्कर विष्णु जोशीने सरकारी वकीलके पूछनेपर कहा कि मैं १० बरसेसे इसी पदपर नियुक्त हूं। केसरी पत्रके ता० १२ मईके अङ्कमें चौथे और पांचवें पन्नेपर जो लेख उल्लिखित हुआ है उसका अङ्गरेजी अनुवाद पेश करता हूं।

सेशनमें मुकदमा।

मजिस्ट्रेटके पूछनेपर मि० दावरने कहा कि मुकदमा सेशनमें भेजने योग्य है इसमें गवाहोंकी जिरह मुल्तवी रखता हूं

मजिस्ट्रेट (मि० विनिंगसे

हमें इस विषयमें क्या कहना है।

सरकारी वकील— मि० तिलक सर्वसाधारणमें जो प्रतिष्ठा रखते हैं उसकी तरफ देखकर तो यही कहना पड़ता है कि मुकदमा सेशनमें सिपुर्द किया जावे।

मैजिस्ट्रेटने भी कहा कि इस अभियोगकी तहकीकात सेशनहीमें होगी। तत्पश्चात् सरकारी वकीलने केसरीमें प्रकाशित लेखका अंग्रेजी अनुवाद सुनाया।

केसरीपत्रके एजेण्टका बयान।

सरकारी वकीलके प्रश्नपर कहा कि मैं कांदावाडीमें रहता हूँ। नारायण जगन्नाथ मेरा नाम है कस्टमके रिपोर्टर जनरलके दफ्तरमें क्लार्क हूँ। केसरी मराठा पत्रका एजेण्ट हूँ। बम्बईमें ग्राहकोंको पत्र पहुँचाता हूँ। उनकी समस्त प्राप्ति १२५० होती है। इस कार्यके लिये मुझे ३०) रु० मिलते हैं मैं केसरी पत्र पढ़ता हूँ। १२ नं॰का पत्र भी मैंने ग्राहकोंको दिया है। मूल्य बम्बई वालोंके लिये ४॥) रु० नियत किया हुआ है और एक प्रति तीन पैसेको दी जाती है।

पुलिस इन्स्पेक्टरका विचार।

सरकारी वकीलके पूछने पर— मि० सखीवानने कहा कि इस मुकदमेके सम्बन्धमें तलाशीका वारण्ट लेकर मैं पूना गया था। पूना

मेरी रायमें अलग अलग चलनाही ठीक है। ओ०आर्मी पक्षके वकीलने कहा था कि अलग अलग मुकद्दमा चलानेकी कुछ जरूरत नहीं मालूम पड़ती परन्तु मैजिस्ट्रेटने दोनों अभियोगोंको अलग अलग चलानाही स्वीकार किया।

मि० तिलकका डिक्लेरेशन।

सरकारी वकील मि० विनिङ्गने कहा कि मि० तिलक का दाखिल किया हुआ १ जुलाई, सन् १९०७ का केशरी डिक्लेरेशन अथवा प्रिन्टर या प्रकाशकका दस्तावेज मैं पेश करता हूं

मि० जोशीका बयान।

देशी भाषाओंके सरकारी अनुवादकके प्रधान क्लर्क भास्कर विष्णु जोशीने सरकारी वकीलके पूछनेपर कहा कि मैं १० वर्षसे इस पदपर नियुक्त हूं। केशरी पत्रके ता० १२ मईके अकमें चौथे, और पाचवें पृष्ठोपर जो लेख उल्लिखित हुआ है उसका अङ्गरेजी अनुवाद पेश करता हूं।

सेशनमें मुकदमा।

मजिस्ट्रटके पूछनेपर मि० दावरने कहा कि मुकद्दमा सेशनमें भेजने वाले हैं इससे गवाहोंकी जिरह मुल्तवी रखता हूं।

मजिस्ट्रट (मि० विनिंगसे

हम इस विषयमें क्या कहते हो।

सरकारी वकील— मि० तिलक सर्वसाधारणमें जो प्रतिष्ठा रखते हैं उसकी तरफ देखकर तो यही कहना पड़ता है कि मुकदमा सेशनके सिपुर्द किया जावे।

मैजिस्ट्रेटने भी कहा कि इस अभियोगकी तहकीकात सेशनहीमें होगी। तत्पश्चात् सरकारी वकीलने केसरीमें प्रकाशित लेखका अंग्रेजी अनुवाद सुनाया।

केसरीपत्रके एजेण्टकाबयान।

सरकारी वकीलके प्रश्नपर कहा कि मैं कांदावाडीमें रहता हूँ। नारायण जगन्नाथ मेरा नाम है कस्टमके रिपोर्टर जनरलके दफ्तरमें मैं क्लार्क हूँ। केसरी मराठी पत्रका एजेण्ट हूँ। ग्राहकोंके मोहल्लोंको पत्र पहुँचाता हूँ। उसकी समस्त प्रति १२५० होती हैं। इस कार्यके लिये मुझे ३०) रु० मिलते हैं मैं केसरी पत्र पढ़ता हूँ। १२ मईका पत्र भी मैंने ग्राहकोंको दिया है। मूल्य बम्बई वालोंके लिये १॥।) रु० नियत किया हुआ है और एक प्रति तीन पैसेको दी जाती है।

पुलिस इन्स्पेक्टरका विचार।

सरकारी वकीलके पूछने पर मि० स्लीवानने कहा कि इस मुकदमेके सम्बन्धमें तलाशीका आरम्भ करके मैं पूना गया था। पूना

पुलिस सुपरिंटेण्डेण्ट मि० वेधिस भी साथ थे। असामीके घर और छापेखानोंकी तलाशी ली गई।

सरकारी वकीलने कहा कि पंचनामा सेशनमें पेश किया जावेगा।

आसामीपक्षके वकीलने कहा कि पंचनामेका यहां कुछ जिकर नहीं होना चाहिये यदि आप यहां इसका कुछ जिकर करेंगे तो पंचनामा इसी अदालतमें दाखिल करना होगा। सरकारी वकीलने इसके बाद एक पोस्टकार्ड पेश किया कि तलाशीमें यह मिला था।

मि० दलालने कहा कि घरमें जो कुछ मिल जावे वह पेश नहीं होना चाहिये। नहीं जानते कि यह कहांसे मिला और उसमें क्या लिखा है।

मि० बिन्निङ्गने कहा कि यह अभियोगमें काम देनेवाला है और असामीके घरमेंसे उसके लिखनेके खानेमेंसे मिला है। मैजिस्ट्रेटने उसे दाखिल करनेकी आज्ञा दी।

सफाई पक्षके वकीलने कहा कि यदि आप दाखिल करते हैं तो उसका कारण भी लिख लीजिये। मैजिस्ट्रेट (मि० निक्सने) यहां जो कुछ बयानात हुए हैं क्या उनके सम्बन्धमें आप कुछ और कहना चाहते हैं?

मि० दलालने कहा बयान सेशनतक मुल्तवी रखता हूं।

मजिस्ट्रेटने कहा कि असामीको फौजदारी [illegible] ११४

(अ) और १८५ दफाके अनुसार इस अभियोगको हाईकोर्टके सेशनमें भेजता हूं।

दूसरा मुकदमा।

आपके ९ जूनके अकमें जो लेख प्रकाशित हुआ था और जिसकी कार्यवाही गत शनिवार को हुई थी उसकी बाबत सरकारी वकीलने कहा कि पहले अभियोगमें डिक्लेरेशन आसामीकी तरफसे दिया हुआ है उसीको इस दूसरे मुकद्दमेमें पेश करना चाहता हूँ। तत्पश्चात पहले मुकदमेमें अनुवाद देने वाले भास्कर विष्णु जोषीका बयान लिया गया उसने फिर उसी प्रकार कहा कि ९ जून वाले केसरीके प्रबन्धका अनुवाद मेरा किया हुआ है। सरकारी वकीलने वह भी पढ़कर सुना दिया। फिर उसी नारायण जगन्नाथकी गवाही की गई। इस बार सब वही बातें कहीं परन्तु ९ जूनके केसरीकी ३००० प्रति मिली थी यह विशेष कह डाला। आसामीने अपने बयानको सेशनके लिये स्थगित रखा। मैजिस्ट्रेटने भी पहले अभियोगकी भांति इसको भी सेशन सिपुर्द कर दिया।

आसामी पक्षके वकील मि० दावरने कहा कि मुकदमा सेशनमें भेजा गया है, इससे आसामीको जमानतपर छोड़नेके लिये बहुत कुछ विचारकी जरूरत है इस लिये वकीलोंको आसामीसे मिलनेकी आज्ञा दी जावे। मैजिस्ट्रेटने आसामीके वकीलोंकी प्रार्थना स्वीकार कर ली।

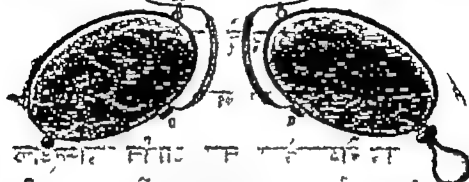
हाईकोर्टमें मुकदमेका आरंभ (१)

प्रथम दिवस

मुकद्दमा १३ जुलाईसे बम्बई हाईकोर्टमें आरम्भ होगया। इसमें स्पेशल जूरी सहित मि० जस्टिस दावरका था। सरकारकी ओरसे मि० इन्सन बिनिंग और इनवरारिटी पैरवी करते थे और श्रीयुक्त तिलककी ओरसे कोई नहीं था। उनके साथ आठ वकील थे सही किन्तु यह सब केवल सलाह देनेके लिये थे। तिलक महाशय अपनी पैरवी आप करते थे।

अदालतमें भीड़।

खास अदालतमें तो ऐसी भीड़ नहीं थी, केवल वकील बैरिस्टर अन्य मुकद्दमेवाले और कुछ प्रतिष्ठित दर्शक ही यहां और बाहर भी थे। लेकिन अदालतके आने जानेकी सड़कोंपर कचहरीके बड़ी भीड़ थी हाल कि पुलिस और गोरी काली फौजके घेरके पर जमे खड़े थे। केवल हानबी रोड एल्फिन रोडपर मामूली भीड़ थी लेकिन उनसे मिली हुई सड़कोंपर दर्शकोंके ठट्ठके ठट्ठ जमा थे। जिनसे एक तरफ और अब्दुल रहमान स्ट्रीट पायधोनी, फुरेस रोड तथा गिरगांव चिचपोकली आदिमें खासी भीड़ थी। लेकिन यह जन समूह कुछ तो मुकद्दमेकी खबर सुननेको और कुछ इतनी फौजें देखकर जमा हो गया था। कोई ९-१० बजे



आयॅन इंडस्ट्रियल कम्पनी वम्बई का

रोशनाई का सत

केशरी तारीख १९ मई १९०८ की राय—

यह रोशनाईका सत्त आर्यन ईंडस्ट्रिअल कम्पनी वम्बई का वनाया हुआहे इसमें पानी मिलाते ही वहुत उमदा रोशनाई वन जाती हे इसकी रोशनाई आसानिसे चलती हे और कलमम चिपटती नहीं हे और गाढी नही होती हे

लाला लाजपतरायकी राय

रोशनाईका सत्त और अरढीका तेल जो हिन्दुस्तानमें वाहरसे आतेहें उनमें यह वहुत उमदा हे मैं आमलोगों को इसके इस्तमाल करने की सिफारस करता हु और चाहताहुं कि यह कम्पनी अपने काममें कामयाव होवे

तक यह लोग डटे खड़े रहे और शान्त भावसे उस दिनकी कार्यवाहीपर टीका टिप्पणी करते जाते थे कुछ कारखानेवालोंकी भलमन्साहत बहुत दिखायी थी। बम्बईकी अन्यान्य फर्मोंमें काम करनेवाले कुली मजदूर १२ बजे तक तो अपने कामोंपर मौजूद रहे लेकिन १२ बजेके बाद जब रोटी खाने गये तो गैर हाजिर होगये। उस दिन फिर वह अपने कामों पर न जाकर तिलक महोदयका मुकद्दमा देखने चले गये। इनके कारण भीड़ और भी बढ़गई।

फौजोंका आगमन।

अफसरोंने, मालूम होता है, इस मामलेके लिये बड़ी बड़ी तैयारियां करली थी। नगरकी पुलिसके सिवा किलेसे बहुतसी फौज मँगाई गई इनके अतिरिक्त देवलाली छावनीसे रायल स्काच हाईलैण्डर गोरी पल्टनकी ९ कम्पनियां स्पेशल ट्रेनद्वारा बुलवाई गई थीं। यह गत शनिवारकोही यहां पहुँच गई। फिर सोमवारको २१वां रिसाला और दो गोरी पल्टन और बुलाई गई। यह सब ब्रिगेडियर जनरल मीनफिल्डके अधीन हैं।

अदालतमें।

ठीक ११॥ बजे जस्टिस दावर अदालतमें उपस्थित होगये। इसके बाद जूरी बैठनेकी बात होने लगी। लेकिन जजके बैठतेही पहले मि० बरानसन सरकारी बैरिस्टरने कहा कि मि० तिलकपर दो लेखोंके लिये

दो अभियोग लगाये गये हैं, और यह इन दोनोंमें एकही दिन सेशन सुपुर्द हुए हैं। एक केस १२—मईको प्रकाशित हुआ था, और दूसरा ९—जूनको। लेकिन मैं इन दोनों अभियोगोंको एक—साथही चलाना चाहता हूं। बैरिस्टरने यह भी कहा कि इसमें कुछ बहसकी जरूरत नहीं है क्योंकि मुझे अधिकार प्राप्त है कि दोनों मुकद्दमे एक साथही पेश करूं।

मि० तिलकने कुछ कानूनी उज्र पेश करके कहा कि यदि दोनों मुकद्दमें एक साथ सुने जावेंगे तो मुझे बहुत मुश्किल पड़ेगी, मैं अकेला आदमी दोनोंका एक साथ जवाब देनेमें गड़बड़ा जाऊंगा सरकारी बैरिस्टर चाहे इसे सहज समझें किन्तु मेरे लिये बड़ी मुश्किल है।

"जज" अखबारोंसे मुझे यह विदित हो चुका है कि ऐसा उज्र मेरे सामने किया जायगा इसपर मैं खूब विचार भी कर चुका हूं। इस मामलेमें मजिस्ट्रेटके सामने दो मुकद्दमें चलाये गये दोनोंमें अलग अलग जांच हुई और अन्तमें यह सेशन सुपुर्द किये गये अब प्रश्न यह है कि, दोनों मुकद्दमें एक साथ सुने जायें या अलग अलग मेरी रायमें यह बहुत मुनासिब होगा कि दोनों मामले एक साथ एकही जूरीके सामने पेश हों, लेकिन इस मामलेमें चार अलग अलग अभियोग हैं अर्थात् हर मुकद्दमेंके साथ एक एक अभियोग १२४ अ धाराका भी है। सरकारी बैरिस्टर कहते हैं कि यदि अलग अलग मामले

चौथेको, वो उन्हें और मामलोंको मुल्तवी रखना पड़ेगा। यह ठीक नहीं है। जो मामला मुल्तवी होगा वह बिलकुल खारिज समझा जायगा अर्थात् अभियुक्त उन मुकदमोंमें साफ छोड़ दिया जायगा।

सरकारी बैरिस्टर—अच्छा मैं पहले मुकदमेमें साथवाला—१२४ अ का अभियोग अभी नहीं चलाना चाहता।

जज—तो मैं उस मामलेमें अभियुक्तको छोड़ देता हूं।

सरकारी बैरिस्टर—आप मुकदमा सुनकर छोड़ सकते हैं।

जज—क्या आप चाहते हैं कि पहले तीन मुकद्दमे एक साथ चलें और उनके समाप्त होनेपर चौथा उठा देनेकी दरखास्त की जावे।

सरकारी बैरिस्टर—इसपर पीछे विचार कर लिया जायगा इसपर जज साहबने तीनों मुकदमे, अर्थात दो राजद्रोहके और तीसरा वैरभाव फैलानेका, एक साथ सुनना स्वीकार किया।

इसके बाद तिलक महोदय कठघरेमें खड़े हुए और कार्रवाई आरम्भ हुई। उन्हें अभियोग पढ़कर सुनाये गये और पूछा गया कि तुम दोषी हो या निर्दोष।

इसका ठीक उत्तर न देकर तिलक महोदयने कहा कि अभियोग कुछ समझमें नहीं आता और न उसमें यह प्रगट किया गया कि मेरे किन शब्दों पर अभियोग चलाया गया है।

मि० इनवरारिटी—अच्छा तो कुछ लेखही शामिल किये जाते हैं।

जज—तब तो कुल लेख अभियुक्तको पढके सुनाना होंगे और जूरीको भी।

मि० इन—मैं कुछ लेख दाखिल करता हूं।

श्रीयुत तिलक—मैं सिर्फ वह शब्द या वाक्य सुनना चाहता हूं जिनपर अभियोग चले हैं।

जज—सरकारकी ओरसे तब दोनों लेख पेश होंगे।

श्रीयुत तिलक—यही ठीक होगा।

जज साहब—खैर तो इसमें कमसे कम आधा दिन खर्च होगा।

तुमपर १२ मई और ९ जूनके लेखोंपर मुकदमा चलाया गया है। दो अभियोग राजद्रोहके हैं और एक वैरभाव फैलानेका। इसके बाद पहला लेख पढकर सुनाया गया। दूसरा लेख आधाही पढा गया था, कि तिलक महोदयने कहा, कि बस और पढनेकी जरूरत नहीं है। लेकिन उन्होंने दोनों लेखोंके तर्जुमेपर उज्र किया।

इसके बाद फिर पूछा गया कि तुम दोषी हो या निर्दोष?

श्रीयुत तिलक—मैं निर्दोष हूं।

तब खास जूरी बुलाई गई। इसमें ७ अंगरेज थे तिलक महोदयने इसपर उज्र किया कहा मैं इस जूरीको नहीं मानता। तब

फिर नई जूरी बुलाई गई। इसमें एक हिन्दू और एक पार्सी था। इस बार उसने आपत्तिकी, कहा हम इस जूरीको नहीं स्वीकार करते। इसपर फिर नई जूरी तलब हुई। इस जूरीमें ७ अंगरेज और दो पार्सी थे।

इसको अभियुक्त और जज दोनोंने स्वीकार कर लिया, तब मुकद्दमा आरम्भ हुआ।

सरकारी वकील.—

"केसरी" मराठा अखबारके १२ मई और ९ जूनवाले अंकोंमें यह लेख प्रकाशित हुए थे। अभियुक्त उसके एडीटर व प्रकाशक हैं। इसके बाद आपने १२४ अ राजद्रोहकी धारा पढके सुनाई कहा कि इस धाराने एडिटरोंको यह अधिकार बेशक दिया है कि वह सरकारी कामोंकी उचित आलोचना करें और उनपर अपनी सम्मति प्रकट करें किन्तु यह अधिकार किसीको नहीं दिया कि वा सरकारकी बदनामी करे या यह कहे कि सरकार अत्याचार करती है अथवा लोगों को पीसती है, ऐसा करनेसे वह सरकारकी ओरसे प्रजाको भड़काता है और घृणा उत्पन्न कराता है। १२ मईका लेख सुनाया।

इसके बाद गवाह पेश होने को पहले सर्कारी अनुवादकके दफ्तरके भास्कर विष्णु जोशी पेश हुए। इन्होंने लेखोंका तर्जुमा करनेको

गवाही दी। सरकारी बैरिस्टरने तर्जुमा दाखिल करना चाहा। मि० तिलक महोदयने इसपर आपत्ति की किन्तु जजसाहबने पहले दाखिल करने दिया।

सरकारी अनुवादक मि० जोशीका बयान फिर शुरू हुआ। उन्होंने कहा कुछ लेखोंका तर्जुमा मैंने किया था। पहलेके कई लेखोंका भी तर्जुमा किया था।

इसके बाद श्रीयुक्त तिलकने मि० जोशीसे जिरह आरम्भ की। जिरहमें कहा कि कुछ लेख मेरे तर्जुमा किये हुए नहीं हैं। सरकारी वकीलने भी कुछका तर्जुमा करके मेरे पास भेजा था। मैंने उन्हें असली लेखोंसे मिला लिया था। मैंने किस तारीखको तर्जुमा किया यह याद नहीं। मुझे यह बतानेका अधिकार नहीं है कि सरकारी वकीलने मेरे बाद तर्जुमा किया था या पहले।

फिर तिलक महाशयने इन लेखोंके मराठी शब्दोंके अंगरेजी अर्थपर जिरह आरम्भ की कि जिनपर मुकदमा चलाया गया है। पहले आपने "देशका दुर्देव" शीर्षक लेख उठाया और उसके शब्दोंके अर्थपर बहस करने लगे।

इसमें मुजफ्फरपुरके बम काण्डकी आलोचना करते हुए कहा है कि सरकार अब ऐसी भयभीत होगई है कि उसका अत्याचार अब बर्दाश्त नहीं हो सकता। और कहा है कि सरकार केवल स्वार्थ साधनके लिये

यत्न करती है। उसका एकमात्र उद्देश्य यही है कि प्रजा इस लायक न होने पावे कि वह कुछ दंगा फिसाद मचासके। ऐसा कहकर सरकारकी सरासर हतक की गई है और उसपर मिथ्या दोषारोपण किया है। फिर "स्वराज्य" शब्दका अर्थ समझाते हुए वैरिस्टरने कहा कि इस शब्दका अर्थ केवल यह है कि 'अपना राज्य या हुकुमत हो'। १ सूनके लेखमें अभियुक्तने समझाया है कि प्रजा और सरकारमें क्या मतभेद है। और यह भी कहा है कि यदि सरकार प्रजाकी अभिलाषायें पूरी न करेगी तो लोगोंको न जाने क्या बुरा विचार होगा और यह भी दिखलाया गया है कि लोगोंको अधिकार है जब चाहें तब राज्य को बदल सकते हैं वह यत्न क्या है सभी समझते हैं। अर्थात लोग मुश्किलसे अपनी अभिलाषायें पूरी कर सकते हैं। यह भी कहा है कि सरकारके कामोंसे तीस करोड भारतवासी कोधित हुए हैं। कहा है कि सरकार अपनेही देशके आदमियोंके लाभका ज्यादह ख्याल करती है और स्वेच्छाचारी है। वैरिस्टरने कहा कि जूरीको कुल लेख ध्यानमें रखना चाहिये। अभियुक्तने पहले लेखमें बम चलानेवालेको काम बुरा बताया है, लेकिन दूसरे लेखमें यह दिखाया है कि कैसे अन्य देशोंमें लोग अपनी अभिलाषा पूरी करनेके लिये रादबीर करते हैं। यह भी कहा है कि बम बनानेके लिये कोई बड़ा कारखाना नहीं चाहिये कुछ मसालोंसे वह सहजही बन सकता है। और कहा है कि

ब्रूटिस सरकार इस देशके लिये बड़ी कठोर स्वरूप बन रही है यदि जो कुछ यहांवाले मांगते हैं वह नहीं दिया तो लोग रूसकी भांति गुण सीख जायेंगे । यह भी कहा है कि जबतक सरकार प्रजाके स्वत्व प्रदान न करेगी तबतक उसका कोई प्रबंध बम फेंकनेवालोंको रोकनेके लिये कारगर न होगा ।

श्रीयुक्त तिलक अच्छा इस लेखमें ' दो निरापराधिनी गोरी स्त्रियां इसमें 'गोरे' शब्दका अङ्गरेजी अनुवाद आपने ' सफेद' white किया है या 'गोरे रङ्गका ?

मि० जोशी मैंने इसका अनुवाद किया है यूरोपियन लेडियां लेकिन नोटमें ' सफेद ' भी लिख दिया है ।

प्रश्न ' अधिकारी वर्ग ' का क्या अनुवाद किया है ?

उत्तर—Official class अङ्गरेजी अधिकारी वर्ग, गोरा अधिकारी वर्ग सरकारी अधिकारी वर्ग का पर्याय अर्थ है । Ruling class, white Official class, English Official Class, और English ruling Class यह सब उनके अर्थ हो सकते हैं ।

मि०—क्या Bureaucracy का अर्थ अधिकारी वर्ग, हो सकता है कि नहीं ?

उ०—मैं यह नहीं कह सकता लेकिन इस शब्दसे Rule शासन या Ruler शासक—का अर्थ नहीं समझा जाता ।

म०—अधिकारी वर्गकी अंग्रेजी क्या है ?

उ०—Official, Ruling Class,

प्र०—'वर्ग' क्या ?

उ०—वर्ग कहते हैं Class, को।

प्र०—अच्छा यदि अधिकारी वर्ग' का अर्थ 'अंग्रेजी अधिकारी वर्ग' करना होतो ठीक अङ्गरेज सूचक शब्द पहले वाक्यमें लगाना पड़ेगा न ?

उ०—हां लगाना पड़ेगा।

प्र०—Despotism का अर्थ क्या है ?

उ०—जुल्मी राजपद्धति।

प्र०—और Tyranny का ?

उ०—जुल्म

प्र०—Coercion ?

उ० इसका भी अर्थ है जुल्म ?

प्र०—Repressive का भाषान्तर क्या हो सकता है ?

उ०—कोष देखे बिना बताना कठिन है (कोष देखकर) इसका अर्थ दबाने या कुचलनेवाला होसकता है। मराठी भाषामें इसके लिये नया शब्द बनाया गया है नहीं तो साधारण अर्थ इसका है 'जुल्मी'।

प्र०—देशके शासनके सम्बन्धमें despotic का क्या अर्थ होगा? जो अर्थ Tyrannical का होगा क्या वही इसका भी होगा ?

उ०—Despotic और Tyrannical का सूक्ष्म भेद नहीं जानता। लेकिन मेरी रायमें 'Despotic (स्वेच्छाचारी) राजा' और Tyrannical (जालिम) राजामें कोई भेद नहीं है।

प्र०—अच्छा A despotic rule need not be tyrannical इसका क्या अनुवाद होगा ?

उ०—'यह आवश्यक नहीं है कि जुल्मी राज्य पद्धति जुल्म करने वाली हो',

प्र०—Tyranny is the perversion of Monarchy इसका क्या अनुवाद करते हो ?

उ०—जुल्मी राज्य पद्धति, या सुधा पद्धति, उलट पलट है।

प्र०—अच्छा Autocratic और Absolute का क्या अर्थ है।

उ०—अनियंत्रित।

प्र०—और Arbitrary का अर्थ?

उ०—स्वाधीन, बे कैद।

प्र०—Uncontroled?

उ०—अनियंत्रित।

प्र०—Irresponsible?

उ०—बे जवाबदार।

प्र०—और Imperialistic?

उ०—बादशाही।

प्र०—Government of India is despotism tempered by public opinion in England इसका क्या अर्थ है?

उ०—हिन्दुस्तान सरकारका राज्य विलायत वालोंके लोकमतसे नर्म या हुआ जुल्मी राज्य है।

प्र०—मराठी "मायाफिरू" भिनूली, (उन्मत्त) और 'आततायी' की मेंबी क्या हो सकती है?

उ०—'माया फिरू'का अनुवाद Fanatic या Gazi (गाज़ी) होगा आततायी अर्थात Violent, Furious. आततायी किन लोगों को कह सकते हैं यह मैं नहीं कह सकता। आपटे के समान कोषमें ६ प्रकार के आततायी लिखे हैं।

प्र०—आततायी माया फिरुसे कड़ा शब्द है।

उ०—मराठी में साधारणतः 'मायाफिरू' अधिक कड़ा शब्द माना जाता है। आततायी संस्कृत शब्द है, बहुत कम लोग इसके असली अर्थ समझते हैं (मराराम)

मनुके एक श्लोक में ६ प्रकार के आततायी बतलाये गये हैं । मनुस्मृतिमें कहा है —

गुरुं वा बालवृद्धौ वा ब्राह्मणं वा बहुश्रुतम् ।
आततायिनमायान्तं हन्यादेवाविचारयन् ।

इस श्लोकका लोग साधारणतः प्रयोग किया करते हैं कि, नहीं यह मुझे मालूम नहीं । आततायी और मायाफिरमें कौन शब्द अधिक कड़ा है यह मैं नहीं जानता । मेरे हिसाब से दोनों बराबर हैं ।

प्र०—अंग्रेजीके Felon शब्दका 'आततायी' और Fanatic का 'मायाफिर' ऐसा अर्थ हो सकता है कि नहीं ?

उ०—Felon का अर्थ आततायी हो सकता है । लेकिन बात यह है कि राजकीय पक्ष या उसके संबंधी प्रसंग में अनेक शब्द मराठी में नये गढ़ने पड़े हैं । इन शब्दों की जगह संस्कृत शब्द उपयोग करने की रीत है ।

प्र०—State, Government, Administration, Rule Sway. इन शब्दोंके अर्थोंमें भेद दिखाने के लिये मराठी में कौन शब्द हैं ?

उ०—State अर्थात् राज्य या सरकार । Government—सरकार या राज्य पद्धती । Administration राज्य पद्धति, इसका अर्थ 'सरकार' नहीं हो सकता । Rule राज्य Sway—अमलदारी ।

अगले प्रश्नके उत्तरमें कहा—Manliness का अर्थ है पौरुष, मर्दानगी Vigour—सामर्थ्य । Sense of honor—अभिमान बुद्धि ।

प्र०—क्या Sense of honor का अर्थ 'तेज' नहीं हो सकता ?

उ० मराठीमें ऐसा अर्थ हो सकता है की नहीं यह मैंने कभी नहीं सुना ।

प्र०—क्या 'तेजस्वी' हो सकता है ?

उ०—कह नहीं सकता । लेकिन मेरी रायमें 'तेजस्वी' की अंग्रेजी Spirited अच्छी होगी ।

उ०—क्रोध—उत्कटकी आरती है Indignation, रोष अर्थात् Passionate anger में और मन्युमें भी कोपोंसे c सहायता होती है। मोत्सर्य अर्थात्, आपेसे बाहर कभी कभी मानियरीवविमाका कोप भी देखता हूं। तीनोंमें जो अच्छा शब्द मालूम होता है वही व्यवहारमें लाता हूं। यह मैं मानता हूं कि नये विचार प्रकट करनेके लिये भाषामें नये शब्द गढ़े गये हैं लेकिन मैं उन्हें व्यवहार नहीं कर सकता। उसमें जो शब्द कोषमें मिलेगा उसीका व्यवहार कर सकता हूं।

प्र०—Evil Genius का अर्थ क्या है ?

उ०—दुष्ट बुद्धि। Haunting a man का अर्थ है किसी आदमीके पीछे भूतकी तरह लगा रहना।

प्र०—साक्रेटिसके पीछे भूत लगा था इसका अनुवाद क्या करोगे ?

उ०—A fiend pursued Socretes लेकिन Evil Genius haunted Socretes यों अनुवाद करनेमें भी हरज नहीं है।

Evil Genius of repression seizes the Govt of India every 5 or 10 years इस अनुवादमें 'माथे सवार होनेका' का अर्थ बहुत ठीक मतलब नहीं हो सकता है Seizes का मानी है 'पकड़ना, पकड़ना,' 'माथे सवार होना' नहीं है माथेमें सवार होना की बराबर take possession of है। माशिक अजगर क्योंकि इसमें 'माशिक' शब्दसे छोटे मोटे सरकारको ध्वनि निकलती है, किन्तु यदि किसी व्यक्तिकी ओर इशारा न हो तो इसका साधारण अनुवाद a Versedin charms' Reciter of Vedic Mantras भी ठीक है। 'भ्रष्ट मंत्र' का अर्थ है fallen from his vow ?

प्र०—पिशाचोंका यहां वहां जोर हो रहा है, इसका अनुवाद क्या होगा ?

उ०—Fiends are swarming everywhere 'दुर्विमष' अर्थात् aberration of intellect Error of Judgment

अनुवाद काम नहीं चल सकता कल बतावेगा। इस पर इस ढंगका अनुवाद चल नहीं

इसके बाद अदालत उठ गई मुकदमा दूसरे दिन पर टल गया।

मंगलवार ता० १४ जुलाई सन् १९०८

द्वितीय दिवस

समय ११॥ बजे जस्टिस दावर, और स्पेशल जूरीके सामने फिर मुकदमा पेश हुआ। आज बाहर बहुत भीड़भाड़ न थी जो कुछ थी वह अदालतमें, और वह भी कम न थी वकील बैरिस्टरोंकी भी खासी भीड़थी। श्रीयुक्त तिलकको सिर्फ सलाह देनेके लिये आठ वकील मौजूद थे। यह लोग जिरहमें सरकारी अनुवादकके मराठी या अंग्रेजी अनुवादपर कभी कभी खूब हँसते थे

केसरी प्रेसमें हरज

जजके बैठनेपर पहले श्रीयुक्त तिलकने कहा कि मेरे केसरी प्रेसके कई कम्पोजीटर सरकारी गवाह बनाकर बुलाये गये हैं। उनके बिना वहां कामका बड़ा हरज होरहा है अदालत उन्हें जाने की आज्ञा दे दे क्योंकि मैं स्पष्ट उन लेखोंके छापने और प्रकाशित करनेका जिम्मा लेता हूं। इससे उनकी गवाही लेना व्यर्थ है।

सरकारी बैरिस्टर मि० ब्रेन्सनने इसका प्रतिवाद किया, कहा अभियुक्तने मजिस्ट्रेटके सामने लेखोंकी जिम्मेदारीका कुछ जिक्र नहीं किया। इससे यह अभी यहां नहीं कह सकते।

जज साहबने कहा अभी इन प्रश्नोंके उत्तरका समय नहीं है, लेकिन मैं जानता हूं कि सरकारी बैरिस्टर कम्पोजिटरोंकी गवाही लेनेमें देर नहीं लगावेंगे उन्हें छुट्टी कर देंगे।

अनुवादककी जिरह।

इसके बाद नायबे सरकारी अनुवादककी जिरह फिर आरम्भ हुई।

श्री युक्त तिलक—'अधिकार बांटना' इसका अनुवाद decentralisation of power हो सक्ता है?

मि० जोशी—नहीं यह कभी नहीं हो सकता Apportion of power अलबत्ता हो सकता है।

श्री युक्त तिलकने मुकदमेसे अलग एक लेखका हवाला दिया इसपर बैरिस्टर ब्रेन्सन ने उज्र किया कहा, यदि अभियुक्त उन्हें देखेगा तो वह लेखभी शामिल मिसल हो जायगा किन्तु जजने उनका उज्र न माना और श्री० तिलकको लेख देखने दिया।

आगे तिलक महाशयने प्रश्न किया—१२ मईके लेखमें 'तिटकारा और द्वेष' का क्या अनुवाद किया है?

मि० जोशी—द्वेष hatred या enmity 'तिटकारा' के भी यही अर्थ हैं। पहला संस्कृत शब्द है दूसरा मराठी।

प्र०—क्या मराठी भाषामें disgust का अर्थ 'तिटकारा' नहीं है?

उ०—मैं कह नहीं सकता।

प्र०—इस शब्दके लिये क्या कोष नहीं देखा?

उ०—मुझे याद नहीं।

मौखिक तिलक—अच्छा अब कोष देखकर बताओ।

मि० जोशी (कोष देखकर) हां यह है " तिरस्कार disgust disdain इत्यादि।

प्र०—अच्छा, आगे उसी लेखमें Obstinacy और perversity के क्या माने?

उ०—Obstinacy हठ perversity दुराग्रह।

प्र०—'दुराग्रह' का अनुवाद Stubborn भी हो सकता है?

उ०—Stubbornness से थोड़ा बहुत, उसका अर्थ निकलता ही सही, किन्तु यह 'दुराग्रह' का अनुवाद नहीं कहा जा सकता।

प्र०—Owing to obstinacy and Stubbornness इसके लिये लेखमें क्या शब्द है?

उ०—हठसे किंवा दुराग्रहसे। सरकारी अनुवादकने यही अनुवाद किया है।

प्र०—dispensation of God इसका क्या अर्थ है?

उ०—ईश्वरीय नेमानेम' । नेम के ... nation को नेम और नेमा नेम एक ...

प्र० the ways of God are ...

... अच्छा न होगा ...

उ०—अधिक नहीं, लेकिन पहलेके बराबरही होगा।

प्र०—As you sow, so you reap इसका क्या अर्थ है ?

उ०—जैसा बोवे वैसा उगता है।

प्र०—उगनाकी अंगरेजी ?

उ०—Germinate.

प्र०—मराठी और संस्कृतकी यह लोकोक्ति जानते हो—न—यथा बीजम् तथांकुर—इसका अनुवाद करो।

उ०—As the seed, so is the sprout

प्र०—'सिरजोरपना' इसकी क्या अंगरेजी है ?

Recklessness

प्र०—'वह-स्त्री बडी सिरजोर होगई है' इसका क्या अनुवाद करोगे ?

उ०—That woman has become turbulent.

प्र०— Reckless नही है ?

उ०—नहीं उस अर्थमें नहीं।

प्र०—'अधिकारी सिरजोर होगये हैं, क्या अनुवाद करोगे ?

उ०—The Officials hals have become reckless

और कई शर्तों पर मदद होने के बाद अदालत जलपान के लिये उठाई।

फिर इजलास लगनेके बाद मि० जोशी की जिरह शुरू हुई। कल्की पेशी में उन्होंने एक अंग्रेजी वाक्यका मराठी अनुवादके आम बतानेको कहा था, इससे तिलक महोदयने पूछा—Error of Judgment के लिये मराठीमें कोई शब्द बता सकते हो ?

उ०—मैंने ' विवेकविभ्रम ' यह एक आपही गढ़ लिया है, नहीं तो मराठीमें इसके लिये कोई शब्द है नहीं।

और आगे पूछा गया कि क्या मराठी अखबारोंके कई दल हैं। इसका उत्तर देनेमें मि० जोशी आगा पीछा सोचने लगे। किन्तु जज साहबने कहा कि इसका उत्तर देना होगा। अन्तमें मि० जोशी ने कहा कि हां। मराठी अखबारोंके कई दल हैं। लेकिन अन्तमें आपने यह भी बता दिया कि यह मैं आपसे निजके तौरपर कहता हूं। इसपर खूब हँसी हुई।

जज—क्या सरकारी तौरसे कहते हो कुछ और कहते ?

मि० जोशी—नहीं।

इसके बाद तिलक महोदयने कहा कि अब मैं मि० जोशीसे जिरह नहीं करना चाहता।

तब सरकारी बैरिस्टर खड़े हुए और मि० जोशीसे पूछा—क्या इन लेखोंको साधारण आदमी नहीं पढ़ते ? मि० जोशीने कहा—पढ़ते हैं। इस पर तिलक महोदयने आपत्तिकी कहा मेरी जिरहसे ऐसा

भ नहीं उठता। लेकिन जज साहबने कहा कि नहीं मेरी रायमें उठता है।

श्री० तिलक—यह अपनी अपनी राय है।

मि० ब्रैन्सन—हिम ऑनरेबिल राय दे चुके हैं।

फिर प्रवृत्त, वध और दुराग्रह पर बहस हुई। मि० जोशीने कहा कि इस लेखमें 'वध' का अनुवाद Assassination ही ठीक होगा। आपने कहा कि 'केसरी' गर्म दलका अखबार है। अभियुक्तही उसके एडिटर और मालिक हैं। यह एक नामी अखबार है।

इसपर श्रीयुक्त तिलकने कहा कि इसके लिये कोई सबूत नहीं चाहिये मैं तो स्वयं कहरहा हूं कि " केसरी " का मालिक एडिटर प्रिंटर और प्रकाशक हूं।

जज साहबने यहबात लिखली इसके बाद मि० जोशी की गवाही खतम होगई। तिलक महोदयने अदालतका ध्यान " बम्बई गजट " की एक टिप्पणी की ओर आकर्षित किया जिसमें कहा गया है कि तिलक महोदय मि० जोशीसे अनुचित रीति से जिरह करते हैं जज साहबने उसी दम " बम्बई गजट " के प्रतिनिधि को बुलाया, लेकिन वह मौजूद नहीं था। जज साहबने उक्त अखबारको एक चेता-वनी भेजी है। इसके बाद

नारायण जगन्नाथ दावार

पेश हुआ। उसने कहा—मैं कस्टम आफिसमें क्लर्क हूँ। ६ मै-ज़ुलाई तक 'केसरी' का बम्बईका एजेंट था। दस वर्षसे एजेन्सी करता हूँ। बीचमें कभी कभी छोड़ दी थी। जूनमें २२००० कापी मँगाता था और मईमें २०००। बम्बईमें १२५० ग्राहक हैं। बम्बईके ग्राहक और बाजारमें बेचनेवाले मुझीसे अखबार लेते थे। ९ जून और १२ मईके अंक भी मिले थे।

इसके बाद तुकाराम गवाह बुलाया गया लेकिन वह हाजिर नहीं था। एक और गवाह बुलाया गया लेकिन वह भी मौजूद नहीं था। तब

पुलिसइन्सपेक्टर मुलीवान

पेश हुए। उन्होंने कहा—मैं पन्द्रह वर्षसे नौकर हूँ। मुझे मि० तिलकके पूनावाले घर और 'केसरी' प्रेसकी तलाशीके वारण्ट मिले थे। मैं पूना गया और वहाँ 'प्रेस' दफ्तर और घरकी तलाशी ली। पूनाके पुलिस सुपरिन्टेण्डण्ट भी साथ थे। मैंने पंचोंके सामने स्वयं तलाशी ली। (गवाहको एक कार्ड दिखाया गया) हाँ यह कार्ड मुझे तलाशीमें अभियुक्त तिलककी मेजमेंसे मिला था। मैंने अपने साथियोंको भी यह कार्ड दिखाया। मि० केलकरने भी देखा और उसपर दस्तखत कर दिये।

तिलक महोदयने कहा कि मि० केलकर यहाँ मौजूद हैं उनसे पूछ

लिया जाय । सरकारी बैरिस्टरने कहा मैं यह कार्ड अभियुक्तके विरुद्ध सबूतमें दाखिल करता हूँ । साथही एक विलायती मुकदमेका हवाला दिया जिसमें एक आदमीपर खूनका अभियोग चला था और जो कागज उसके घरसे बरामद हुए उसके खिलाफ सबूतमें पेश किये गये थे । बैरिस्टरने कहा कि वह खूनका मामला था लेकिन सौभाग्यवश यह उतना भयंकर नहीं है (अदालतमें हँसी)

जज—आओ मैं कार्ड देखूं । जूरीको अभी न सुनाना ।

बैरिस्टर—लेकिन मुझे यह मालूम हो जाना चाहिये कि कार्ड दाखिल किया जायगा कि नहीं।

श्री० तिलक—मैं नहीं समझता कि उसका इस मामलेसे क्या सम्बन्ध है । मैं यह नहीं कहता कि यह मेरा नहीं है लेकिन तलाशी मेरे पीछे हुई थी ।

जज—कार्ड तलाशीमें मिला था इससे मुझे उसे दाखिल करनाही पड़ेगा ।

तब सरकारी बैरिस्टरने वह कार्ड पढ़कर सुनाया उसमें केवल भकसे उड़ने वाले मसालों संबंधी २ पुस्तकोंके नाम modern explosives और Hand book on modern explosives लिखे थे । और दो पुस्तकोंका दाम भी लिखा था ।

जिरह

अब तिलक महोदयने इन्सपेक्टर सुलेमान से जिरह आरम्भकी। इन्सपेक्टरने कहा पूना से मैं सब कागज बम्बई लेआया था। केसरी प्रेस, दफ्तर और तिलक महोदय का घर एकही अहातेमें है। कार्ड मेज पर नहीं था। बल्कि अन्दर कागजों में था। कितने कागज वहां से लाया यह याद नहीं।

तिलक महोदय ने अदालतसे कहा, कि आप वह सब कागज मँगालें। मै उन्हें देखना चाहता हूं। कागज अदालतमें मोजूद नहीं थे इससे मुकदमा उस दिन मुल्तवी होगया।

इससे पहले तिलक महोदयने अदालतसे प्रार्थनाकी कि मुझे हाईकोर्टके पुस्तकालयमें कुछ कानूनी पुस्तकें देखनेकी आज्ञा दी जावे। जजने कहा यह तो नहीं होसकता, लेकिन अपने सलाहकार वकीलोंकी मार्फत जो पुस्तक चाहो मिल सकती है।

बुधवार ता० १५ जुलाई सन् १९०८

तीसरी पेशी।

आज ११ बजे फिर मुकदमा शुरू हुआ। आज भी अदालतमें खूब भीड़ थी। कई यूरोपियन स्त्रियां भी आज यह ' तमाशा ' देखने आई थीं। वकील बैरिस्टरोंकी संख्या भी चढ़ी बढ़ी थी। जज और जूरीके बैठनेके बाद फिर इन्सपेक्टर सुलेमानकी जिरह होने लगी।

आरम्भमें ही तिलक महोदयने पूछा कि कल जो कागज मैंने मांगे थे, क्या वे अदालतमें लाये गये हैं ?

सरकारी बैरिस्टरने कहा हां सब मौजूद हैं।

जज—तुम चाहो तो देख सकते हो। कागज देख भाल कर तिलक महोदयने कहा कि इसमें सब नहीं हैं एक लिफाफा जिसमें कागज, तलाश बताया गया था वह भी नहीं है जब साहबने सरकारी बैरिस्टरसे इसका कारण पूछा तो, उन्होंने कहा, कि और सब कागज प्रेसीडेन्सी मजिस्ट्रेटकी अदालतमें हैं। जज साहबने कहा कि ऐसा नहीं होना चाहिये, मजिस्ट्रेटके यहासे सब कागज आने चाहिये। उसी दम एक क्लर्क पुलिसकोर्टसे सब कागज लानेको भेजा गया। इधर तिलक महोदयने इन्सपेक्टरसे जिरह शुरू की। उन्होंने कहा 'मजिस्ट्रेटके वारट पर मि० तिलकके घरकी तलाशी ली गई थी'। वारट में केवल निवास स्थान लिखा था। मैंने सिंहगढ और पूना दोनों जगहके घरोंकी तलाशी ली थी'। सिंहगढमें दो अल्मारियां तोड़कर तलाशी ली थी लेकिन कुछ मिला नहीं।

तिलक महोदयने अदालतसे कहा कि मुझे वह वारंट भी मँगवा दीजिये मैं इन्सपेक्टरसे जिरह करूंगा। जज साहबने उसके लिये भी पुलिस कोर्टमें आदमी दौड़ाया फिर मि० सुब्रेयानसे जिरह हुई।

इसके बाद कोई ३॥। बजे तिलक महोदयने जूरीके सामने अपनी बहस आरम्भ की। बहस क्या की मानो सिडीशनके कानूनकी बड़ी सारगर्भित टीका कर दी। जबतक आपकी जबान चलती रही जज, जूरी, वकील, बैरिस्टर तथा दर्शक सब एकटक आपहीकी ओर देखते थे।

अभियुक्त तिलकका भाषण

३॥। बजे आप बहसके लिये खड़े हुए। आपने कहा—"जूरीके सज्जन गण! फरियादी सरकारके बैरिस्टर, एडवोकेट जनरलकी भांति मुझमें वक्तृत्व शक्ति नहीं है। सरकारी बैरिस्टरने बड़ी योग्यतासे यह मुकदमा जज और जूरीके सामने पेश किया है। अपनी वकालत आप करनेवाले अभियुक्तको जूरी जिस उदार दृष्टिसे देखती है मुझे विश्वास है कि मैं भी उससे वञ्चित न किया जाऊँगा। मुझपर जो अभियोग लगाया गया है वह बिल्कुल बेइमानी है, उसका कुछ अर्थही मेरी समझमें नहीं आया क्या आपलोगोंकी समझमें आया? कुछ लेखोंपरही मुकदमा चलाया गया है, यह नहीं बताया कि लेखमें कौनसी बात सिडीशनकी है, यह विचित्र तरीका है। लेख सिडीशनी नहीं है यह साबित करनेका बोझ भी मेरेही ऊपर रखा गया है। अब मैं लेखके शब्द शब्दका जवाब, दु तैव कहीं जवाब दिया जा सकता है। सरकारी बैरिस्टरने मुकदमा

पेश करते हुए भी यह नहीं बताया कि, लेखमें किस किस बातका जवाब देना पडेगा। मैं वकील हूं लेकिन मुद्दतसे वकालत छोड रखी है, इससे मैं अच्छी तरह बहस नहीं कर सकता मेरी इस कमजोरीका ख्याल रखकर आशा है कि जूरी ध्यानसे सुनेगी। अच्छा अब ख्याल कीजिये कि मुकदमा क्या है। यह, कि मैंने 'केसरी' में कुछ लेख छापे। वही लेख आप लोगोंको पढ़के सुनाये गये और यह भी कहा गया कि बस, आप लोग उनका अर्थ वैसाही समझ लीजिये और मुझे दोषी मानकर दण्ड दिलवा दीजिये। सिडीशनमें, तीन बातें देखी जाती हैं—लेख छापकर प्रकाश करना, लेखमें बुरे इशारों और तानोंसे काम लेना, और सबसे बढ़कर यह कि द्रोहपूर्ण विचार या नीयत रखना। छापकर प्रकाश करनेकी जिम्मेदारी तो मैंने लेही ली इशारे और ताने तथा विचारकी बात आगे कहूंगा। इशारों और तानोंके विषयमें जरा यह बात ध्यानमें रखिये कि, वह मेरे मराठीके शब्दोंसे जूरीको नहीं समझाये गये बल्कि उस तर्जुमेसे जो सरकारी अनुवादकने किया है यदि बहुत मुलायमियतसे कहूं तो यह कहता हूं कि यह तर्जुमा कदापि इस योग्य नहीं है कि जूरी उसके भरोसे मेरे दोषी होनेपर विचार कर सके। नीयतके विषयमें यह ख्याल रखिये कि फरियादी पक्षने उसे प्रमाणित करनेके लिये कोई सुबूत नहीं पेश किया। केवल एक पोस्टकार्ड दाखिल

किया है जो मेरे पीठ पीछे तलाशी लेकर मेरे घरसे बरामद किया था। फौजदारी पक्षका सहारा केवल मुकदमेवाले लेखों तथा तार और टेलीग्राम है जो नीयत साबित करनेके लिये पेश किये गये हैं। नीयत साबित करना उतना सहज नहीं है जितना कि दिखाया गया है। ऐसे मुकदमेमें नीयत साबित करनेका प्रश्नही मुख्य और परमावश्यक है शब्दों का असली अर्थ छिपाकर गलत तर्जुमा जूरीके सामने पेश कियाहै। जिस भाषाको जूरी जानतीही नहीं, उसमें क्या बात किस नीयतसे लिखी गई है यह आप कैसे बता सकते हैं और लेखपर कैसे विचार कर सकते हैं? एक उदाहरण लीजिये। इंगलेण्डमें यदि कोई लेख फ्रेंच भाषामें लिखा जाय और जूरीसे कहें कि इसपर यह विचार कीजिये कि फ्रेंच लेखके अंगरेजी तर्जुमेका फ्रेंच प्रजापर फ्रान्समें क्या प्रभाव पड़ेगा, ऐसी दशामें आप क्या विचार कर सकते हैं? सरकारी अनुवादकने कैसी दिक्कत पैदा करदी है इसका जिक्र मैं आगे करूंगा।

लेख मराठीमें लिखा गया है आपको यह विचारना चाहिये कि मेरे पकडे जानेसे पहले 'केसरी' के मराठे पाठकों पर उनका क्या प्रभाव पड़ सकता था। आपको यह विचार नहीं करना है कि लेखोंका असर मुझपर, आप पर, या बंगालवालों पर क्या पड़ेगा। आपको विचारना यह है कि केवल 'केसरी' के पाठकों पर उनका क्या प्रभाव

[illegible]

पढ़ेगा, और विचारना भी बहुत ध्यानसे होगा, क्योंकि यह बताया गया है कि लेखमें शब्दोंके खास अर्थ हैं। लेखके सिवा और कोई सबूत आपके सामने नहीं है। सबके सब लेखही पेश किये गये हैं। मेरी रायमें यह अनुचित तरीका है। किसी मनुष्यने जो शब्द कहे या जो काम किया उन शब्दों और कामोंके जो अर्थ हो सकते हैं वैसीही नीयत उस मनुष्यकी भी है ऐसा विचार करना ठीक नहीं है, यह भूल है। ऐसेही प्रश्नपर इङ्गलेण्डमें २०० वर्ष पहले जूरियोंको विचार करना पड़ा था। अब यह विचार दूर होता जाता है। ऐसा विचार करना अब भूल है। अङ्गरेजी जूरी केवल लेख पढ़के कोई नतीजा नहीं निकालती, बल्कि आस पासकी दशाका भी ख्याल रखती है। कैसी दशामें लेख लिखा गया, कब लिखा गया यह भी विचार करना होता है। किस दशामें लेख लिखा गया यह दिखानेको मैंने कई कागजात दाखिल किये हैं। आसपासकी अवस्थापर विचार करना इङ्गलेण्डमें मुख्य समझा जाता है, और इसीसे अखबारोंकी रक्षा होती है आपको यह याद रखना चाहिये कि जूरी केवल शब्दोंसे अर्थ नहीं लगाती। चाहे इङ्गलेण्ड और भारतमें सिडीशनका कानून एक हो लेकिन इङ्गलेण्डमें जूरी बहुत विस्तृत अधिकार रखती है। जजके विरुद्ध वह अनेक बार फैसला कर देती है। क्या भारतमें जूरीके वैसे अधिकार नहीं हैं? आपको अपने अधि-

[illegible]

होनी चाहिये । केवल लेख प्रकाश करके अपराध करनेका प्रयत्न सिद्ध नहीं होता । (देखो Justice Stephen's Criminal Law of England Vol II,-pp 231

केवल प्रकाश करनेसे अपराध करनेका हेतु कैसे सिद्ध हो सकता है? जो लेख मैंने प्रकाश किया है वही लेख सारिने-दारने भी आपको पढकर सुनाया है, यह भी प्रकाश करना कहा जा सकता है ।। ऐसी सूरतमें उसपर मुकदमा क्यों न चलाया जाय ।। मेरे मुकदमेका हाल लिखते हुए अन्य अखबारोंने भी उसी लेखको प्रकाश किया है । उनपर क्यों मुकदमा न चलाया जाय ? नहीं चलानेका कारण यह है कि उन लोगोंकी नीयत अपराध करनेकी नहीं है । फोनोग्राफमें भाषण भरनेसे जैसे अपराध नहीं होता इसी लिये जब तक यह साबित न हो कि लेख विरोधकी नीयतसे, लिखा गया है तबतक वह अपराधी नहीं ठहर सकता । ऐसे मुकदमेमें यह एक सबूत है सही कि लेख प्रकाशित किये गये थे किन्तु यह सबूत केवल उसमें एक आना मात्र है । मुख्य सबूत लेखककी नीयत है यही देखना चाहिये । पासमें एक तोला अफीम बरामद होने या तालाबमें गिर पडनेसे यह सिद्ध नहीं होता कि अफीम रखनेवाले या जलमें गिरनेवालेकी नीयत आत्म हत्या करनेकी थी । पहला अफीम खानेवाला हो सकता है दूसरा केवल तैरनेके लिये जलमें कूदा होगा । आरोपीकी नीयत सिद्ध करने की

[illegible]

जिम्मेदारी फरियादी पर है । यह? जिम्मेदारी आरोपीके सिर पटकना अनुचित है), जब तक पूरा सबूत न दिया जाय, आरोपीको निर्दोष समझना चाहिये । नीयत सिद्ध करनेके लिये फरियादी सरकारकी तरफ से इस मुकदमेमें कोई सुबूत नहीं पेश किया गया । आपके सामने मेरे लेख पटक दिये, बस इतनेहीको सरकारी

बैरिस्टर नीयतको सबूत समझते हैं । इसी सबूतपर आपसे कहा गया कि मुझे दोषी मान लीजिये ।

आगे कहा—पेनल कोडकी किसी किसी धाराके साथ Exceptions होते हैं । सरकारी बैरिस्टरने जिस ढङ्गसे और जिस प्रकारका सुबूत मेरे विरुद्ध पेश किया है उससे मेरा अभियोग उन Exceptions या अपवादोंमें बहुत कुछ पड़ता है । इसने अपने आपको निर्दोष साबित करनेका बोझ मुझीपर पड़ता है । १२४ अ में अपवाद नहीं है बल्कि अलग खुलासा किया गया है । इस खुलासेसे मेरा लेख सम्बन्ध रखता है कि नहीं यह साबित करनेका जिम्मा मेरा नहीं है । यह खुलासा उस धाराका स्पष्टीकरण मात्र है । यह काम सरकारी बैरिस्टरका है कि वह साबित करें कि मेरे लेख १२४ अ धारामें आते हैं इसके सिवा यह भी उन्हींके हाथमें है कि मुझे उस खुलासेका लाभ उठाने दें या न उठाने दें । किन्तु यह साबित करना भी उन्हीं-का काम है कि मुझे उस खुलासेका फायदा नहीं मिल सकता । आम-

कह कहा जाता है कि आरोपीको यह दिखाना चाहिये कि खुलासेका लाभ वह पा सकता है। खुलासेके अनुसार अखबारवालोंको एक हदतक सरकारी कामोंकी टीका करनेका अधिकार दिया गया है। यह सीमा उल्लंघन नहीं की, यह साबित करना भी आरोपीहीके सिर पटका जाता है। लेकिन मजा यह कि इसका सबूत देनेके बाद आरोपीका अन्तमें जवाब देनेका अधिकार माना जाता है। अवश्य मुझसे कह चुकी है कि मि० मेन्सन सरकारी बेरिस्टरकी बहसके बाद मैं उत्तर न दे सकूँगा। सरकारी बेरिस्टर कहते हैं कि मैंने अखबार और कागज पत्र सबूतमें दाखिल किये हैं वह यदि कोई नई बात पैदा करनेके लिये नहीं है तो उनका दाखिल करना अनुचित है। मेरी रायमें यह विचार गलत है। मैंने सीमा उल्लंघनकी, इसका खूब स्पष्ट और पूरा पूरा सबूत फरियादीको देना जरूरी है। यह खुलासा जो १२४ अ के साथ लगाया गया है वास्तवमें अखबारोंकी रक्षाके लिये लगाया गया था। वास्तवमें जूरीहीका यह कर्तव्य है कि वह अपने सामनेके सबूतके अनुसार यह स्थिर करे कि किस नियतसे लेख लिखे गये थे। नियत मालूम करना जूरीही का काम है मैंने खुलासेका उल्लंघन किया या नहीं इसका सबूत जूरीके सामने पेश होना चाहिये। नहीं तो जूरी कुछ स्थिर नहीं कर सकती। यह मुझे कबूल है कि नीयत अनुमान होने हो सकती है। यह अनुमान लेख पढ़के बहुत कम हो सकता

है, पूरा अनुमान तभी होसकता है जब आस पासकी सब बातोंका लक्ष्य किया जाय। केवल राजद्रोही शब्दोंसे नीयतका अनुमान नहीं हो सकता। यदि ऐसा हो तो सबसे पहले कोश संग्रह करने वालोंको जेल भेजना चाहिये क्यों कि उन्होंने अपने कोशोंमें सभी राजद्रोह सूचक शब्द लिखे हैं। यदि आपकी राय हो कि लेखहीसे लेखककी नीयतका अनुमान हो सकता और लेखही उसकी नीयत का सावूत है तो बस, कोई लेखक भी इंडियन पेनलकोडके दण्डसे नहीं बच सकता। एर्स्किन साहबकी Speeches on Sedition नामक पुस्तकमें यह एक उदाहरण दिया है—राजधर्म शास्त्र लिखते वक्त लाक साहबने राजाकी तुलना पुलिस कान्स्टेबलोंसे की। इससे राजाकी हतक होती है। किन्तु इङ्गलैण्डमें यह गुनाह नहीं समझा गया। सरकारने जिसको दोषी कहा उसको जूरी भी दोषी कहे यह कानूनका मतलब नहीं है

१२४ अ में Existed शब्द है। राजद्रोह उत्पन्न करनेका मुझपर आरोप नहीं है बल्कि यह है कि मैने उत्पन्न करनेका प्रयत्न किया। जब पहलेहीसे प्रजामें राजद्रोह हो तो उसे प्रकट करनेसे मैं किसी प्रकार दोषी नहीं होसकता। मैने कोई नया राजद्रोह पैदा नहीं किया वरंच

यह कहा जाता है कि आरोपीको यह दिखाना चाहिये कि खुलासेका लाभ वह पा सकता है। खुलासेके अनुसार अखबारवालोंको एक हदतक सरकारी कामोंकी टीका करनेका अधिकार दिया गया है। यह सीमा उल्लंघन नहीं की, यह साबित करना भी आरोपीहीके सिर पटका जाता है। लेकिन् मजा यह कि इसका सबूत देनेके बाद आरोपीका अन्तमें जवाब देनेका अधिकार मारा जाता है। अदालत मुझसे कह चुकी है कि मि० अन्सन सरकारी बैरिस्टरकी बहसके बाद मैं उत्तर न दे सकूँगा। सरकारी बैरिस्टर कहते हैं कि मैंने अखबार और कागज पत्र सबूतमें दाखिल किये हैं यह यदि कोई नई बात पैदा करनेके लिये नहीं है तो उनका दाखिल करना अनुचित है। मेरी रायमें यह विचार गलत है। मैंने सीमा उल्लंघनकी, इसका खूब स्पष्ट और पूरा पूरा सबूत फरियादीको देना जरूरी है। यह खुलासा जो १२४ अ के साथ लगाया गया है वास्तवमें अखबारोंकी रक्षाके लिये लगाया गया था। वास्तवमें जूरीहीका यह कर्तव्य है कि वह अपने सामनेके सबूतके अनुसार यह स्थिर करे कि किस नियतसे लेख लिखे गये थे। नियत मालूम करना जूरीहीका काम है मैंने खुलासेका उल्लंघन किया या नहीं इसका सबूत जूरीके सामने पेश होना चाहिये। नहीं तो जूरी कुछ स्थिर नहीं कर सकती। यह मुझे कबूल है कि नीयत अनुमान हीसे हो सकती है। यह अनुमान लेख पढ़के बहुत कम हो सकता

है, पूरा अनुमान तभी होसकता है जब आस पासकी सब बातोंका लक्ष्य किया जाय। केवल राजद्रोही शब्दोंसे नीयतका अनुमान नहीं हो सकता। यदि ऐसा हो तो, सबसे पहले कोश संग्रह करने वालोंको जेल भेजना चाहिये क्यों कि उन्होंने अपने कोशोंमें सभी राजद्रोह सूचक शब्द लिखे हैं। यदि आपकी राय हो कि लेखहीसे लेखककी नीयतका अनुमान हो सकता और लेखही उसकी नीयत का सबूत है तो बस, कोई लेखक भी इण्डियन पेनलकोडके दण्डसे नहीं बच सकता। एर्स्किन साहबकी Speeches on Sedition नामक पुस्तकमें यह एक उदाहरण दिया है—राजधर्म शास्त्र लिखते वक्त ब्राक साहबने राजाकी तुलना पुलिस कान्स्टेबलोंसे की—। इससे राजाकी हतक होती है। किन्तु इङ्गलेण्डमें यह गुनाह नहीं समझा गया। सरकारने जिसको दोषी कहा उसको जूरी भी दोषी कहे यह कानूनका मतलब नहीं है

१२४ अ में Existed शब्द है। राजद्रोह उत्पन्न करनेका मुझपर आरोप नहीं है बल्कि यह है कि मैने उत्पन्न करनेका प्रयत्न किया। जब पहलेहीसे प्रजामें राजद्रोह हो तो उसे प्रकट करनेसे मैं किसी प्रकार दोषी नहीं होसकता। मैंने कोई नया राजद्रोह पैदा नहीं किया, वरंच

जो पहलेसे मौजूद था उसेही प्रगट किया है। मेरे लेखसे यदि यह मालूम हो कि मैंने कोई नया राजद्रोह पैदा किया है या पढ़नेवालोंको भड़काया है तब मैं दोषी होसकता हूँ। यदि किसीके विरुद्ध कुछ लिखा जाय तो यह जरूर है कि वह नाराज हो। सरकारी कामोंसे जो नाराजी पहलेसे फैल रही है जब वह हद दरजेतक पहुँच गईतभी वह लेख द्वारा सरकारपर जाहिर की गई। अब यदि यह कहा जाय कि मैंने लेख लिखकर पहलेसे मौजूद राजद्रोहको उत्तेजित किया तो यह भूल है मैं उसका किसी प्रकार दायी नहीं कहा जा सकता। यों लेखों द्वारा सब बातें जाहिर न की जायँ तो राज्य प्रकृतिका सुधार कैसे हो सकता है। राजद्रोहकी व्याख्या न इंगलैण्डमें और न यहाँ स्पष्ट शब्दोंमें की गई है, यह बेशक कहा जाता है कि १२४ अ धारा स्पष्ट है सही, परन्तु उससे अखबार वालोंकी स्वतन्त्रतामें किसी प्रकारकी बाधा नहीं पड़ती। यह बात उस धाराके खुलासेहीके तौर पर कही जाती है क्योंकि खुलासेमें सरकारी कामोंकी टीका करनेकी परवानगी दीगई है, लेकिन यह परवानगी वहींतक है कि जहाँतक सरकारके साथ पाठकोंकी प्रीतिमें फरक न पड़े। किन्तु मुश्किल यह है कि सरकारी कामोंके विरुद्ध लिखनेसे नापसन्दी पैदा हुए बिना नहीं रह

सकती सरकारके विरुद्ध जो कुछ लिखा जायगा उससे अवश्य ऐसा ख्याल पैदा होगा। इस लिये धाराका खुलासा होनेपर भी वह निरर्थक बनी रही। किन्तु मेरी रायमें यह खुलासा निरर्थक नहीं है इसके द्वारा समाचार पत्रोंकी स्वतन्त्रता देनेका मतलब रखा गया है। किसी हदतक अगर नापसन्दी उत्पन्न होजाय तो भी कुछ हरज नहीं इस खुलासेका यही उद्देश्य है इस खुलासेमें हद क्या मुकर्रर कीगई है इसके विषयमें एसेकिन जज कहते हैं कि लेखकही उस हदको बता सकता है। उनका कहना है कि लेखक समझमेंसे चुनी हुई जूरीही यह बता सकतीहै कि लेखक ने हद उल्लंघन की या नहीं। आप जूरीमेंसे जिस लेखको १२ आदमी कहदें कि यह लेख हदसे निकालकर लिखा गया है तो वही लेख विद्रोहपूर्ण माना जायगा' राजद्रोहकी यह साधारण व्याख्या है। इसीके कारण इङ्गलेण्डमें अखबारोंकी रक्षा होती है। सरकारके कर्मोंमें सरकारकी पालिसीका भी समावेश होता है। सरकारी पालिसीपर कोई टीका करना हतक नहीं है। १२४ अ में "गवर्नमेण्ट स्टेब्लिश्ड बाई ला" अर्थात् कानूनसे स्थापित की हुई सरकार। पेनलकोडमें केवल 'सरकार' शब्द दिया है किन्तु उसमें सरकारी अधिकारियोंका भी समावेश होता है। उसका अर्थ यह नहीं होसकता यहां, सरकारका अर्थ वह सत्ता है जो अधिकारी वर्गसे पृथक है। वर्तमान कर्मचारी या

तो बदले जा सकते हैं या मर भी सकते हैं लेकिन बृटिश सरकारकी यह दशा नहीं हो सकती इसीसे यह कर्मचारी दल अलग प्रजा कही जाती है। सरकारी नौकर यह समझ सकते हैं कि हमी सरकार हैं ऐसा सोचना स्वाभाविक बात है। लेकिन यह स्पष्ट है कि अधिकारी वर्ग १२४ अ में कही हुई सरकार नहीं है। उनके कामोंकी टीका भी इस धारामें नहीं पड सकती, अपनी हार्दिक आकांक्षाओं पर बहस करना भी इस धारामें नहीं आसकता। यदि ऐसी बात होती तो आज किसी देशकी उन्नति न हो सकती। अपने मनको प्रकाश करनेका स्वातन्त्र्य हरेकको होना चाहिये। इसी स्वातन्त्र्यताके कारणही संसारकी उन्नति दिनपर दिन हो रही है। 'भाला' के मामलेमें जस्टिस बाटीनें ऐसीही विवेचना की थी। यदि ऐसा न होता तो संसारके समस्त तत्ववेत्ता जेलखाने चले जाते। मोर्ले साहबने भी इसी सत्यको प्रगट किया है मराठे पाठकोंपर इस लेखका क्या असर होगा यह देखना चाहिये। लेकिन यह देखनेके लिये फरियादी पक्षने आपके सामने कोई मसाला नहीं पेश किया।

अब जरा १५३ अ धाराकी ओर दृष्टि कीजिये भारतमें कई प्रकारकी जातियां बसती हैं, कई प्रकारके समाज मौजूद हैं अभीतक एक राष्ट्र नहीं बना। ऐसी दशामें लेखका अमुक अलग जाति पर क्या असर पडेगा यह जूरियोंको बिना सबूत कैसे मालूम हो सकता है। १५३ अ

के खुलासेमें Malicious intention अर्थात द्वेषमूलक विचार—शब्द रखा गया है। द्वेषमूलक विचार या नीयत केवल अनुमानसेंनहीं साबित होसकती उसके लिये स्पष्ट और पूरा पूरा सबूत चाहिये। जबतक वैसा सबूत आपके सामने न पेश किया जाय आपको यही कहना उचित है कि बिना सबूत हम नीयतके द्वेषपूर्ण होनेका निर्णय नहीं कर सकते। समयकी दशा और लेखको मिलाकर नीयतका निर्णय होसकता है मेरेलेख और मेरे मत आपको या सरकारको चाहे पसन्द न हों पर यहां अदालतमें आप पसन्दी या नापसन्दीका फैसिला करने नहीं आये आप आये हैं, केवल यह बताने कि मैंने लेख लिखकर १२४ अ या १५३ अ के अपराधोंका रूप पूरा किया या नहीं।

चाहे मैं सबको न पसन्द हूँ लेकिन मेरे साथ न्याय जरूर होना चाहिये। मैं आज आपके सामने न्यायकी प्रार्थना करने को खड़ा हूँ यह मैं नहींकहता कि दया कीजिये, मैं केवल न्याय चाहता हूँ। न्याय से यदि आप मुझे दोषी ठहरावें तो मैं अपने किएका दण्ड भुगतनेको तैयार हूँ। मेरे विषयमें सरकारका क्या मत है उसे न देखकर आपको अपना स्पष्ट मत प्रकट करना चाहिये सरकारी पालिसी अलग चीज है, न्यायकी अदालत अलग। यहां आप न्यायकी रक्षाके लिये आये हैं सरकारकी पालिसीकी रक्षाके लिये नहीं। इस बातको यदि आप ध्यानमें रखेंगे तो सरकारकी ओरसे चाहे कितनीही धूल

अपकी आंखमें झोंकी जाय, उसका कुछ भी असर आपकी न्याय दृष्टिपर न होगा। एर्सकिन जजेने-कई जगह इस बातपर जोर दिया है कि अपराध करनेके लिये नीयतका होना आवश्यक है। थोड़ा लेख लिखनेहीसे चोरीका अपराध हुआ, यह ठीक नहीं है। कड़े लेख लिखना दूसरी बात है, वहां पसन्दकी नीयतमें लिखना दूसरी बात। इङ्गलैण्डकी जूरीका लक्ष सदा इसी सूत्रपर रहता है, उसीका यह फल है कि आज ब्रिटिश जातिके अखबारोंका स्वातन्त्र्य भी जाति रक्षित है। एर्सकिन साहबने भी ऐसाही सिद्ध किया है।

इतनी बहस हुमेके बाद उस दिन अदालत उठ गई।

बृहस्पतिवार ता० १६ जुलाई

चतुर्थ दिवस।

आज ११॥ बजे फिर मुकद्दमा पेश हुआ जज और जूरीके बैठने पर श्रीयुक्त तिलक महाशयने अदालतसे प्रार्थना की कि इस मुकद्दमेमें मेरे दफ्तरसे पकड़े हुये जिन कागजातको सरकारी बैरिस्टर जरूरत न समझें उनको वापस लौटा दें, क्योंकि उनके बिना 'केसरी' के दफ्तरमें हरज हो रहा है। सरकारी बैरिस्टरने इसपर कोई आपत्ति न की इसमें जज साहबने बेकार कागजोंको लौटा देनेका हुक्म दे दिया।

इसके बाद आपकी बहस फिर आरम्भ हुई। आपने कहा—"श्रीरे

सभ्य गण! आप जानते हैं कि सरकारी बैरिस्टरकी बहसके बाद मुझे बोलनेका अधिकार नहीं दिया गया है। मेरे ख्यालमें सरकारी बैरिस्टर जो कुछ बहसमें कहेंगे उसीका अनुमान करके मैं बहस कर रहा हूं। वास्तवमें वह बहसमें क्या कहेंगे यह मैं नहीं जानता। मेरे शब्दोंमें जो बातें वह कह सकते हैं उन्हींका मैं पहलेसे जवाब दे रहा हूं। वास्तवमें देखा जावे तो यह मेरे लिये बहुत बड़ी अड़चन है। इसी अड़चनोंमेंसे मुझे अपने लिये कोई रास्ता निकालना है।

कल मैं आपसे कह चुका हूं कि Attempt अर्थात् प्रयत्न शब्द इस मामलेमें मुख्य समझना चाहिये। साधारण ख्याल यह है कि ऐसे मामलोंमें नीयत परही मुकदमेका निर्णय होना निर्भर है। लेकिन राजद्रोहकी व्याख्या में जो प्रयत्न शब्द है उसका निर्णय केवल आरोपीकी बुद्धिके अनुसार किया जा सकता है। अपराधकी नीयत और प्रयत्न करके अपराध करना अपराध कहलाता है। जो काम भूल या लापरवाहीसे होजाय उसके विषयमें यह नहीं कह सकते कि यह नीयत रखकर प्रयत्न करनेसे दाव किया गया। अपराध करनेकी कुछ तैयारीके बाद यदि अपराध किसी ऐसे कारणसे रुक जावे या निष्फल हो तो यह बेशक कानूनके अनुसार अपराध करनेका प्रयत्न कहा जायगा। इस बातका आपके सामने कोई सबूत नहीं है कि मैंने प्रजामें अप्रीति उत्पन्न करनेका प्रयत्न किया और वह प्रयत्न सरकारके किसी यत्नसे रुक गया

मुझपर दो बातोंका अभियोग लगाया गया है। एक यह कि मैंने सरकारके विरुद्ध अप्रीति फैलाई या फैलानेका उद्योग किया। यह आरोप बिलकुल बेमानी है। यदि मैंने अप्रीति फैलाई तो फिर उद्योगका अपराध क्यों जड़ा गया? इससे स्पष्ट है कि फरियादी अभी यही निश्चय नहीं कर सके कि मैंने अप्रीति फैलाई या उसका केवल उद्योग किया। कोई सबूत पेश नहीं हुआ कि मैंने अप्रीति फैलाई। जब यह साबित नहीं हो सका तो कहा गया है कि मैंने अप्रीतिका प्रयत्न किया। यों पेच दरपेच आरोप लगाकर मुझे जकड़ दिया गया है। यदि मेरे लेखोंसे अप्रीति या द्वेषबुद्धि उत्पन्न होती तो मुझपर सीधा अप्रीति फैलानेका दोष आरोप होता। नहीं फैली तभी मुझपर प्रयत्न करनेका दोष लगाया गया है। इससे स्पष्ट है कि मैंने कोई अप्रीति नहीं फैलाई। विचार और नीयतमें बहुत भेद है। अपराधका निर्णय करते हुए नीयतकी ओर लक्ष्य रखना उचित नहीं है। किन्तु जब केवल प्रयत्न करनेहीका आरोप हो तब अलबत्ता नीयत और विचारोंपर लक्ष्य रखना चाहिये। जो काम किया जाता है उसकी नीयतमें कामके परिणामका ख्याल भी समाविष्ट है। यह कानून कहता है सही, किन्तु इसका उपयोग प्रयत्न के मामलेमें तमासे न करना चाहिये इसका विस्तृत अर्थ लगाना चाहिये। पेनलकोडकी ५११ धारामें जिस प्रयत्नका जिक्र है वह और बात है। १२४ अ के प्रयत्नसे उसका कुछ सम्बन्ध नहीं है। १२४

अ के अनुसार दण्ड पानेके लिये प्रयत्न पूर्ण रूपसे होना चाहिये। मुझपर १२१ धाराका अभियोग नहीं चलाया गया है। राजद्रोहके मामलेमें इसी हाईकोर्टके चीफ जस्टिस जेन्किन्स और जस्टिस वाटी फैसला दे चुके हैं कि जबतक पूर्ण रूपसे सोच विचार कर प्रयत्न न किया जाय और वह प्रयत्न अन्तमें अपराधीकी शक्तिके बाहर किसी कारणसे निष्फल हो, तभी वह प्रयत्न अपराध करनेका प्रयत्न कहा जा सकता है। अर्थात् प्रयत्न प्रमाणित करनेके लिये पूर्वोक्त बातोंका सबूत पहुँचाना बहुत जरूरी है।

अखबारोंकी स्वतन्त्रताके रक्षक आप जूरीही हैं। कानूनके मतलबमें अपनी रायके अनुसार जैसे जजको फेर बदल करनेका अधिकार है उसी तरह जूरीको भी है। आप इस अवसरपर अपनी स्वतन्त्र राय प्रगट कर सकते हैं। यह आवश्यक नहीं कि जैसे जज कहे उसीके अनुसार आप भी राय दें। जजके आदेशानुसार राय न देनेके लिये इंगलैंडमें जूरियोंपर फौजदारी मुकदमे भी चले हैं। अनियंत्रित राजसत्ता और व्यक्ति विशेषकी स्वतन्त्रताकी लड़ाईमें यही जूरीपद्धतिही आधारस्तम्भ है। अखबारों और व्यक्ति विशेषकी स्वतन्त्रताकी रक्षा आपके सिवा दूसरा नहीं करता। आप जानते हैं कि इंग्लैंड नरेश द्वितीय जेम्सके शासन कालमें जूरीने अपनी न्याय पद्-

तिफा कैसे मर्यादा रखी थी। राजाने प्रधान धर्माध्यक्ष आर्कबिशप पर अपनी आज्ञाका उल्लंघन करनेके अपराधमें मुकद्दमा चलाया। राजाके मुकद्दमा चलाने और जजके दोषी बतानेपर जूरीने कुछ ध्यान न दिया, उन्होंने मुकद्दमा सुनकर आरोपी पादरीको साफ छोड़ दिया। सन् १७९० के समयसे भी आप परिचित हैं। उस समय इंग्लैंड और कुल यूरोपमें बड़ी अशान्ति फैली हुई थी। अशान्ति फैलानेवाले विचार जल्द जल्द समस्त देशोंमें घुसते जाते थे। उस समय हर देशकी सरकारको यही भय लगा हुआ था कि यहीं वैसे विचारोंका प्रचार उसके देशमें न होजाय। भारत में आजकल जैसे अखबारों और वक्ताओं पर मुकदमे चल रहे हैं, ठीक इसी तरह उस समय इंग्लैंडमें भी चलाये गये थे। सन् १७९२ और १८०० के बीचमें इंग्लैंडके अनेक अखबारों तथा वक्ताओंपर राजद्रोहके मुकद्दमें चले। उस समय जोन्स नामके एक अङ्गरेजने एक छोटीसी पुस्तिका प्रकाशित की। उसमें एक सभ्य नगर निवासी और एक देहाती अङ्गरेजका सम्वाद लिखाथा उसमें कहागयाथा कि अब पार्ल्यमेंटमें लोक मतका दिग्दर्शन नहीं होता। इसलिये पार्लमेंटका सुधार होना चाहिये। सुधारके लिये एक सभा भी स्थापित कीगई। किन्तु अधिकारी वर्गको यह पुस्तक राजद्रोह पूर्ण मालूम हुई। इससे लेखकपर मुकदमा चलाया गया। मुकद्दमा मुलर जजके सामने पेश हुआ। अभियुक्तकी तरफसे मि० एस्किन पैरवी करते थे। जूरीमें

मुकद्दमा समझाने बाद जजने जूरीसे कहा कि लेख करनेकी नीयत राजद्रोहकी थी या नहीं थी, अथवा उसके लेख राजद्रोह सूचक हैं या नहीं हैं, यह निश्चय करनेका काम मेरा है। अन्तमें जूरीने नीयतके विषयमें कोई राय न देकर लेखकको केवल लेख प्रकाश करनेका दोषी ठहराया। जजने तब उसे सिंहासनका दण्ड दे दिया। लार्ड मैन्सफील्डके सामने अपील हुई। उन्होंने भी सजा बहाल रखी किन्तु इस शङ्काका समाधान न हुआ कि नीयत पर विचार करनेवाला कौन है? अतएव मामला पार्लमेंटमें गया। वहाँ लार्ड मैंसफल्ड और मि० एर्स्किनमें बहस होनेके बाद यह स्थिर हुआ कि नीयतके विषयमें राय देनेका अधिकार जजको नहीं वरन जूरीको प्राप्त है। इसीके अनुसार कानून भी बन गया। इसीके अनुसार नीयतका फैसला जूरियोंके हाथमें सौंपा गया है। सबल सत्ताधारी और निर्बल लोकपक्षमें जब मुठभेड़ पड़ती है तो उसमें न्यायकी डंडी सीधी रखनेका भार जूरीपर होता है। जज चाहे कितनाही उदार हो, वह नियमों और नजीरोंसे ऐसा जकड़ा हुआ होता है कि वह अपनी रायके अनुसार बहुत कम मानेके फैसले कर सकता है। लेकिन जूरी किसी प्रकारके नियमों या नजीरोंसे नहीं जकड़ी हुई है उसे हर हालतमें स्वतन्त्र राय देना चाहिये। जैसे कानून निर्माण करनेवाली कौन्सिलोंको कानूनों फेर बदल करनेका अधिकार है वैसेही जूरीको भी अधिकार है कि कानूनमें जो दोषकी

मत्त मालूमहो उसे निकाल दे। विलायती प्रजा- और पार्लमेन्टकी एकही राय थी इससे पूर्वोक्त सन् १७९२ वाला कानून पासकर दिया गया। अबतक वही कानून जारी है और भारतसे भी सम्बन्ध रखता है। इसी हाईकोर्टमें कौन बात जूरीके स्थिर करनेकी है, और कौन जजके स्थिर करनेकी इसका फैसिला उसी कानून के अनुसार होचुका है।

चीफ प्रेसिडेन्सी मजिस्ट्रेट यदि मेरे, मुकदमे का विचार करते तो जैसा उनके दिलमें आता फैसला करके रखदेते। मजिस्ट्रेट राजद्रोह के मामलेका विचार करे, यह विचित्र नियम भारतहीमें देखाजाता है यहां के कानूनमें यह बड़ा भारी दोष है। १७९२ का कानून पास हो जानेके बाद सन् १७९६ में हेमर और परी नामके दो एडिटरो पर राजद्रोहका मुकदमा चलाया गया। अफसरों का कहना था कि उस समयकी अशान्ति और बेचैनी के समय ऐसे लेख प्रकाशित करना राजद्रोहमें दाखिल है। मुकदमेमें जूरीने कहा कि इन दोनोंने लेख प्रकाशित किया यह ठीक है लेकिन हमारी रायमें लेख किसी बुरेनीयत से नहीं लिखे गये। जजने जूरीका यह कहना न माना इससे जूरीने आरोपीको एकदम निर्दोष बता दिया। फिर सन् १७९६ में जान् प्रीस्ट नामक अंग्रेज पर ऐसाही अभियोग चलाया गया (See State Trials—pp 503) प्रीसने केवल यही कहा था कि पार्लमेंट अब किसी कामकी न रही। इससे विलायतमें एक हल्ला रोम "हल्ला

चाहिये। मुकदमेमें जूरीने कहा कि हर अंग्रेज को अपनी सम्मति प्रकाश करनेका पूरा अधिकार है इससे उन्होंने आरोपीको बिल्कुल निर्दोष बताया। ठनी थर्ने मिल नामक वक्तापर मुकदमा चला। उसने एक जगह कहा था कि यदि कर्मचारीवर्ग अनुचित प्रणाली ग्रहण करनेका हठ करें तो समस्त अंग्रेज रणस्थलमें उतरनेको तैयार हैं। यह व्यक्ति भी जूरी द्वारा निर्दोष ठहराया गया क्योंकि उसकी नीयत बुरी नहीं थी।

यही इंग्लेण्डके राजद्रोही मुकदमोंका इतिहास है इनमें कई आरोपियोंको दण्ड भी हुआ यह मैं आपसे छिपाता नहीं। लेकिन इनमें यह आप देख चुके हैं कि भली बुरी नीयतका निश्चय करना आपहीका काम है। केवल मत और विचारस्वातन्त्र्यहीका यह फल है जो इंग्लैंड आज इतनी उन्नतिपर है। मेरे प्रकाश किये विचार आपको पसन्द हैं या नहीं इसके विचार करनेकी यह जगह नहीं है। हर व्यक्तिकी राय सबको पसन्द हो यह सम्भव नहीं किन्तु चेष्टा सबकी यही रहती है कि मेरीही राय मानी जाय। मेरे विचार सरकारको पसन्द नहीं हैं इसी लिये आज मैं इस पिंजरेमें खड़ा हूं। कल आपके विचार यदि सरकारको ना पसन्द हों तो आपमें से भी कोई इसी पिंजरेमें खड़ा हो सकता है। इसीसे याद रखिये कि यदि आज मुझे कुछ विचार स्वातन्त्र्य है तो कल आप और अन्य लोग भी उससे लाभ उठा सकेंगे।

लेकिन आज मैं इस स्वातन्त्र्यसे वंचित रखा गया तो कष्ट मुझे ही यह छिन जायगा। व्यक्तिके विचारका यहां प्रश्न नहीं, प्रश्न यह है कि हिन्दुस्तानमें विचार स्वातन्त्र्य प्राप्त है कि नहीं इसका निर्णय आप-को करना चाहिये। इंगलैंडमें यह स्वातन्त्र्य पूर्णरूपसे प्राप्त है, इसी लिये हम भारतवासी आपकी प्रशंसा करते हैं और आप उससे खुश भी होते हैं। किन्तु जब हम भी आपका अनुकरण करते हैं तब आपको यह बुरामालूम होता है—क्या ऐसी बात आप संसारपर प्रगट किया चाहते हैं? मुझे आप जेल भेजें चाहे काले पानी में जन्म कैदका दंड दें, मेरा यहांसे और आना सम्भव है, लेकिन यह ध्यान रखिये कि इससे समस्त संसारमें इस बातका डंका बज जायगा कि आपने विचारस्वातन्त्र्य नष्ट कर दिया।

सन १८८६-वर्ने और हाइड-मैन के मुकद्दमें में भी जूरीने यही रायदी थी कि, केवल लेख देखकर राजद्रोह सिद्ध नहीं होता। आस पासकी दशा परभी विचार करना चाहिये और सबसे बड़ी बात यह कि राजद्रोह करने की नीयत सिद्ध होना चाहिये। वही उमन साहब आजकल मंत्री दलमें हैं। प्रथा विरुद्ध लेखनेके लिये फरियादी जिन्होंने सबूत पेश करे उन्हींसे प्रथम की हई देखना चाहिये। १९१२में अमेरिका में भी एक ऐसाही मुकदमा चला था। उसमें भी यही बात सिद्ध हुई कि केवल प्रकाशित करनेसे कोई अपराध सिद्ध नहीं होता। उस

मुकदमेका मेरे मुकदमेसे बहुत कुछ, सम्बन्ध है। लेख प्रसिद्ध करना और सरकारकी निन्दा करना दो अलग बातें हैं। ज्यूरीकोही यह स्थिर करना है कि निन्दा कहाँ तक की जा सकती है और अखबारोंकी स्वतंत्रता कहाँ तक है। इसीलिये यह कहा जाता है कि अखबारवालोंका स्वातन्त्र्य आपकी मुट्ठीमें है।

इसके बाद अदालत जलपान करनेको उठगई। जलपानके बाद फिर तिलक महोदयने कहना शुरू किया,—१२४ अ में जो प्रयत्न शब्द है इसके होनेका सबूत तथा लेख लिखे जानेके समय देशकी दशाका सबूत फरियादीको अवश्य आपके सामने पेश करना चाहिये। सन १८९७ में "केसरी" के मुकदमेके बाद राजद्रोहकी व्याख्या जिसप्रकार बदली गई शायद अबमी ऐसाही हो। किन्तु जबतक न बदली जावे तबतक आस पासकी दशाका भी ध्यान रखना चाहिये। इसदंगाका कोई सबूत सरकारने तो पेश किया नहीं लेकिन जब मैं पेश करनेलगा तो मुझे भी रोका गया और मेरे कागजात दाखिल करने पर उजर किया गया। इसके सिवा अन्तमें मेरा जवाब देनेका अधिकार भी मारागया है। फरियादी पक्षके इस अनुचित व्यवहारसे मुझे अपना हक जबर्दस्ती छोड़ना पड़ा है। लेख किस उद्देश्यसे लिखा गया यों किस प्रसंगवश लेख लिखा गया है यह लेखहीमें बता दिया गया है। "देशका दुर्दैव" इस लेखमें केवल यह बताया है कि सरकारको किस

नीतिका अवलम्बन करना चाहिये। यह भी कहा है कि, सरकार एग्लो इण्डियन-पत्रोंकी बात न माने बल्कि जो हम कहते हैं उसकी ओर लक्ष करे। ऐसा उद्देश्य लेखसे प्रगट होनेपर भी कहा गया है कि मैंने राजद्रोहकी नीयतसे लेख लिखा, किन्तु इसका कोई सबूत नहीं पेश किया गया। लोकमत क्या है और कैसे यह दर्शानेवाले हो सकता है कि जिससे सब बातें सरकारको मालूम हों यही हम अखबार लेखकोंका कर्त्तव्य है। बम गोलेकी घटना के बाद यदि उसकी चर्चा न करते तो और क्या करते ? यह ठीक है कि ऐसे समय अखबार वालोंका मार्ग धोकेसे भरा रहता है लेकिन जिसे अपने कर्त्तव्यका ध्यान है वह उस समयभी उसके करनेसे न चूकेगा। हां जिसे डर लगता हो वह अलबत्ता अखबार लिखना छोड़कर अलग बैठ जाय, उसके लिये यही अच्छा है।

वादविवादसे ही सत्यबात प्रगट होती है। बम चलने के बाद जो विवाद अखबारों में शुरू हुआ तो हमारा भी कर्त्तव्य हुआ कि विवादमें शरीक होकर बहस करें और उत्तर दें। यह विवाद क्या था, किसने आरम्भ किया और किसने किसका क्या उत्तर दिया इन सब बातों पर जूरीको विचार करना चाहिये। देशमें जब कोई असाधारण बात होती है तो उसके लिये भला अलग दल तरह तरहके वादविवाद करमें लगते हैं। किस पक्षने किस नीयतसे क्या बात कही यह बात जूरीको

विना सबके लेख पढ़े नहीं विदित हो सकती। मुजफ्फरपुरमें बमकाढ होतेही देशमें सभी जगह इसकी चर्चा होने लगी। एंग्लोइंडियन अखबारोंने कहा कि बम हिन्दुस्तानियोंके आन्दोलनसे उत्पन्न हुआ। "पायोनियर" ने इसी विषयको लेकर Cult of the Bomb (बमवालोंका सम्प्रदाय) शीर्षक लेख लिखा। केसरीने भी 'बमगोलेका रहस्य' शीर्षक लेख प्रकाशित किया। घटना के सम्बन्धमें जन साधारणका क्या मत है यह प्रगट करना हमरा कर्तव्य है। यह कर्तव्य चाहे भयंकर हो तो भी इसका करना मेरे लिये आवश्यक था। "देशका दुर्दैव" इसी शीर्षकसे प्रगट है कि मेरे लेखमें बम घटनाओंको देशके लिये हानिकारक बताया गया है। बम क्या चला इसीकी मीमांसा करना मेरे लेखका खास उद्देश्य है। हिन्दुस्थानियोंके आन्दोलनसे बम उत्पन्न हुआ यह एंग्लो-इंडियनोंका कहना है विलायती "टाइम्स" यहांके "पायोनियर" "इंग्लिशमैन" और "टाइम्स आफ इंडिया" ने कहा है कि कांग्रेस और कांग्रेसवालोंकी बदौलत बम भारतमें आया। नर्म गर्मदलके नेताओं तथा कौन्सिलोंके मेम्बरों आदि सबको इन पत्रोंने इसका जिम्मेदार बताया है। क्या इन बातोंका मुझे खण्डन नहीं करना चाहिये था? चाहे मेरा मत आपको पसन्द न हो, पर थोड़ी देरके लिये अपनेको मेरी स्थितिमें समझकर विचारिये कि क्या आप इन बातोंका उत्तर

देना अपना कर्त्तव्य न समझते ? इस महस में मैंने कोई नई बात नहीं कही। जो बातें उन अखबारोंने पेचीदगी से छिपाकर प्रगट की उन्हीका वास्तविक अर्थ मैंने सबके सामने प्रगट कर दिया। राजद्रोहकी चर्चा करते वक्त यह अधिकारी वर्ग अपनेको नहीं गिनते हमेंही गिननेके लिये तैयार रहते हैं। ऐसी सूरतमें मुझे अधिकारी वर्गका जिक्र लानी भी जरूर था। हमारा कहना यह है कि बम घटना अधिकारी वर्गके द्वापसेही हुई इसको सिद्ध करनेका बोझ हमारेही सिर है। यह विवाद अभीतक समाप्त नहीं हुआ बरञ्च कुछ दिनतक चलताही रहेगा, इसके सिवा एङ्गलो इण्डियन पत्रोंनेजो आरोप हमपर किये उनके खण्डन करनेका बोझ भी हमारेही सिर पड़ा।

आगे तिलक महोदयने "केसरीका दुर्दैव उपाय देशमें इसके अंग्रेजी अनुवादकी पूर्वोक्त भूलोंपर बहसकी कहा मेरे असाधु मराठी शब्दोंका तोड़ मरोड़कर अर्थ किया है मराठीके लेखोंकी एक एक कापी जूरीको दीगई और कहा गया कि जहां इनमें चिन्ह बनाये गये है अनुवादकी भूलोंपर विचार किजिये जजसहबने भी कहा कि तिलकमहोदयको अधिकार है कि सर्जुमेकी भूल जूरीको भलीभांति समझावे। अन्तमें तिलक महोदयने कहा कि कल फिर मैं इन भूलोंको लेकर बहस करूंगा। इसके बाद अदालत उठ गई।

ता० १७ जुलाई शुक्रवार सन् १९९८

पञ्चम दिवस।

आज अदालत बैठनेपर श्रीयुक्त तिलकजी, बहस आगे चली—
[illegible]। पहले मैं कह चुका हूँ कि वर्त्तमान राजनीतिक चर्चा ऐसे ढंगसे चल रही थी कि मेरा भी कुछ न कुछ कहना कर्त्तव्य हो गया एंग्लोइंडियन अखबारोंने इस सम्बन्धमें जो कुछ लिखाथा उसीका उत्तर देनेके लिये मेरे लेख लिखे गये। इस विवादमें आप दोनों पक्षोंके वक्तव्यकी ओर दृष्टि कीजिये। इन लेखोंका असर मराठी बोलने वालों पर कैसा पड़ेगा यहभी आपको देखना चाहिये। एंग्लोइण्डियन पत्रोंने जो कुछ लिखा था वह हमारे समाज और देशके विरुद्ध था। जैसी भाषामें उन्होंने वह लेख लिखे और जैसे कठोर शब्द वह व्यवहारमें लाये उसके उत्तरमें मेरे लेखोंकी भाषा बिल्कुल पानी भी है। उन्होंने गालीगलौज करना आरम्भ किया मैंने मुलायमियतसे उत्तर दिया। उन्होंने और [illegible] हमारे [illegible] निन्दाकी है मैं उनके लेख पढ़कर सुनाऊंगा। ऐसे लेखोंका उत्तर देना मेरा क्या समस्त हिन्दुस्तानी अखबारोंका फर्ज था। इस प्रकारकी बहसमें यदि यह कहा जाय कि जाति जातिमें परस्पर द्वेषभाव फैलाया गया तो यह कहना भूल है। एंग्लोइंडियन और हिन्दुस्तानी दो पक्ष थे इन्हींमें वादविवाद

चल्सा था।"मैं तो एंग्लोइन्डियन लोगोंमेंसे भी कई आदमी कामेसके भी पक्षपाती हैं। ऐसी बहसमें कोई द्वेष फैलानेकी नीयत नहीं थी बांच दो विरोधी हितोंकी लड़ाई थी।

—आगे कहा—मेरे "दोहरा इशारा" भी वाले लेखमें इन्हीं दोनों पक्षोंकी ओर इशारा किया गया है। सभीके अखबार पढ़कर कुछ न कुछ राय देना पड़ती है। मेरे "केसरी" दफ्तरमें हर सप्ताह कोई दो ढाई सौ समाचारपत्र तथा पत्रिकायें आती हैं। इन सबपर समयानुसार हमें कुछ न कुछ राय देना पड़ती है। एंग्लोइण्डियन पत्र भी आते हैं उनकी बातोंका उत्तर देनेमें हमें भी कुछ कड़ी भाषा व्यवहारमें लाना पड़ती है। मेरे विचार चाहे सही हों या नहीं लेकिन यह जरूर है कि जैसी स्वतन्त्रता उन अखबारोंको अपने विचार प्रगट करनेकी है वैसी ही मुझे भी है। अपने अपने विचारोंके अनुसार वर्तमान बेचैनीको दूर करनेका कोई कुछ उपाय बताता था, कोई कुछ। अधिकारी वर्गके हिमायती एक उपाय बताते थे, अपनी समझके अनुसार हम दूसरे बताते थे, मेरे स्थानपर आप होते तो ऐसाही करते। जब तक हमें अखबार लिखनेकी स्वतन्त्रता है तबतक अपने विचार प्रगट किये बिना मैं न रहूँगा हां यह स्वातन्त्र्य छीन लिया जाय तो और बात है।

— मुजफ्फरपुरकी बम घटनाके बाद एक सप्ताह तक मैंने कुछ न

लिखा। इसी बीचमें कई प्रकारके मतोंके अखबार मेरी मेजपर रखे गये। पायोनियर, सिविल मिलिटरी गजेट, टाइम्स आफ इण्डिया, इङ्गलिशमैन स्टेट्समैन, इम्पायर आदि एंग्लो इण्डियन पत्रोंका मत एक प्रकारका था, और बगाली, पंजाबी पत्रिका, हिन्दू, ट्रिब्यून आदि देशी अंग्रेजी पत्रोंका दूसरे प्रकार था। इसी बीचमें कुछ विलायती अखबार भी मिले। इनके मतभी विभिन्न थे। इन सबके लेखोंका ख्याल रखकर और वर्तमान राजकीय स्थितिकी ओर दृष्टिकरके मैंने अपना मत प्रकाश किया था। यहां तिलक महोदयने इन सब अखबारों तथा लेखों को सबूतमें पेश किया कुल ७०। कागजात थे इनमें से कई जूरियोंको पढ़कर सुनाने को पहले ८ मई के पायोनियरका "Cult of the Bomb अर्थात् बमसम्प्रदाय नामक लेख सुना) देखिये पायोनियरके इस लेखमें हमारी कौंसिलकेमेम्बरों कांग्रेसवालों और अन्य प्रतिष्ठित देशवासियों तथा बम फेंकनेवालोंको एकही थैलीके चट्टे बट्टे बताया गया है, यह भी आगे कहा है और अधिकारिवर्गको सलाह दी है कि यदि एक गोरेका बाल भी बांका न हो, तो उसके लिये २० हिन्दुस्तानियोंको गोली मार देना चाहिये। मेरा नाम भी इसमें साफ लिया गया है। ऐसी सूरतमें आप क्या समझते हैं कि मैं उनका उत्तर न देता ! नहीं, मेरा कर्तव्यही उत्तर देनेका था और वही दिया। अब कलकत्तेके "एशियन" गोरे अखबारकी राय सुनिये। उसने कहा

था कि बंगालमें अब खूब कड़ाई होना चाहिये। उसने क्लिफर्ड साहबको यह भी सलाह दी थी कि हर समय अपने पास भरी हुई पिस्तौल रखा करो, जहाँ कोई 'काला आदमी' अपने आसपास दिखाई दे फौरन बिना पूछे उसे गोली मार दो। ऐसाही शैतानी उपदेश इस गोरे पत्रने दिया था। "इम्पायर" ने भी कुछ ऐसीही बातें लिखी थीं बिलायतसे एक अंग्रेजने यहाँके एक एंग्लोइंडियन पत्रके सम्पादकको निजकी चिट्ठीमें लिखा था कि हिन्दुस्तानी नेताओंको नगरके चौकमें खड़ाकर भंगियोंसे कोड़े लगवाना चाहिये या झाड़ूसे पिटवाना चाहिये तभी उनका अभिमान दूर होगा और आन्दोलन भी दब जायगा।

(तिलक महाराजने इसके बाद पायोनियर स्टेटसमैन आदि के और कई लेख सुनाये) एडवोकेट आफ इंडियाके एक अंकका हवाला देकर कहा कि उसने सरकारको खूब अत्याचार करनेकी सलाह दी थी। कहा था कि, कड़ाई सरकारने नहीं की इसीसे ऐसे अत्याचार होते हैं। क्या कोई कह सकता है कि यह बातें शुद्ध बुद्धिसे नहीं लिखी गई थीं? क्या इन गोरे अखबारोंकी भाषा कठोर, और द्वेष फैलानेवाली तथा भारतवासियोंके हृदयमें अग्नि भड़कानेवाली नहीं है? ऐसे जहरीले लेखोंको पढ़कर कुछ गुस्सेसे यदि हमने भी उनका उत्तर दिया तो क्या यह राजद्रोह कहा जायगा? (महाराष्ट्र, माडर्न रिव्यू, इन्दुप्रकाश, ज्ञानप्रकाश, गुजराती, हिन्दू और इण्डियन स्पेक्टेटर, अखबारोंके

कई लेख पेश करके कहा—) इस बहसमें इन देशी अखबारोंने जो म
प्रकाश किया है वही मेरा मत भी है। गोखले महोदय कौन्सिल
एक स्पीचमें भी ऐसीही बातें कह चुके हैं। १९०६ साल्वाली का
समें डाक्टर रासबिहारी घोष भी कह चुके हैं कि यदि सरकार भारत
वासियोंकी अभिलाषायें पूरी होनेका योग्य उपाय न करेगी तो भारतव
भी दूसरा आयर्लैण्ड हो जायगा। स्वयं पायोनियर भी १९०६ मे
रूसमें बम चलनेके विषयमें लिख चुका है कि, अत्याचार और कड़ा
ईसे बम कभी बन्द नहीं हो सकता।

आगे कहा—मोर्ले साहब भी सिविल सर्विस भोजके समय विला
यतमें कह चुके हैं कि, केवल कड़ाई करनेसेही आन्दोलन या बेचैनी
नहीं दब सकती। हिन्दुस्तानियोंके हृदयमें जो यह महत्वाकांक्षा उत्पन्न
हुई है वह अंगरेजी शिक्षाकाही फल है' यदि उस आकांक्षाको हमने
पूरा न किया अथवा उसे दबाना चाहा तो उनमें असन्तोष सहजही
फैल सकता है। इस असन्तोष फैलानेके दोषी हिन्दुस्तानी नहीं बल्कि
अंगरेज समझे जायंगे। इतने बड़े राज्याधिकारीने जो बात कही है
वही मैंने भी कही। क्या इसके लिये मैंही राजद्रोही माना जाऊंगा?

और कई लेख और वक्तृतायें उद्धृत करके तिलक महोदयने कहा
कि इन सबको पढ़कर सुनानेसे मेरा मतलब यह है कि लेख लिख-
नेके समय मेरे विचारोंकी स्थिति क्या थी। एंग्लोइण्डियन पत्रोंने ऐसी

विषम और कठोर बातें कह, बल्कि हैं यदि आप, लोगोंको ऐसी बातें कही जाती तो 'केसरी' की भांति मुलायमियत से आप कभी जवान न देसकते। बमघटना के बाद पहले एंग्लोइंडियन पत्रोंने ही बहस छेड़ी। उन्होंने हिन्दू समाज पर क्यों क्या आरोप नहीं किये, सरकारको कैसे कैसे जुल्म करनेकी सलाहें नहीं दीं, ऐसी सूरतमें हमें उनको उत्तर देनेका अधिकार न हो यह कहां का न्याय है? ऐसी बात सुनकर कोई चुप बैठारहे यह मनुष्य स्वभाव के विरुद्ध है। यदि हम चुप रहते तो अपने कर्तव्यसे विमुख होने के दोषी कहलाते।

देशमें दो दल है एंग्लो इंडियन अखबार तथा अधिकारी वर्ग, और देशी अखबार, सब अपना अपना मत प्रगट करते हैं और उसीको सच्चा समझते हैं। हमलोग अपने शासनके काममें बराबर कुछ भाग चाहते हैं और इसी तरह धीरे धीरे सेल्फ गवर्नमेंट अर्थात् स्वराज्य प्राप्त करना चाहते हैं। यह स्वाभाविक बात है। अधिकारी वर्ग यह कहते हैं कि यदि उनकी पीठ भारतकी ओर फिरेगी, तो भारत एकदम डूब जायगा। ऐसीही बातोंके खंडनमंडनमें दोनों पक्ष सदा लेख लिखते आये हैं। यह बहस आजकी नहीं कोई ५० वर्षकी पुरानी है। हमारी तरफ कुछ अंगरेज हैं, एंग्लो इण्डियनोंकी ओर कुछ भारतवासी हैं। इससे जातिगत झगड़ा यह नहीं कहा जा सकता। मैंने भी अपने लेखोंमें कोई नई बात नहीं निकाली वही पुरानी बातें, जो ५० वर्षसे कह रहे हैं उन लेखोंमें

(१) आवेंगे वौर रसालनमें अरु कोकिल डारन में विहरेंगे । एक दिना नतु एक दिना यहि भारतके दिन फेरि फिरेंगे ॥

भारतका भी भाग्योदय होगा।

व्योपार ही एक ऐसा उत्तम उपाय है जिससे आदमी धनवा-नाहोकर अपने जीवन का मार्ग सुगम करे सकता है । बड़े दुःखकी वातैह कि हमारे देशमें ऐसा कोई समाचार पत्र नहीं है जो व्योपारियोंको उनके व्यापारोन्नतिमें सहयतादे, यद्यपि यूरुप आदि देशोंमें ऐसे वहुत से समाचारपत्र निकलते हैं । इस लिये हिन्दी भाषामें प्रतिसप्ताह हमने एक ऐसा समाचारपत्र निकालनेका विचार किया है । इसमें यूरुप अमरीका आदि देशों से निकलने वाले व्योपार सम्बन्धी समाचार पत्रों के आधार पर लेख लिखे जायेंगे । रुई—गल्ला—चांदी—सोना—हुंडी—नोट अफीम—मिल व वैंक के हिस्से सूत—कपड़ा—किराना—आदि व्योपारियोंके इन चीजों की पैदावार [जो यहां और दूसरे देशों में होती है] तथा भाव आदि मुख्य मुख्य वातें लिखी जायेंगी । मि० एस. आर० एल्हेन्सकी सम्मति से (जिनको व्योपारिक धंधों में अच्छा अनुभवहै) अच्छे २ पोशीदा तरीका व्योपार में उन्नति करने के

भी कही गई हैं। (सरकारी वकीलने कहा 'केसरी' के हर अङ्कमें ऐसीही बातें छपती हैं) तिलक महोदयने कहा—हां ठीक है, पुरानी बातोंकाही हेर फेर नये प्रसंगोंमें होता है ऐसी पुरानी बातोंका पाठकोंपर नया असर क्या पड़ सकता है?

इसके बाद अदालत उस दिन उठ गई। मुकदमा सोमवार २० जुलाई तक मुल्तवी हो गया।

सोमवार ता० २० जुलाई सन १९०८ ई०

छठवां दिवस

इस सुप्रसिद्ध और चमत्कारिक मुकदमेका आरम्भ आज फिर साढे ग्यारह बजे हुआ। इस मुकदमेने जगत् भरमें एक प्रकारके नवीन विचारोंका प्रसार कर दिया है। हाई कोर्ट सेशनमें पैर रखनेको भी आज जगह न थी वकील, बैरिस्टर तथा दूसरे प्रतिष्ठित सभ्य पुरुष और रिपोर्टरोंकी बड़ी भीड थी। बहुत सी अङ्गरेज और पारसी रमणियां भी कोर्टमें उपस्थित थीं करीब ९ बजेसेही लोगोंके झुंडके झुंड हाईकोर्टकी तरफ जाते हुए नजर आते थे। पुलिसका बंदोबस्त रोजकी तरह आज भी था साढे ग्यारहमें जब पांच मिनिट थे तब तिलक महोदय कोर्टमें उपस्थित हुए तदनन्तर जूरी हाजिर हुई और सबके बाद जज साहब आये। ठीक इसी समय श्री० तिलकने अपने भाषणको फिरसे आरम्भ किया। उन्होंने कहा—कल मैंने अपने विचार आपके सन्मुख प्रगट

कितेही हैं अधिकारी वर्गकी तरफदारी करनेवाले लोग सरकारको इशारा करते हैं कि देशमें लस्करी कायदा अमलमें लाकर बढते हुए असन्तोषको दवाही देना उचित है। सर्वसाधारण लोकमत प्रवर्तक मण्डलोंकी ऐसी सूचना है कि लोगोंको कुछ अधिक हक दिये बगैर यह बढता हुआ असन्तोष मिटना असम्भव है। यह लोकपक्षका मत कुछ आजका नहीं बल्कि यह मत सन् १८९० ई० से देशमें फैल रहा है अर्थात् यह पुरातन मत है। इसके बाद तिलकने मेजर इवान्स बेल्की एंग्लो इण्डियन नामक पुस्तकमेंसे एक अवतरण पढकर सुनाया। इसका अभिप्राय यह था कि "हम लोग हिन्दुस्तानके ट्रस्टी नहीं हैं परन्तु जीतनेवाले हैं। हम लोग हिन्दुस्तानियोंका हित करनेके लिये व्यवस्थापक होकर यहां आये हैं ऐसा कहना मुर्खताका काम है। अगर हमको हिन्दुस्तान अपने तावेमें बहुत दिन रखना हो तो यहांके लोगोंको अधिक हक देकर उनको खुश रखनेके सिवाय दूसरा कोई उपाय नहीं"। मेजर इवान्स बेल्ने इस पुस्तकको ४०–९० वर्ष पूर्व लिखा है।

जिन लेखोंपरसे मुझपर मुकदमा किया गया है उसमें यह नहीं दिखलाया गया कि अमुक अमुक वाक्य राजद्रोही हैं इस लिये मुझे अपने सब लेख आपको समझाने होंगे। पर रायटरने जो सारांश विलायतको भेजा है उस सारांशमेंके वाक्यही विशेषत दोषी समझे गये हैं, ऐसी

कल्पना कर लेनेमें कुछ हरज नहीं तथापि मैं सब लेख आपको समझा देता हूँ

प्रत्येक जूरीके हाथमें छपा हुआ भाषांतर था श्री० तिलक भी इसी छपे हुए भाषांतर परसे अपने लेखका स्पष्टीकरण करके जूरीको समझा रहे थे, आपने कहा;—भाषांतरकी ९ पंक्तीमें Obstinacy और Perversity शब्द हैं उसमेंसे Perversity शब्द गलत है उस शब्दके बजाय मैंने Stubbornness शब्दका उपयोग किया है। " और ऐसा करनेसे यद्यपि बङ्गाली नौजवानोंका गुप्तदल रूसी गुप्त मण्डलीकी तरह खूनही करनेके लिये क्यों न उत्पन्न हुआ हो तथापि इनका जन्म स्वार्थ साधनेके लिये नहीं हुआ है किन्तु बलवान अधिकारियोंके अनियन्त्रित सत्ताको अमलमें लानेसे लोगोंमें एक प्रकारका क्षोभ उत्पन्न होगया और उसीका फल यह गुप्त मण्डली है। "

केसरीके १२ वी मईके लेखमेंसे उपरोक्त वाक्य पढकर श्री० तिलक कहने लगे इस वाक्यमें " खून " शब्दकी अपेक्षा Assassination शब्द भाषांतरमें अच्छा होगा, परन्तु " राष्ट्रीय वध " शब्दोंसे " वध " शब्दका भाषान्तर " असासिनेशन " शब्दकी बजाय killing शब्द भाषान्तर करनेके समय काममें लाना चाहिये, बण्डका भाषान्तर " म्युटिनी " और Revolt की जगह Disturbance शब्द उपयोगमें लाना चाहिये।

सन् १९०६ ई० में पायोनियरने कहा है कि जुलुमने रूसमें बमके अत्याचार उत्पन्न किये पायोनियरका किया हुआ तर्क उसे इस समय न सूझा १९०७ में यह कहता है कि आन्दोलनवालोंनेही बम उत्पन्न किये, यह क्यों ? पायोनियरने ९ वीं मईकी संख्यामें "बम सम्प्रदाय" पर एक लेख लिखा है उसमें आनरेबल गोखले सदसे लेकर बम फेंकनेवाले तकको नाम इस सम्प्रदायमें शामिल कर दिया है इस कारण पायोनियरके उत्तरके तौर पर १२ मईके अङ्कमें लेख लिखा है।

"मनुष्यमात्रकी सहनशीलताकी भी कुछ हद है" यह बात अनियंत्रित सत्ता चलानेवाले अधिकारियोंके ध्यानमें रखने योग्य है। इस वाक्यको पढ़कर तिलक कहने लगे कि हिन्दुस्तानके लोग विशेषतः बङ्गाली लोग बहुतही सहनशील, निरुपद्रवी और शांत क्षमावान् हैं यह हम मानते हैं लार्ड मेकालेने तो उनको बिल्कुलही नामर्द कहा है ऐसे नामर्द लोगतक चि[illegible] बात अधिका-रियोंकी नजरमें लानेके लिये मैंने ऊपरोक्त [illegible] है [illegible] लोगतक अधिकारियोंके जुल्मकी तामील [illegible] कि सहन शीलताकी मर्या[illegible] भावेगी. [illegible] दर्शाई है " पंडित [illegible] हैं परन्तु [illegible] हैं।

लिखे जायँगे अर्थात् इसमें व्यौपारियों के वास्ते ऐसी सलाहें लिखी जायगी जिनके अनुसार कार्य करनेसे हम दावेके साथ कह सकते हैं कि–हमारा देश अन्य सब देशों से व्यौपारमें बढ़ जायगा।

(२) हमारे इस अभागी देशमें बहुतेरे आदमी बिना उद्यम मारे २ फिरते हैं जिनके लाभके लिये भी हम कभी २ इसमें ऐसी सलाह लिखते रहेंगे कि जिसके काममें लानेसे वह अपना ही पालन नहीं बल्कि दूसरोंको भी फायदा पहुंचा सकेंगे।

(३) अखबारों के प्रेमियोंकेलिये भी यह एक नये ढंगका अखबार होगा (भारत में अबतक कोई ऐसा अखबार नहीं है, इसमें चुनी हुई नई २ खबरें भारत तथा अन्य देशोंकी होंगी।

(४) इसका अग्रिम वार्षिक मूल्य ३) होगा परंतु उन ५०० ग्राहकोंसे जो सबसे पहले अपना नाम हमारे रजिष्टर में दर्ज करादेंगे प्रथम वर्ष के लिये सिर्फ २॥) रुपयाही लिया जायगा और १ प्रति लाला लाजपतिरायका जीवन चरित्रकी [जो हिंदीमें तयार होरही है) उपहारमें दीजायगी।

अखबार सम्बन्धी चिट्ठी पत्री तथा रुपया निम्न लिखित पते से भेजना चाहिये।

पता—श्रीरामकम्पनी

२८० कालकादेवी पोस्ट बम्बई

सत्यं नास्ति भयं कचित्।

अवला हितकारक चूर्ण—

स्त्रियोंके लिये हमने बड़े परिश्रमसे बनाया है—इसके सेवनसे सर्व प्रकारके प्रदर रोग बध्यापन गर्भमें हानि पहुचाने वाले सम्पूर्ण दोष नष्ट होजाते है औषधि क्याहै अमृत है दाम १५दिनकी मात्रा का १) रु० डाकव्यय अलग।

धातु वर्धक—पौष्टिक वीर्य स्तम्भक—रक्त शोधक-मनोत्साह कांति बुद्धि वर्धक कस्तूरी व अनेक वनस्पती मिश्रित-

अद्भुत चूर्ण।

इसके सेवनसे ७ दिनमें रंग बदलता है मगाकर अजमाइये दाम ही क्या हैं सिर्फ १॥) सो भी १५ खुराकका इसपर भी महसूल माफ।

मकरध्वज चूर्ण।

१ रत्ती पानमें डालकर खानेसे मुखकी दुर्गंध आंका मिचलाना खांसी अजीर्ण अरुचि स्वप्न दोष वीर्य दोष निर्बलता सर्व प्रकारके दोषदूर होजाते है हमने बहुत परिश्रमसे इस चूर्ण को रसिक जनों के हितार्थ बनाया है॥

एक तोले का दाम (सिर्फ।॥) आना डाकव्यय जुदा

पता—रामदेव तिवारी ९ कर्नाट फोर्ट बम्बई

" अधिकार मदसे उन्मत्त बने हुए आधिकारियोंके सिवाय " इत्यादि वाक्यमें भाषान्तरमें Inebriarted by insolence यह शब्द सरकारी भाषांतरोंमें डाले गये हैं इसमें Insolence शब्द अनुवाद-कने अपने गिरहसे डाला है । Insolence शब्दके लिये मूलमें कोई शब्दही नहीं है । इसके सिवाय " अधिकारमदसे उन्मत्त " यह शब्द मेरे नहीं हैं किन्तु यह वर्कके हैं । सर डब्ल्यु वेडरबर्नने भी सन् १८८४ की १९ मईके बम्बई गजटमें अपने एक लेखमें यही लिखा हैं उपरोक्त शब्दोंका भाषांतर Blinded by the intoxication of authority ऐसा होना चाहिये ।

लोगोंके शांत होनेपर भी पायोनियरने आन्दोलनवालोंको असंतोषका उत्पादक कहा है, इस कारण उसके मतका मुझे खण्डन करना अवश्यही था । मि० गोखले रासविहारी घोष वगैरा गृहस्थोंके विचार कई मंगह इसी प्रकारके प्रसिद्ध हुए हैं ।

" एक देशके दूसरे देशपर राज्य करनेका हेतु केवल एक स्वार्थ होता है " मेरे इस वाक्यके समान कई एक अंग्रेजोंने भी अपने लेख और स्पीचोंमें लिखे और कहे हैं । श्रीयुक्त सिव्यूने इसके उदाहरणार्थ मिस्टर एस एस थोरबर्न पंजाबके भूतपूर्व माली कमिश्नरका एक वाक्य पढ सुनाया जिसका आशय यह है कि " हिन्दुस्तानपर हम लोग स्वार्थके लिये राज्य करते हैं" । परराष्ट्रोंके साथ लिखापढी करनेके समय

सत्यंनास्ति भयंक्वचित्।

अवला हितकारक चूर्ण—

स्त्रियोंके लिये हमने बड़े परिश्रमसे बनाया है इसके सेवनसे सर्व प्रकारके प्रदर रोग वंध्यापन गर्भमें हानि पहुंचाने वाले सम्पूर्ण दोष नष्ट होजाते है औषधि क्याहै अमृत है दाम १५दिनकी मात्रा का १) रु० डाकव्यय अलग।

धातु वर्धक—पौष्टिक वीर्य स्तम्भक—रक्त शोधक-मनोत्साह कांति बुद्धि वर्धक कस्तूरी व अनेक वनस्पती मिश्रित-

अद्भुत चूर्ण।

इसके सेवनसे ७ दिनमें रंग बदलता है मगरफिर अजमाइये दाम ही क्या हैं सिर्फ १॥) सो भी १५ खुराकका इसपर भी महसूल माफ।

मकरध्वज चूर्ण।

१ रत्ती पानमें डालकर खानेसे मुखकी दुर्गंध औका निकलाना खांसी अजीर्ण अरुचि स्वप्न दोष वीर्य्य दोष निर्बलता सर्व प्रकारके दोषदूर होजाते है हमने बहुत परिश्रमसे इस चूर्णको रसिक जनों के हितार्थ बनाया है॥

एक तोले का दाम (सिर्फ॥) भाग डाकव्यय जुदा

पता—रामदेव तिवारी, ९ धर्मगोट, फोर्ट बम्बई

" अधिकार मदसे उन्मत्त बने हुए अधिकारियोंके सिवाय " इत्यादि वाक्यमें भाषान्तरमें Inebriarted by insolence यह शब्द सरकारी भाषांतरोंमें डाले गये हैं इसमें Insolence शब्द अनुवाद-कर्ने अपने गिरहसे डाला है । Insolence शब्दके लिये मूलमें कोई शब्दही नहीं है । इसके सिवाय " अधिकारमदसे उन्मत्त " यह शब्द मेरे नहीं हैं किन्तु यह बर्कके हैं । सर डब्ल्यु वेडरबर्नने भी सन् १८८४ की १९ मईके बम्बई गजटमें अपने एक लेखमें यही लिखा है उपरोक्त शब्दोंका भाषांतर Blinded by the intoxication of authority ऐसा होना चाहिये ।

लोगोंके शांत होनेपर भी पायोनियरने आन्दोलनवालोंको असंतोषका उत्पादक कहा है, इस कारण उसके मतका मुझे खण्डन करना अवश्यही था । मि० गोखले रासबिहारी घोष वगैरा गृहस्थोंके विचार कई जगह इसी प्रकारके प्रसिद्ध हुए हैं ।

" एक देशके दूसरे देशपर राज्य करनेका हेतु केवल एक स्वार्थ होता है " मेरे इस वाक्यके समान कई एक अङ्गरेजोंने भी अपने लेख और स्पीचोंमें लिखे और कहे हैं । श्रीयुक्त तिलकने इसके उदाहरणार्थ मिस्टर एस एस थोरबर्न पंजाबके भूतपूर्व माली कमिश्नरका एक वाक्य पढ़ सुनाया जिसका आशय यह है कि " हिन्दुस्तानपर हम लोग स्वार्थके लिये राज्य करते हैं । परराष्ट्रोंके साथ लिखापढ़ी करनेके समय

हिन्दुस्तान देशको अपनी इच्छानुसार लूट खाने, समान प्रतीत होते हैं। यह बात छिपा नहीं सकते" इसी प्रकारके मेरे मन्तव्य हैं।

हिन्दुस्तानकी राज्यप्रणालीके विषयमें तीन प्रकारके मत हैं।

(१) केवल हिन्दुस्तानियोंके लिये हिन्दुस्तानका राज्य चलाया जाये।

(२) इङ्गलेण्डके हितके लिये हिन्दुस्तानमेंसे चाहे जिस प्रकारकी सम्पत्ति पैदा कीजाये।

(३) अङ्गरेजोंका स्वार्थबुद्धि होने हुए भी जहांतक बने वहांतक यह स्वार्थ कुछ सुधरा हुआ होना चाहिये।

इन तीनों मतोंमेंसे मुझे तीसरा मत प्रसिद्ध है। मैंने अपने लेखमें यही कहा है कि हमारे हाथमें अधिक सत्ता होना चाहिये फिर्यादीके बैरिस्टर भी मेरे माथे यही दोष मढते हैं मैंने खुद बादशाही कमिशन के आगे अपना इसी प्रकारसे मत प्रतिपादन किया है कि लोगोंको राज्यमें अधिक अधिकार होना चाहिये और यही मैंने लिखा है मेरा वहांका कथन तो राजद्रोही हुआ नहीं परन्तु लेख ठहराया गया। यह क्या कम आश्चर्यकी बात है।

'अधिकारियोंकी राज्यप्रणाली सदोष होनेसे लोगोंको असह्य दुःख उठाने पड़े जिसका परिणाम यह हुआ कि बम सरीखे अत्याचार होने लगे।' उपरोक्त वाक्य केवल कहनेसे राजद्रोह नहीं हो सकता। पहले

पहले कर्मचारीवर्गसे देशका हित हुआ होगा परंतु अब उस पद्धतीसे लोगोंको अत्यन्त दुःख उठाना पडता है। लोगोंकी अब यह इच्छा है कि इस पद्धतीमें फेर बदलकर दिया जावे। यह वादविवाद आज ३०—४० वर्षसे चल रहा है "पाश्चिमात्य शिक्षणके प्रसादके कारण देशकी जो आज दशा है वह आगे कायम रहना असंभव है" इसके सप्रमाण कारण देकर मैं। उपरोक्त बात अपने लेखमें सिद्ध की है और यही बात मैं यहां भी स्पष्ट तौरसे कहता हूँ। जो यह महत्वाकांक्षा राजद्रोही हो और ऐसी महत्वाकांक्षा मनमें उत्पन्न होनेसे मनुष्य दोषी होता हो तो मैंने उदाहरणार्थ अनेक पुस्तकोंके हवाले आपके सामने पढकर सुनाये हैं। वह सब पुस्तकें सरकारको जप्त करके जप्त देना चाहिये।

मार्च सन् १९०८ में मजटपर वाद विवादके समयमें और कांग्रेसमें १९०६ सालमें आनरेबल गोखले और डाक्टर रासबिहारी घोषने अपनी स्वागत वाली स्पीचोंमें भी इसी मतका समर्थन किया है। "लोकराज्यके राज्य कार्योंमें यदि अधिक अधिकार न दिये जायेंगे तो हिन्दुस्तानमें रूस और आयर्लेंडके समान परिस्थिति उत्पन्न होजावेगी।" डाक्टर रासबिहारी घोषके इन्हीं शब्दोंपर स्टेट्समेनने लिखा था कि उनका सम्बन्ध गुप्त दलसे होना चाहिये। उनको अपनी स्पीचका खुलासा करना चाहिये ऐसा भी उस पत्रने लिखकर डाक्टर घोषको एकप्रकार

लेखोंपर टीका करते हुए कहा कि Martial Law and damned non sense ऐसी जो उन्होंने सलाह दी है सो वह आसुरी है। मुत्सद्दी गृहस्थोंके योग्य यह उपाय नहीं हैं। यह बात मैंने कोटिक्रमके साथ बड़ी शांतिके साथ सिद्ध कर दिखाई है। मेरा कोटिक्रम कुछ नवीन और अश्रुतपूर्व नहीं है जो बात ३०—४० वर्षसे कहते चले आये हैं यही नेक सलाह बमके अत्याचारके बाद मैंने अपने पेपरके मरियेसे सरकारको दी है। लोगोंके मनोंपर जो परिणाम आज २५ वर्षमें हुआ है उससे भयंकर राजद्रोहका परिणाम आजही उत्पन्न होनेका कारण कुछ अभुतपूर्व हुआ होगा जिनको सरकारके पक्षने अबतक नहीं दिखलाया।

"बड़ेबड़े अंग्रेजी अधिकारियोंका खून करनेसे अंग्रेजी राज्यकी इमारत एकमारगी न गिर पड़ेगी" ऐसा मैंने स्पष्ट लिखा है और बम फेंकनेवालोंके कृत्यपर "लाचारीके दर्जे त्रागा" मैंने अपना मत दियाहै।

त्रागाका मतलब।

"त्रागा" शब्द मूलमें गुजराती भाषाका है उस भाषामेंसे मराठीमें यह शब्द रूढ हुआ है। इसका अर्थ यह है कि बलवान पक्षको अथवा सत्ताधारी पक्षको अर्जियां करनेसे अथवा विनती करनेसे दुर्बल प्रजापक्ष अशक्त होनेपर अपनी दाद फिर्याद लगानेके लिये वह खुदको तकलीफ पहुंचाता है। बलवानके दर्वाजे पर जान देदेना, शरीरपर चोट मारना या घाव करना वगैरा उपाय निर्वाणके हैं, निराशा होनेपर त्रागा होता है। य

फेंककर प्रगा करके पागल लोग अपनेही नाशको कारणीभूत होते हैं ऐसा भी मैंने स्पष्ट लिखा है।

"इस समयकी राज्यपद्धती जैसे बने उतनी जल्दी सुधारनाही हितकारक होगा ऐसा हम जोरके साथ कहनेके हकदार हैं" इसके समान इतर अत्याचारोंको जड़पेड़से नष्ट करना हो तो राज्यपद्धतीमें सुधार करनाही होगा ऐसा मैंने कहा है सिविल सर्विस डिनर (भोजन) के समय लार्ड मार्लेने जो विचार प्रगट किये हैं वही विचार मैंने एक महीने पहले जाहिर किये थे उसमें अन्तर इतनाही है कि लार्ड मोर्ले जो सुधारणा करनेवाले हैं उनसे कहीं बढ़कर सुधारणां हमको चाहिये। लार्ड मोर्ले साहबके विचारोंसे मिलते जुलते विचारोंको पहलेही प्रसिद्ध करना राजद्रोहकारक नहीं है यह मैं स्पष्टतासे कहनेका साहस करता हूँ। पायोनियरकी राक्षसी सूचनायें होवें तो भी हमारी सूचना ओंकी ओर सरकारका ध्यान जावे यह हमारा और हमारे देशका दुर्दैव है ऐसा मैंने प्रतिपादन किया है।

देशी भाषामें निकलने वाले वर्तमानपत्रोंको जो सरकार बंद करना चाहती हो तो निराली बात है परन्तु जो वे जारी रखे जावें तो उन्हें प्रजापक्षीय मतकोंही सरकार के कानोंतक पहुंचाना चाहिये। कर्मचारी दल पत्रोंको यथासमय योग्य उत्तर देनाही उनका काम है

"पायोनियरके वाही तवाही लेखोंके प्रसिद्ध होनेही इस पत्रपर मुकद्दमें फौजदारी मुकद्दमा कायम करना था" ऐसा जो बात कहे उसको मेरा यह उत्तर है कि पत्रोंपर फिर्याद दायर करनेके लिये सरकारकी पहले मंजूरी लेना पड़ती है। पायोनियर किया सिविल मि० गमरुपर फिर्याद दायर करनेके लिये सरकारसे परवानगी मांगी गईथी पर सरकारने नहीं दी। एंग्लो इंडियन पत्रोंने कितनीही नुए मुद्दोंसे क्यों न लेख लिखे हों परन्तु उनपर फौजदारी करनेकी सरकारसे सम्मति मिलती ही नहीं ऐसा अनुभव होचुका है। थोड़े दिनहुए एक एंग्लोइंडियन पत्रने लिखा था कि बनारसके हिन्दू हाई स्कूलके हेड मास्टरको बेत लगाना चाहिये, इन विचारोंका अपराध केवल यही था कि वह हिन्दुस्थानियोंसे सहानुभूति रखते हैं। इस पत्रपर फौजदारी क्यों नहीं कीगई क्या इस लिये कि यह अंगरेज है? ऐसा प्रश्न मि० ओडोनेलने पार्लामेंटमें पूछा था परन्तु इसका उत्तरही न मिला। एंग्लो इंडियन पत्रोंपर केवल एकही बात जादूसा असर रखती है और वह यह है कि कुछ वर्षोंके पूर्व डाक्टर हर्सके बारेमें पायोनियरने एक अपमानकारक लेख लिखा था। इसपर डाक्टर साहब पायोनियरके आफिसमें पधारे और उसके सम्पादकको घोड़ेके चाबुकसे उधेड़ दिया मगर यह फौजदारी केस करनेकी झंझटमें न पड़े, परन्तु जो जीमें आया सोही स्पष्ट स्पष्ट बकने लगे। पत्रकारोंको इसप्रकार सौम्य उत्तरही हमारे मत पसन्द

सर्टीफिकट है। यदि ऐसे पत्रकारोंको जो देशी भाषाके पत्रोंपर हमेशा बुरी आलोचना करते हैं हम योग्य उत्तर न देवें तो हमारे पत्रका अस्तित्वही काहेको होना चाहिये? कर्मचारी दलके पत्रोंको योग्य उत्तर देकर सरकारको लोकपक्षार्थ मत निवेदन करनाही हम देशी वर्तमान-पत्रोंका कर्तव्य है।

बीचकी छुट्टीके बाद ३॥ बजे फिरसे कोर्टके कामका आरम्भ हुआ और श्रीयुक्त तिलकने अपनी स्पीच शुरू की। उन्होंने कहा—१२ मई और ९ जूनके लेखोंपर फिरयाद कीगई है। ता० १९ व २६ मई और २ जूनके लेख फिरयादीकी तरफसे मेरा बुरा हेतु दिखलानेके लिये कोर्टमें पेश किये गये हैं, जिसमें १९ मई वाले अंकमें जो लेख संमत इशारे के नामसे लिखागया है वह खुशामदी लोगोंने जो सभायें इस गड़बड़से नफरत दिखलानेके लियेकी हैं उसके सम्बन्धमें लिखागया है। मेरा लेख उन प्रस्तावोंके जवाबमें था जो ऐसी सभाओंमें पास किये गये थे। मेरे लेखका आशय भारतसरकारसे यह कहनेका था कि वह इस गड़बड़को जिस तरह हो बंद करदें लेकिन शासन प्रणालीमें कुछ सुधार जरूर करे। मेरा यह लेख राजद्रोही नहीं है और इससे भली प्रकार मेरा इरादा जाहिर होता है। १२ मी मईका लेख, मैंने जब लिखा था तब कुछ गोरे अखबारों को सम्मति पढ़चुकाथा,

इनमेंसे कुछ सम्मतियां मेरी सम्मतिसे मिलती हुई हैं और कुछ सरकारी अधिकारियोंसे लार्ड महोदयने यह स्वयं कहा है कि मैं उन सुधारों को जिनका करनेका विचार मेरा था इस अशांतिके कारण रोकूंगा नहीं। इंगरेजों की राय दो प्रकारकी थी. जिनमेंसे एक हिंदुस्तानियों की रायसे मिलती थी और दूसरी मि० रीस आदिकीसी थी, जोकि कहते हैं कि इस अशांतिके दबाने के लिये इससेभी ज्यादा सख्ती के उपाय काममें लाना चाहिये मेरे यह विचार कुछ नये नहीं थे बल्कि लेजिस्लेटिव कौंसिलके मेम्बरोंने भी यही विचार प्रकाश किये हैं।

[illegible]। अगर कोई कार्रवाई बेजाकी गई थी तो सरकारके उसके दबानेका अधिकार था लेकिन इन दबानेके उपायोंपर सम्मति प्रकाश करनेका जितना अंगरेजी अखबारोंको अधिकारथा उतनाही हिन्दी पत्रोंकोभी अधिकार था। श्री० तिलकने अपने २ और ९ जूनवाले अंकोंको पढ़कर और कहा यह उन आरोपों के जवाबमें हैं जो राजनैतिक सुधारा चाहने वालों पर लगाये गये थे, वह यह हैं कि यद्यपि यह लोग बमके कामसे घृणा करते हैं परंतु साथही साथ सरकारके इन जुल्मी कायदे के मददगार भी नहीं थे अर्थात् बमसे बनावटी घृणा रखतेथे मैंनेभी अपने लेखमें बम फेकनेसे घृणा दिखलाई है और सख्तीके उपायसेभी।

श्री० तिलकने अभी अपना भाषण समाप्त नहीं कियाथा कि इतने में अदालत उठगई

मङ्गलवार ता० २१ जुलाई सन् १९०८

सातवां दिवस.

आज फिर ११॥ बजे श्रीयुत बाळ गंगाधर तिलकने उठकर न्यायासनके संमुख कहा कि "न्यायमूर्ती साहब और जूरी साहिबान ! ९ जूनके आर्टिकलको मैं अक्षरशः पढ कर सुना चुका हूं, इसमेंके लेख पहले लेखोंसे भिन्न हैं इन लेखोंमें स्फोटक द्रव्यका कायदा और प्रेस ऐक्टके ऊपर टीका की गई यह दोनों कायदे एकही बैठकमें पास कर दिये गये हैं, इन लेखोंपर टीकात्मक मैं दूसरे अवतरण पढकर सुनाऊंगा।

जैसा १८८३ में इंग्लंडके स्फोटकद्रव्योंका कायदा पास हुआ था वैसाही यह कायदा है ऐसा कहा गया है, ८ जूनके स्फोटक द्रव्यका कायदा Explosive Act पास हुआ यह तारसे मिला, उस थोडेसे सारांशके आधारपर ९ जूनका आर्टिकल मैंने लिखा है।

प्रेस ऐक्ट पास होनेके वक्त हिन्दी सभासदोंने कौन्सिलमें उसके पास होनेमें अपनी नाखुशी दिखलाई है। यद्यपि अपना विरुद्ध मत नहीं दिया हिन्दी सभासदोंका बहुमत होना अशक्य है लेकिन उन्होंन

कौंसिलके सामने उसपर अपनी दलीलें पेशकी हैं उन्होंने यह भी कहा है कि लोगोंको जिस स्कोटिश ढंगके कायदेके पास होनेसे तक लीफ उठानी पड़े ऐसा कायदा पास करना ठीक नहीं है। यह कायदा १८८२ ई० के कायदेके मुताबिक नहीं है और इसके पास होनेपर अत्याचारोंका बन्द होना भी सम्भव नहीं यह दलील नवाब सय्यद मोहम्मद साहब मद्रासके सभासदने पेशकी थी यहां देशी पत्रोंने भी लिखा है।

यह उपायही नहीं है ऐसा मैं नहीं कहता परन्तु यह उपाय चल नेमल्य नहीं है ऐसा मेरा मत है। (इसके बाद सन् १८९७ में जो जुलूस किये गये उनका यहां उल्लेख किया गया है।)

मुद्रणस्वातंत्र्यकी यदि कहीं आवश्यकता है तो वह हिन्दुस्तानमें ही है। क्योंकि यहांके लोग जाहिल हैं। जुल्मी राज्यपद्धतीको रोक नेके लिये मुद्रण स्वातन्त्र्यकी जरूरत है ऐसा नार्टनका मत है 'बुद्धिभेद' के मानें Error of Judgment होना चाहिये। Aberration of intelect यह अनुवाद गलत है।

"भाषण स्वातंत्र्य और मुद्रण-स्वातंत्र्यही तो राष्ट्रके जनक और पोषक हैं" इस वाक्यको समर्थन करनेके लिये Malcolm's Govt of India पुस्तकके पेज १३८ मेंसे कुछ भाग उन्होंने पढ़कर सुनाया। सुप्रीम कोर्ट और हाईकोर्टके फैसले वर्तमानपत्रोंमें प्रसिद्ध

होनेसे राज्यशासनमें तकलीफ पैदा होती है इस लिये पेपरोंमें न छपे ऐसी अधिकारियोंकी हुक्मी थी। नोटिनके ग्रन्थमेंसे जो सन् १८५८ ई० में छपा था, कुछ भाग पढकर सुनाया गया। सरकारके विरुद्ध लोगोंमें अप्रीति व द्वेष उत्पन्न किये जानेकी शिकायत सन् १८९६ में भी किगई थी।

"जुल्मी पिशाचोंका सवार हो" इत्यादि 'भूत' यह शब्द प्रथम आनेसे भूत पिशाचका रूपक कायम रखकर यह लेख लिखा गया है जुल्मी पिशाचोंसे मतलब उपायके हैं इन उपायोंका लार्ड मोर्लेको अपने कब्जेमें रखना चाहिये लार्ड मोर्लेको मांत्रिक कहा है परन्तु भाषांतरमें मराठी वाक्यका अर्थ नष्ट हो गया है। राष्ट्रकी उन्नतिको कुचल डालना बरन इतनाही नहीं किन्तु उसे पीछे ढकेलनेको "दबपशाहीका उपाय" कहते हैं (Science of Politics by Amos नामक पुस्तकमेंसे एक नमीर पढकर सुनाई) इसके बाद श्री० तिलकने Exhivos Speeches नामक पुस्तकमेंसे एक और नमीर पढकर सुनाई। इनका सारांश यह था कि सार्वजनिक वादविवादकी स्वतंत्रता और मुद्रणस्वातंत्र्य जो इंग्लेण्डमें न होती तो उस विषयके आन्दोलनका प्रचार कहांसे होता

"सरकारकी बुद्धि कैसी बहक गई है देखो" इसका भी भाषांतर गल्त है। बमगोलोंके कारण समाजमें उलट पलट होनेवाला यानी

बंगालके लोग 'अनार्किस्ट' हैं ऐसा खुद सर हार्वे एडमेसनने कौंसिलमें कहा था। यूरुप और हिन्दुस्तानके बमगोलोंमें (Fall of Czardom) धरती आसमानका अन्तर है*।

सर हार्वे एडमसनने कौंसिलमें यह स्वयं कहा था कि बमगोलोंके कारण समाजमें उलट पलट हो जावेगा अर्थात् बंगालके निवासी मनुष्य "अनार्किस्ट" हैं।

भकसे उड़जाने वाले पदार्थ जिस २ कार्योंमें और कारखानों में काम आते हैं वे वे कार्य्य और कारखानें बन्द करना पड़ेंगे यह मत 'एम्पायर' पत्रने प्रसिद्ध करके कहा है।

श्री॰ तिलक—मेरे लेखोंसे राजद्रोह और द्वेष किसप्रकार होसकताहै? जबकि हिन्दीपत्रोंके विचार मेरे समानही हैं लोकपक्षका सर्व साधारण मत यही है और सरकारभी कुछ २ बातें मानती हैं।

चोरी, खून और डकैतीके समाचार सब पेपरोंमें छपा करते हैं तो क्या पत्रकारोंके सिर इन गुनाहोंके प्रसारका दोष मढा जा सकता है? बमका सविस्तर वर्णन इस्लोइंडियन पत्रोंमेंही अधिकतर दिया है फिर उन पत्रकारोंपर बमके प्रसारको उत्तेजन देनेके दोषमें फौजदारी क्यों न की जावे? मगर यह बात मैं नहीं छिपा सकता कि बमकी जैसी बातोंके बारेमें खुलासा देनेसे राजद्रोह होता है। बमका असर

वायुके मानिन्द होनेसे, बम बन्द नहीं होगा यह कहनेका मेरा उद्देश्य है।

छण्डन मार्निंग रिव्यूके कलकत्तेके सम्वाददाताने ओरिएण्टल रिव्यूमें जो लेख लिखा था वह श्री० तिलकने पढ सुनाया, परन्तु श्री० ज० ग्रान्सनने ईसपर हरकत लेनेसे न्या० मू० दावरने पूछा कि यह आपने क्यों पढा ? श्री० तिलकने जवाब दिया कि मेरे समानही कुछ अंग्रेजों-के भी विचार हैं केवल यह दिखलानेके लिये पढ़ा।

मेरे लेखके विचारोंसे मिलते जुलते विचार कॉंटेम्पररी रिव्यूमें दिये हुए Ethics of Dynamite में भी दिये हुए हैं, बम बंद करनेके लिये नये एक्ट पास करना, गुप्त पुलिसका बढाना, और जुल्मी शासन प्रणाली स्वीकार करना नहीं किन्तु फैलते हुए असंतोषको बंद करनेसे बम नष्ट होजावेंगे इसका अर्थ यह कदापि नहीं हो सकता कि मैंने बमको उत्तेजन दिया है, जो बात मैंने कही है वही सब देशी वर्तमान-पत्रोंने भी मुक्तकंठसे कही है, अगर किसीने गदरके बारेमें पुस्तक लिखा और उसकी आलोचना किसी वर्तमानपत्रमें कीगई तो क्या उस अखबार नवीसको गदरके प्रसार करनेका या गदरको उत्तेजन देनेक दोष दिया जा सकता है ? जिस रोज दोनों कायदे पास हुए उसके दूसरेही दिन टीकात्मक लेख लिखे और बमका सविस्तार वर्णन दिया, इसमें मैंने दोष क्या किया यह मैं नहीं जानता, अब फिर्यादी की

तरफसे ऐसा कहा जावेगा कि लेखकका गुप्त अर्थ बम फेंकनेका उपदेश करनेका है। यदि यह बात सही मानी जाय तो प्रत्येक लेखमेंसे चाहे जैसे गुप्त अर्थ निकालकर पापमूर्ति उन लेखकोंको सजा दे सकते हैं।

श्री० तिलकने सुबोधपत्रिका, ज्ञानप्रकाश और इंदुप्रकाश के कई अंक निकालकर दिखलाये कि इन पत्रकारोंके विचार मेरे समान ही हैं। लोकपक्षका, सर्वसाधारण मत यही है और सरकारभी कुछ कुछ बातें मान्य करती है फिर मेरे लेखोंसे राजद्रोह अथवा द्वेष किस प्रकार उत्पन्न हो सकता है?

बङ्गालियोंके बारेमें मैंने जिस प्रकारका अपना मत प्रगट किया था उसी प्रकारका मत पायोनियरने रशियामें बमसे होनेवाले अत्याचारोंके सम्बन्धमें अपना मत दिया था। पायोनियरकी स्तुतिके समानही लण्डन टाइम्सका मत है, इस मतको आधारभूत पकड़कर मैंने बम अत्याचार लेख लिखा था।

दादा भाई नौरोजी

के 'प्रास्टर्टी एण्ड ब्रिटिशरूल' नामक पुस्तकमेंसे टामसमनरोकी नजीर उन्होंने पढ़ी "मोगल बादशाहोंके समान न तो अङ्गरेज लोग .. हैं और मोगलोंके इतना इनका उदकार भी नहीं है" यह बात

कई अङ्गरेजोंने लिखा है और उन्हें यह पसंद भी है, हथियारोंके कायदेके बारेमें सर फीरोजशाह मेहताने १८८८ सालके कांग्रेसमें जो वाक्य कहे थे उसी प्रकारके मेरे वाक्य इन लेखोंमें दर्ज हैं। राष्ट्रके पौरुषका व्य हथियारोंके कायदेने किया है हमारे पास हथियार न होनेसे राष्ट्र नामर्द बनगया, डिसेंट्रलिजेशन कमिशनके आगे, भी मैंने उसी बातका आन्दोलन किया है हयग्रीवाचार्यकी आत्महत्याका जब श्री० तिलक उल्लेख कर रहे थे तब मन्सन साहबने कहा कि यह बात कभी हुई या नहीं इसका निर्णय नहीं हो सकता, इसलिये इसका जिक्र न किया जावे। न्या० मु० दावरने ऐडवोकेट जनरलकी राय कायम रखी और श्री० तिलकने उस नजीरका फिर उल्लेख नहीं किया।

परन्तु साथही उन्होंने यह कहा कि हयग्रीवाचार्यके बारेमें मुझे सरकारी रिपोर्ट मिल जावेगी तो यह नजीर दाखिल मैं फिर पेश करूंगा, इसके बाद मेजर इवान्स बेलकी पुस्तकमेंसे एक नजीर पढ़ी और लार्ड मोर्लेका स्पीचके कुछ भाग जो सिविल सर्विस डिनरके वक्त हुई थी पढ़े प्रजाको राज्यमें अधिक अधिकार दिये बिना राज्यशासनका बिना खटके चलना असंभव है, इंग्लैंड यह शासन आगे चला नहीं सकता" "बम एक मंत्र है जादू और टोना है" बमके अत्याचारकी हकीकत देते हुए कलकत्ता और बम्बईके एंग्लोइंडियन पत्रोंने भी इसी प्रकार बमका वर्णन किया है, स्टेट्समैन पत्रोंके विषयमें इन

स्त्रियोंका सुन्दर शृंगार

कमला तेल.



स्त्रियाँ चाहे जैसे अच्छे अच्छे रेशमी और जरीके चम चमाते हुये कपड़े पहने दिखानेके लिये चाहे जितना सोना चांदीका गहना हीरा मोती आदि जवाहरातोंसे जड़ा हुआ पहने पर जबतक उनके सिरके बाल काले मुलायम चमकीले सुगंधित और लम्बे नहीं तबतक उनका सब शृंगार फीका है। स्त्रियोंके शृंगारका महाराजा -कमला तेल है हिन्दुस्तानमें कोई ऐसा तेल है नहीं जो इसकी बराबरी कर सके इसके छिपे हुये उत्तम २ गुणोंके कारण हमको बहुतसे सार्टीफिकिट मिले हैं। दाम एक शीशी सिर्फ ॥) बारह आना वी पी खर्च अलग, मिलनेका पता-मेसर्स आदम अली अब्दुल्लाभाई एन्ड को०-भाजी पाला लेन

बंबई.

शास्त्रवेत्ताओंका भी यही मत है। यह मत पुष्पायुपत्रने प्रसिद्ध करते हुए कहा है कि स्फोटक द्रव्य जिस जिस काममें या कारखानोंमें काम आते हैं वह सब धंधे बन्द करना पडेंगे।

लार्ड कर्जनको रशीय अमीर काबुलको मालूम होनेपर धखेडा होगा ऐसा लार्ड मोर्लेने कहा है फिर लार्ड कर्जनपर फौजदारी क्यों न कीगई। इससे यह पायाजाता है कि प्रचलित बातोंका निकी चलनेके समय विचार स्वातंत्र्यकी आजादी दी जाती है। पोलिसके कामों पर टीका करनेसे सरकारकी इज्जत जाती है ऐसा कुछ लोग समझनेलगे हैं मगर यह महज खाम खयाली है। सरकारके कामोंपर नापसंदी दर्शानेका हक हमको १२४ अ धारामेंही देदिया है। प्रजापक्षका मत बेधडक होकर सरकारके कान तक पहुँचानेका हमारा कर्तव्यकर्म है और वही फर्ज बजानेमें राजद्रोह नहीं हो सकता।

गुप्तअर्थ।

मेरे लेखोंमें कूट कूटकर भरा है ऐसी फिरियादीकी तरफसे कदाचित् सूचना होगी परन्तु मेरे लेखमें स्पष्ट शब्द हैं, यदि उनका ठीक ठीक अर्थ एक तरफ रखकर जो जीमें आया वही अर्थ कर लिया तो इसका इलाज क्या है गुप्त अर्थ निकालनेका एकदफे आरम्भ होनेसे चाहे जिस मेंसे वह सहज निकल सकता है, परन्तु ऐसा करना ठीक नहीं इस दशामें पत्रकारको राजद्रोहपर सजा देते हुए कोई दिक्कत न मालूम होगी

परन्तु ऐसे समयमें एक बात याद रखना चाहिये कि पत्रकारको कितनी अदमफुरसतसे अपने लेख लिखना पड़ते हैं, केवल इक्के दुक्के शब्दों परसे राजद्रोह ठहराना बड़ा कठिन काम है।

सबूतमें दिया हुआ कार्ड।

मेरे जप्त किये हुए कागजातों में फिर्यादीने एक कार्ड दाखिल किया है, उसका मैं अब खुलासा करता हूं, फिर्यादीको यह कार्ड इतने महत्वका मालूम पड़ा कि उसका फोटो लिया गया कदाचित यह कार्ड मोर्ले साहबके अवलोकनार्थ भी विलायत को चला गया है। इस कार्ड पर स्फोटक द्रव्य सम्बन्धी दो पुस्तकोंके नाम लिखे हैं, इसपरसे ऐसा तर्क किया गया है कि मेरा सम्बन्ध बम वगैरा बनानेवाले किसी कारखानेसे है यह कार्ड मेरे उन कागजोंमें मिला है जो टेबलके दराजमें पड़े थे जिसमें ताला तक नहीं लगा है यह कार्ड जिन कागजातके साथ पाया गया है उसका आपको अवश्य विचार करना चाहिये। हर रोज काममें आने वाले कागजोंमें यह कार्ड पड़ा था मैंने उसे बड़ी हिफाजतसे सात तहोंके अन्दर छिपाकर नहीं रखा था मैं कह चुका हूं कि स्फोटक द्रव्योंमें मिट्टीके तेलका भी समावेश होता है इस लिये इस विषयपर मैं शीघ्रही एक चर्चात्मक लेख लिखने वाला था इस लिये, उसकी व्याख्या जाननेके लिये मैंने एक शास्त्रीय क्याटलॉगमेंसे इन्छित पुस्तकोंके नाम ढूंढ निकाले और उनके नाम इस कार्डपर स्मरणार्थ लिख लिये, एकदफे

उन्हें फाटकर फिर लिखा है, इस कार्डपर पुस्तककर्ताके नाम और कीमतें भी दर्ज हैं (इस समय श्री० तिलकने यह क्याटलग जूरीको दिखलाया) नहीं मालूम ऐसे सादे कार्डपर फिर्यादी अब क्या न्यूह रचेंगे बमकी और भारत वर्ष के सैनिक बलके विषयमें लिखते समय मैंने सरकारी सैनिक बलका हास्य करनेका प्रयत्न नहीं किया किन्तु यह दिखलाया है कि भकसे उड़जाने वाले मसालोंका कानून पास होनेसे यह अराजकता सिथिल नहीं होगी किन्तु लोगोंको अपने देशके शासनमें कुछ भाग मिलनेसे यह गड़ बड़ी मिट सकती है।

इस लेखकी बाबत कि "बम सहजमें बनसकता है और उनके लिये बड़े कारखानों की आवश्यता नहीं है" श्री० ति० ने कहा कि इससे मेरा यह आशय कभी नहीं था कि "भारतवासी बम बना सकते हैं" मेरा असली आशय यह था कि बम बनानेकी विद्या भारतवासी जान गये हैं बम बनानेकी विधि और भिन्न २ वस्तुओंकी आवश्यकता है उनके बनानेके लिये ही मैंने यह राय जाहिरकी थी जो टाइम्स ऑफ इंडिया या गवाहोंने अदालतमें जाहिर किई है। दूसरे अखबार वालोंनेभी अपने २ अखबारों में भी यही लिखा है। जब उनके ऊपर अभियोग नहीं चलाया गया है तो मैं नहीं समझता कि मेरे ऊपर क्यों चलाया जाय। मेरा लेख सरकारको बतौर चितावनीके था कि अब भारतवासी बमों का बनाना जानगये हैं इसकारण, अब जुल्मी शासन

करनेसे काम नहीं चलेगा। मैंने सम्मति दीथी कि भारत वासियोंको यह अधिकार देदियें जावें जिन्हें कि वह सरकारसे याचना करते हैं मेरे इस लेखका आशय स्फोटक द्रव्योंके कायदे और प्रेस एक्टका विरोधी है। मैं समझताहू कि जब कानून पास कियां गया था तब भारतवासियोंका उसपर सम्मति देने और उसके परिणामको बयान कर देनेका अधिकार था।

जज—तुम्हारा भाषण कबतक समाप्त होगा

श्री॰ ति॰—शायद संध्या तक समाप्त होजाय।

विलायतमें एक कानून है कि यदि जूरीके सम्पूर्ण मनुष्य मिलकर एक सम्मति न देवें तो वह मुकदमा फिरसे होता है। यद्यपि भारतका कानून वहांके कानूनसे भिन्न है, परन्तु लोग आपमेंसे एकने भी मुझको ठीक बतलाया तो मेरे वास्ते यह एक बड़ी भारी सहायता होगी मुझे ऐसा ही दृढ़ विश्वास है। मैंने Attempt (कोशिश) शब्दका भली प्रकारसे अर्थ समझा दिया है। और अब आप यह विचारें कि जो कुछ मेरे लेखमें वह भिन्न थे या नहीं।

इसके बाद अदालत उठगई मुकदमा दूसरे दिनपर मुल्तवी होगया।

मेरे दूसरे लेखपर १२४ अ और १५३ अ इन धाराओंके मजूमिब मुझपर दोष रक्खा गया है, लेकिन यह नहीं बतलाया गया कि लेखका भाग किस धाराके अंदर आता है इससे मुझे उत्तर देनेमें

बनी कहलाती पड़ती है। क्योंकि इन धाराओंका मतलब थोड़ासा भिन्न वर्णित है, जाति जातिमें वैमनस्य उत्पन्न करनेका, प्रयत्न करनेका दोष मुझपर लगाया गया है। प्रयत्न करनेका दोष होनेके हेतुसे अब भविष्य न रहे, परन्तु प्रयत्नके लिये स्थल, काल, और परिस्थितिका सबूत फिर्यादीने नहीं दिया, तबतक मुझे गुन्हेगार कोई कैसे ठहरा सकता है ! जातिका यहां क्या अर्थ है, हिन्दू मुसल्मान इत्यादिकी तरह अधिकारियोंकी कोई जाति नहीं है, इस लिये यह धारा यहां लगाही नहीं सकती। जूरीको राजद्रोहके मुकदमेमें उपरोक्त बातोंपर सबसे प्रथम ध्यान देना चाहिये।

मैंने यह विषय आप लोगोंके समाने साफ साफ तौरपर पेश किये हैं उनका विचार न्यायमूर्ती और जूरीको अवश्यही करना चाहिये जब किसी बातमें वाद खड़ा होगया तब उसके उत्तरमें लेख लिखनेका हक होना चाहिये। पिनलकोडकी ९९ धारामें स्वतके जान और माल्का संरक्षण करनेका हक समका, समान है, मालमें इज्जत भी शामिल है, एंग्लो इंडियन पत्रोंको हमारे समाजको जिस प्रकार गाली गलौज देनेका अधिकार है, तो क्या हमको उन्हें उत्तर देनेका अधिकार नहीं ! क्या हम वह गालियां चुपचाप सहन करलेवें ! मैं कहता हूं कि उनके जैसे कड़े लेख होंगे वैसाही हमको भी कड़ा हमला करना चाहिये, " माल " पत्रके केसमें सचाकी सीमा बतलाई गई है, पुर्विन और

स्टीफेन्सनका मत, मैंने आपके सामने पेश किया है। ऐसे मुकदमोंमें इन धाराओंके स्पष्टीकरणार्थ इङ्गलेण्डमें भी मुकदमे इस प्रकारके हुए हैं उनकी तरफ थोड़ा ध्यान देना चाहिये। मेरे लेखोंका जाति समाजपर क्या असर हुआ होगा इस बातका सबूत फिर्यादीको देना चाहिये था। इङ्गलेण्डमें इन मुकदमोंका फैसला किया गया है १८४८ का पांस नम्बर कायदे कौन्सिलमें पास की गयी तब ऐसा कहा गया कि इङ्गलेण्डके वर्तमानपत्र जिस प्रकार स्वतन्त्रतासे लिखते हैं उसी तरह हिन्दुस्थानके अखबार भी लिखा करें, टीका करते समय लेखमें व्यक्ति विषयक चाहे जैसे कड़ेसे कड़े शब्द उपयोगमें लाये जावें परन्तु शर्त यह है कि वह लेख वर्णनात्मक होना चाहिये। बस इसी भाषणके अनुसार मैंने लेख लिखे हैं और इस अपने कथनको पुष्टी देनेके लिये मैंने इतनी नजीरें पेश कीहैं। यह लेख बदमाशियोंके लिये नहीं लिखे गये थे और आयर्लेण्डकी स्थितिके समान हालत नहीं है। मैंने लोगोंको उभारा है इसका सबूत सरकारी पक्षको देना होगा। लार्ड सालिसबरी और लार्ड चर्चिल पर दगा करनेके लिये लोगोंको उत्तेजन देनेका चार्ज रक्खा गया था और इस विषयपर ग्लेडस्टोन साहबने पार्लमेण्टसभामें जो भाषण कियाथा वह मैंने आपको पढ़कर सुनाया है, हेतुके लिये सबूत चाहिये। जिन लेखों पर मुकदमा चलाया गया है उसके सबूतमें दूसरे लेख पेश किये गये हैं, परन्तु मेरी सम्मतिसे केसरी परके पहिले मुकदमेमें यह प्रथा मंजो-

स्य बतलाई है। क्रीपमें Marathi articles are translated ऐसा मैसन साहबने कहा है मैं भी कहता हूँ कि क्षेप मेरे मूल लेखोंपर न रखकर इन भाषांतरोंपर रखा गया है जिनमें मैंने कई गलतियां दिखलाई हैं इन अशुद्धियोंके साथही फिर्यादकी सब इमारत जमीनसे मिल जाती है यदि आपके मनमें विचार हो कि यह बात ठीक नहीं तोभी इस संशयका फायदा आरोपीको देना चाहिये।

बुधवार ता० २२ जुलाई सन १९०८ ई०

आठवीं पेशी।

रोजकी तरह आज भी कोर्ट प्रतिष्ठित पुरुषोंसे भरी थी ठीक ११॥ बजे कोर्टका काम शुरू हुआ, श्री० तिलकने कहा न्यायमूर्ती ! कलतक के भाषणमें मैंने अपने उन लेखोंके विषयमें मुफस्सिल तौरपर सब बातें समझाकर कही हैं जिन पर आक्षेप रक्खा गया है, आपको यह ध्यानमें रखना चाहिये कि मैंने बमका निषेध जोरसे किया है, और उसी प्रकार सरकारके सख्तीके उपायोंका भी निषेध किया है, इंग्लेण्डमें लोगोंने पूरीकी मार्फतही अखबारोंकी स्वतन्त्रता कायम रक्खी है, मैं आपसे भी यही निवेदन करता हूँ कि आप भी हिन्दुस्थान के वर्तमानपत्रोंकी स्वतन्त्रता कायम रक्खें मैंने कैसे समयमें और किस हेतुसे यह लेख लिखे हैं इसका भी आप विचार करें, यदि आप विचार पूर्वक आज इस मुकदमे

पर अपना योग्य मत देंगे। जो आपका मत निष्पक्ष होगा, क्योंकि यह प्रश्न इस देशके सब वर्तमानपत्र सम्बन्धी है। आपके सिरपर बड़ी भारी जवाबदारी है, मेरे लेखोंको पढ़कर लोग उत्तेजित हुए हैं या नहीं इसका विशेषतर आपको विचार करना चाहिये, कोर्टके बाहरकी सब बातोंको आप भूल जावें। एडवोकेट जनरल आपको शायद कुछका कुछ समझावेंगे और न्यायमूर्ती भी आपको कायदेका अर्थ समझावेंगे परन्तु आप इनकी बातों पर ध्यान न देकर लेखोंके हेतुकी ओर दूर दृष्टि देकर अपना मत प्रकाशित करें, इसमें सरकारकी मर्जी और गैर मर्जीकी तरफ देखना नहीं है आप कायदेके संरक्षक हैं, मुझे आपही पर कुछ भरोसा है, आप अन्याय करें तब मैं नहीं कहता परन्तु सर्वसाक्षी परमेश्वरके न्यायासनके सन्मुख आपको इस बातका उत्तर देना होगा इस बातको ध्यान देकर आप इस मुकद्दमेके बारेमें अपना मत प्रकाश करें।

मेरे भाषणके समय एडवोकेट जनरलने कोई बाधा नहीं डाली। मैं उनके सन्मुख कायदेमें कुछ भी नहीं जानता। वह एक बड़े भारी विद्वान् हैं और शांत स्वभाव हैं इसका परिचय इस मामलेमें मिला है इस लिये मैं उनका कृतज्ञ हूं। उसी प्रकार जूरी महाशयोंने बड़ी शांतिके साथ मेरे भाषणको सुन लिया है। इस लिये आप लोगोंको भी मैं धन्यवाद देता हूं। मैं अपने लिये बहस नहीं करता परन्तु सब हिन्दुस्तान

नके लिये और मुद्रणस्वातंत्र्य तथा भाषणहितके स्वातंत्र्य कायम रखने के लिये इतना सिर पटक रहाहूं। मेरा क्या हित है ? मैं पांचही वर्ष कदाचित् अब और जिन्दा रहूंगा परंतु आजकी बात सार्वजनिक हितसंबंधकी है इसीलिये मैंने यह मुकद्दमा खुद चलाया है, आखीरमें न्यायमूर्तिको भी धन्यवाद देकर मैं अपने भाषणको पूरा करता हूं।

इसके बाद सरकारी बैरिस्टर मि० ब्रैन्सनका भाषण हुआ।

एडवोकेट ब्रनस्नका भाषण।

मि० ब्रन्सन—मैं जूरीसे यह नहीं कहना चाहता कि अभियुक्तको अपराधी ठहराओ या निरपराधी आपलोगोंके सामने मुकद्दमेको इस प्रकार समझा देनेका मेरा कर्तव्यहै, जिस प्रकार कि आप उचित न्याय करसकें,—मैंने, कोई बात, आपके सन्मुख ऐसी—नहीं कही है जिससे कि आप यह कहसकें—कि मैं आपको अभियुक्तके विरुद्ध अन्याय करने के लिये फुसलाता हूं या प्रयत्न करताहूं।

जहां तक मुझसे होसकेगा मि० टिळकको उस अपराध को बचाऊंगा जिसके कि वह एकही बातको बार बार दुहरानेसे अपराधी हो चुके हैं।

अभियुक्तने पिछले तीन दिन कुछ नहीं किया केवल राजनैतिक विषयों परही वाद विवाद किया है सबुत के लिये मैं मानूंगा कि

पर अपना योग्य मत देवेंगे तो आपको मत विस्मरणीय होगा, क्योंकि यह प्रश्न इस देशके सब वर्तमानपत्र सम्बन्धी है। आपके सिरपर बड़ी भारी जवाब दारी है, मेरे लेखोंको पढ़कर लोग भेदित हुए हैं या नहीं इसका विशेषतर आपको विचार करना चाहिये कोर्टके बाहरकी सब बातोंको आप भूलें जाँय। एडवोकेट जेनरल आपको शायद कुछका कुछ समझावेंगे और न्यायमूर्ती भी आपको कायदेका अर्थ समझावेंगे परन्तु आप इनकी बातों पर ध्यान न देकर लेखोंके हेतुकी ओर दृष्टि देकर अपना मत प्रकाशित करें, इसमें सरकारकी मर्जी और गैर मर्जीकी तरफ देखना नहीं है आप कायदेके संरक्षक हैं, मुझे आपही पर कुछ भरोसा है, आप अन्याय करें यह मैं नहीं कहता परन्तु सर्वसाक्षी परमेश्वरके न्यायासनके सन्मुख आपको इस बातका उत्तर देना होगा इस बातको ध्यान देकर आप इस मुकद्दमेके बारेमें अपना मत प्रकाश करें।

मेरे भाषणके समय एडवोकेट जनरलने कोई बाधा नहीं डाली। मैं उनके सन्मुख कायदेमें कुछ भी नहीं जानता। वह एक बड़े भारी विद्वान् हैं और शांति समान है इसका परिचय इस मामलेमें मिला है इस लिये मैं उनका कृतज्ञ हूं। उसी प्रकार जूरी महाशयोंने बड़ी शांतिके साथ मेरे भाषणको सुन लिया है। इस लिये आप लोगोंको भी मैं धन्यवाद देता हूं। मैं अपने लिये बहस नहीं करता परन्तु सब हिन्दुस्थान

मके लिये और मुद्रणस्वातंत्र्य तथा भाषणहितके स्वातंत्र्य कायम रखने के लिये इतना सिर पटक रहाहूं। मेरा क्या हित है? मैं पांचही वर्ष कदाचित् अब और जिन्दा रहूंगा परंतु आजकी बात सार्वजनिक हितसंबन्धकी है इसीलिये, मैंने यह मुकदमा खुद चलाया है, आखीरमें न्यायमूर्तिको भी धन्यवाद देकर मैं अपने भाषणको पूरा करता हूं।

इसके बाद सरकारी बैरिस्टर मि० ब्रैन्सनका भाषण हुआ।

एडवोकेट जनरलका भाषण।

मि० ब्रान्सन—मैं जूरीसे यह नहीं कहना चाहता कि अभियुक्तको अपराधी ठहराओ या निरपराधी आपलोगोंके सामने मुकद्दमेको—इस प्रकार समझा देनेका मेरा कर्तव्यहै जिस प्रकार कि आप उचित न्याय करसकें,—मैंने, कोई बात आपके सन्मुख ऐसी नहीं कही है जिससे कि आप यह कहसकें—कि मैं आपको अभियुक्तके विरुद्ध अन्याय करने के लिये फुसलाता हूं या प्रयत्न करताहूं।

जहां तक मुझसे होसकेगा मि० तिलकके उस अपराध को बतांऊगा जिसके कि यह एकही बातको बार, बार दुहरानेसे अपराधी हो चुके हैं।

अभियुक्तने पिछले तीन दिन कुछ नहीं किया केवल राजनैतिक विषयों परही वाद विवाद किया है सबूत के लिये मैं मानूंगा कि

अभियुक्तका विचार सत्य था जो कुछ राज्य विरुद्ध बातें उसने लिखी हैं वह भी ठीक है और कुछ सुधारनेकी भी अधिक आवश्यकता थी परंतु इस बातोंका इस मुकदमे से कोई सम्बन्ध नहीं है आप लोगोंकोभी इस प्रश्नसे कोई सम्बन्ध नहीं है कि आपा सुधार होना चाहिये या नहीं।

आपको यह दिखलाता हूं कि मैं कुछ अपने विचारसे नहीं कहता हूं बल्कि बंगालके चीफ जस्टिसने भी ऐसाही कहा है जिनकी सम्मति अभियुक्त के बहुतसे प्रमाणोंकी अपेक्षा नया प्रमाण है आपको इस मुकदमेमें केवल साक्षी के ऊपर ध्यान देना चाहिये और सर्वराजनैतिक सिद्धान्तों को जो आपने अबतक सुने हैं भूलजाना चाहिये।

एडवोकेट जनरलने मि० जस्टिस स्ट्रेचीके उस मुकदमेका फैसला दिखलाया जिसमें कि श्री० तिलकका कुछ सम्बन्ध था और इसी कारण उनको कानून चाहिये था।

फिर कहा कि मि० जस्टिस स्ट्रेचीका फैसला प्रिव्ही कौंसिलसे स्वीकार होचुका है। और अभियुक्त राजनैतिक विषय अच्छी प्रकार जानता है क्योंकि २० वर्षकी वकालतका तजुर्बा रखता है। अभियुक्त कानून जाननेवाला होकर वह कठोरशब्दोंके व्यवहार करने की अपेक्षा अपना बचाव भलीप्रकारकर सकताथा यह आपके, मेरे और अभियुक्त

तीनों के लिये अच्छा होता यदि मि० तिलक के इजहारमें ऐसी अनर्गल भूल न होती।

अभियुक्त के लिये यह कहना कि उसका मुकद्दमा न्यायपूर्वक नहीं हुआ, भूल है। उसको हर एक बात कहने के लिये (जो कुछ वह कहना चाहता था) समय देदिया गया था यदि अभियुक्तके भाषणमें सरकारकी तरफसे कुछ दखल दिया जाता तो अवश्य यह कहनमें आता कि मुकद्दमा न्याय पूर्वक नहीं हुआ। मैं जूरीके सामने मुकद्दमें की असल बात वर्णन करूंगा और मि० तिलकने राजनैतिक विषयमें जो कुछ कहा है उसके बारेमें कुछ नहीं कहूंगा। जूरी जानलेगी कि इसमें केवल तीन बातें विचारने योग्य हैं और जिनके विचारने में किसी प्रकारकी असुविधा नहीं पड़सकती। पहली बात जिसका कि उत्तर उन्हें देना था यह थी।

(१) क्या अभियुक्तने इस विद्रोही लेखको छापा या प्रकाशित किया है कि नहीं? और वह इसका जुम्मेदार था कि नहीं?

जिसके उत्तरमें आपकेपास उसका इकरार नामा मौजूद है और यही प्रमाण है कि अभियुक्तने उसको छापा। लेकिन इस बारेमें ज्यादा बहस करना बेफायदा है क्यों कि अभियुक्तने स्वयं इसको स्वीकारकर लिया है। यह लेख उसने लिखे या नहीं यद्यपि यह कोई बात नहीं है कि उसने इनको लिखे या नहीं? परंतु जब उसने छापे तो उनका जुम्मेदार वह होचुका।

(२) इन लेखोंका मतलब क्या था ? आपलोगोंको इसके यह माने नहीं लेने चाहिये जो मि० तिलकने अभी बतलाये हैं अभियुक्त आपलोगोंकी आंखोंमें धूल झोंकने का अत्यन्त प्रयत्नकर रहा है लेकिन यह बात आपको याद रखना चाहिये कि जो कुछ उसने, अब अर्थ बतलाये हैं वह कुछ और है, पर यह देखना चाहिये कि लिखते समय उसने किस अर्थमें लिखाथा, कोई मनुष्य अदालतमें ऐसा नहीं कहसकता कि मैंने बेशक कुछ राजविद्रोही लेख लिखा है । परंतु इसका आशय मेरे विचार से कुछ औरही था । यह आपका कर्तव्य है कि उन लेखोंका क्या अर्थ है सोजाने । अभियुक्तसे अब यह नहीं पूंछ सकते कि उसका क्या आशय लिखते समय था जिसको अभियुक्त जूरी के सामने अदालतमें कह चुका है । अभाग्यसे मि० तिलक के वास्ते बहुतसे राजनैतिज्ञोंकी और प्रि० ह्वी कौंसिलकी सम्मति दीगईथी । आपको यह न्याय करना चाहिये कि लिखती समय उसका क्या आशय था । आपलोगोंको अभियुक्तकी यह बात नहीं माननी चाहिये कि उसका आशय कुछ और था जबतक कि लेख के शब्दोंसे यह साबित न होजाय ।

(३) उन लेखोंका नतीजा क्या हुआ ? आपलोगोंको यह देखना चाहिये कि वह लेख अभियुक्तको १२४ की ए धारा में लाने के साक्षी हैं या नहीं ।

अभियुक्तने यह शिकायत की है कि सबूत देनेका सब भार मेरेही ऊपर रख दिया है। इस शिकायतमें कानूनके मद्दसे समय अभियुक्तकी बड़ी भूलकी है क्योंकि कार्यवाही इस प्रकारकी है।

अपने भाषणमें मि॰ तिलकने बहुत कुछ समय छूरी और जजके सम्बन्धमें बनाये हुये कानूनके ऊपर बहस करने में खराब किया है इस मामलेमें मैं अभियुक्तसे कुछ कहना नहीं चाहता किन्तु इतनाही कहे देता हूं कि जिस किसीने Lord Erskine लार्ड अर्सकाइनका जीवन चरित्र पढ़ा होगा वह इस बातका १० मिनिटमें उत्तर देसकाहै। इस अंबस पर मैंने कलकत्ता बम्बई और प्रिव्हीकौंसिलके बहुतसे फैसलोंका हवाला दिया इसबातके विषयमें कि किसी पुरुषको राजविद्रोही प्रमाणित करने में कितनी साक्षियोंकी आवश्यकताहै। इन लेखों में बुरे विचार और शत्रुता नहीं होनी चाहिये मुकदमा फैसल करने में जूरीको यह सब लेख ध्यानमें ले आना चाहिये और बाहरके सब विचारों को ध्यानसे भुला देना चाहिये। अभियुक्तने अनुवादमें चार जगह गलती निकाली है। जिसमें आजसबेरे अभियुक्तने यह भी कहा कि अनुवाद कुछका कुछ कर दिया है जिसका यही अर्थ नहीं कि यह गल्तस है बल्कि ऐसा उसके बारबाद करने के लिये किया गया, और किसी अनुवाद करने वालेपर यह बहुत सख्त इल्जाम है। अगर यह सच होता तो विचारा अनुवादक नौकरीसे बरखास्त होजाता।

अभियुक्तने अनुवादमें १८ शब्द अशुद्ध निकाले हैं और यह कहा है कि इसका अनुवाद अशुद्ध नहीं बल्कि कुछका कुछ कर दिया है यानी बिल्कुल मतलबही बदलदिया है। इन शब्दों का सुधार जैसा कि मि० तीलकने किया है मेरे ध्यानसे उनके मतलब में कुछ फरक नहीं पड़ता ।

आरोपी के कहने में ऐसा कहीं नहीं कहा गया कि सरकारके विरुद्ध किसी प्रकार की घृणा मेरे अखबार पढने वालोंके दिलों पर नहीं हुई ।

एडवोकेट जनरलने कई मुकदमोंका हवाला देकर कहा कि अभियुक्त केशरीका स्वामी और सम्पादक है इस लिये उसमें जो कुछ छपे वह उसका जुम्मेदार है ।

यह काम जूरीका है कि जो उसके लेखका आशय निकाले और उसके लेखकोही पढकर अपनी राय कायम करें । जूरीको यह बतलाना वृथा है कि यह केवल लेखोंहीसे फैसला दे, बल्कि अपने पासकी हालतोंको भी ध्यानमें रखे तथा आरोपीका अभिप्राय एक शब्द या एक वाक्यसेही जूरीको नहीं देखना चाहिये ? बल्कि तमाम लेख से ।

मि० जान्सन (सरकारी वकील) ने जूरीसे प्रार्थना की कि उस तमाम लेखके और दूसरे लेखोंके सहित (जो साथ में पेश

※कस्तूरी पांढरे कालेगंगावनें※

आमचे येथून नेपाळ, तिबेट व हिमालयची उत्तम खरी कस्तुरी, शुद्ध शिलाजीत, पित्रतर्पण ची लहान मोठी अर्घ्यपात्रें, अगठया, पाढरे व काळे गगावन वगैरे माल योग्य किंमत घेऊन परगावी व्ही पी नें पाठविली जातो

या शिवाय बनारसी, सर्व प्रकारची लुगडी, उपरणें, किनखाब, गोठा, पट्टा, अत्तर वगैरे येथे तयार होणारा माल शेकडा २। रु० ५० पेक्षा कमीवर ८॥ व २५ पेक्षा कमीवर ८— प्रमाणे कमीशन घेऊन पाठविला जातो आर्डरी बरोबर कमीत कमी चतुर्थांश रकम पाठविली पाहिजे

पत्ता —हरिशकरलाल रामशकरलाल

नेपाळी कोठी,-बनारस सिटी

कस्तूरी सफेद काला चवर

We import real musk pure silajeet, sacred ring and argha (made of unicorn) from Nepal Tibet & the Himalay & supply the same to any part of the countries

We also supply all sorts of Benares products such as sari duppatta, Lonkimb dto at minimum commission 2/a/ p. c under 50/@ / / p.6 Rupee of under 25/ @/1/p. Rupee all order should accompany, at least ¼ th of the value

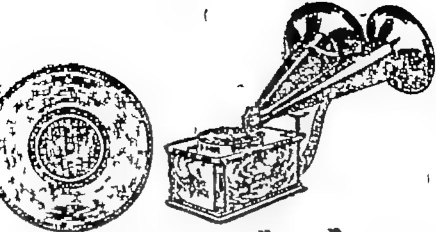
HARI SHANKAR LAL RAMSHANKAR LAL
BENARES CITY

कस्तूरी सफेद कालोसवर

हमारे यहा नेपाल,तीब्बत,हिमालयसे असली कस्तुरी, शुद्ध शिलाजीत पित्रों के तर्पण के वास्ते गेंड का छोटा घडा अरघा अगूठी, सफेद व कालाचवर, मगाया जाता है और उचित मूल्य पर बाहर वजरिये वी पी के भेजा जाताहै।

इसके अलावे बनारसी शाल हर किस्मकी सोडी, दुपट्टा, कीनखाब, गोटा, पट्टी, अतर, वगेरह जो चीजें यहा तैयार होती हैं। कमीशन २।) सैकडा ५०) के नीचे) ॥ २५) के नीचे -) लेकर भेजा जाता है। आर्डर के साथ कम से कम चौथाई मूल्य भेजना चाहिये।

पता-हरीशंकरलाल रामशंकरलाल.
नेपाली कोठी--बनारस सिटी.



किये गये हैं] पढ़लें और फिर आरोप के अभिप्रायका नतीजा निकालें जूरीका यह देखना कर्त्तव्य नहीं कि इस विषय पर विलायत में क्या कानूनहै जिसकी बाबत आरोपीने जूरीको धोखादेनेकी कोशिशकी है। आरोपीने कहा है कि विलायत में यह आम कायदा है और उसकी नकल हिन्दुस्तान में भी होती है कि जज मुकद्दमेका फैसला जूरीकी राय पर छोड़देताहै। जो कि बहुत बेजाहै। जूरीका फर्ज है कि वह जजसे कानूनले, और यही कानून है। मुझको मि० तिलक की इस बातसे आश्चर्य मालूम होता है कि यह एक नया कानून बढाते हैं। पिछली जिरहमें आरोपीने किसी प्रकार ठीक कहा है जिसपर कि मैं विश्वास रखता हूं। कानूनके समझानेमें आरोपीने जूरीको खूब धोखा देनेका उद्योग किया है अगर कोई कानून न जाननेवाला मनुष्य ऐसा करता तो कुछ अचम्भेकी बात नहीं थी। परंतु मि० तिलक जैसे विद्वान की यह बात देखकर आश्चर्य मालूम होताहै। दूसरी बात जो आरोपीने अपने भाषणमें जूरीको समझाना चाहा है वह यह है कि, जबतक सरकारी वकील यह साबित न करदे कि] इन लेखों के पढ़ने वालोंके दिलमें क्या बुरा असर पैदा हुआ 'जूरी उसकी ओर ध्यान न दे' इसके सिवाय Attempt (कोशिश) शब्दका अर्थ बतलानेमें भी गलती कीगई है इस कोशिशमें सफलता हुई है या नहीं यह प्रश्न वृथा है बल्कि जूरीको यह सोचना चाहिये यह लेख १२४ ए धारा

में आगया है या नहीं ? आरोपीने मुद्रण स्वातन्त्र्य के विषयमें बहुत कुछ कहा है परंतु मैं इस विषय पर इतनाही कहूँगा कि यह सब १२४ ए धारामें है इस धारामें सर्व सधारण लेखकों को यह अधिकार दिया है कि वह राजनैतिक कार्यों में उचित आलोचना करसके परंतु कठोर शब्दों में नहीं। मुझे विश्वास है कि जजसाहब जूरीके ध्यानसे इस मिथ्या विचारको (जो आरोपीने उनके दिलमें घुसा दिया है) निकाल देंगे। आरोपीने उनको समझा दिया है कि उन लेखोंमें उन वादानुवादकी शिकायत थी जो देशके सुधारके विषयमें हुये थे। यह तर्कना निर्मूल आरोपीका यह बचाव कि उसके लेख उन आरोपों के उत्तरमें थे जो उसपर और मरहटों पर इंगरेजी अखबार वालेंने छापे थे, मैं स्वीकार किये लेता हूं कि आरोपीका कहना सत्य है और उसकी मनसा इन लेखोंके लिखते समय उन आरोपों के हटानेके लिये ही होगी परंतु जबकि यह लेख १२४ ए धाराके भीतर आगये तो फिर वह अपने आपको बचा नहीं सकता, इस प्रकारका बचाव एक लड़कपन है। आरोपीको इस कदर अखबार और किताबों की ओर ध्यान देने की अवश्यकता नथी, क्यों कि यदि इस बातको सचभी मान लिया जावे कि "अंगरेजी अखबार वालोंने भारतके मनुष्यों के ऊपर कुछ कटाक्ष किया" तौभी आरोपी के वास्ते इस प्रकारका लिखना बचाव नहीं।

इसके बाद एडवोकेट मनरछने कुछ अंगरेजी अखबारों में से जज साहब को पढकर सुनाया और यह जाहिर किया गया कि यह कथन आरोपी पर नहीं थे। और कई विषयों पर कहते हुये मि० ब्रान्सनने यह दिखलाया कि वह गल्ती जो मि० तिलकने अपने सब भाषण में की है वह यह है कि अगर उनका इरादा अच्छा होता तो ऐसी गल्ती कभी न करते।

पोष्टकार्डकी बाबत सरकारी वकीलने जूरीसे कहा कि तलाशी लेते समय यह कार्ड ऐसी जगह से मिलाया कि जिस जगह उसका संरक्षण रखना असम्भव था। फिर एक लेखके विषयमें कहा [जो "केशरी" के किसी अंकमें निकला था और जिसके कारण इस कार्ड के ऊपर सदेह किया गया था] कि यह तमाम लेख सरकारको धमकाने के लिये था कि " अगर सुधारा नहीं किया जायगा तो, बमकाममें लाने पड़ेंगे" यह विचार लेना आपका काम है कि—सरकारको इनलेखों में खुली हुई या छिपी हुई धमकी धमकी दीगई है या नहीं, यदि अवश्य कता होतो मैं इसका सत्य होना साबित भी कर सकता हूं। फिर ९ जूनके लेखमें से कुछ पढकर सुनाया [जिसमें यह कहा गया था कि " बम एफसहरका हुनर है"] और कहा कि—आप इस लेखके पढने से जानगये होंगेकि सरकारको धमकी छिपी हुई नहीं बल्कि खुली हुई धमकी दीगई है। फिर २ जून वाले अंकने कुछ लेख दिखलाये

और कहा कि आरोपीकी सहानुभूति बंगालियों के साथ कुछ मम्रूर है इन दोनों खून करने वालोंकी हिम्मत और दिलेरी की तारीफ कीगई है इसी लेख में आगे चलकर खून करने वाले बंगालियोंको निरपराध बतलाया और कहाकि "यह कुछ कायदेके बारने काम करते थे" इससे जाहिर होताहै कि मि० तिलक की रायमें यह एक अच्छा खून करने वाला था। आरोपीने यह भी लिखाहै कि "राज्य पद्धति बहुत खराब है और जबतक राज अधिकारियों को एक एक करके दुःख नदोगे वह शासनप्रणाली कभी न बदलेंगे आरोपी इस बात को कहभी चुका है। सरकारने इस काण्डकी वारदातको राजद्रोहीमी याम समझी है आरोपीने जो लॉर्ड मॉर्लेको पण्डित मॉर्ले करके लिखाहै, और यह बात जाहिरकी है कि "मेरी और लार्ड मार्ले की एकही रायहै जैसाकि सिविल सर्विस डिनर के अवसरपर मि० मॉर्लेने कहा है" सरकारी वकीलने कहा कि यद्यपि लॉर्ड मॉर्लेका इरादा हिन्दुस्तानकी प्रजाके कुछ हक्क बढ़ादेनेका था परन्तु वह हमेशा सख्ती के कायदों से सहानुभूति रखते हैं। मि० तिलक की दलील बिल्कुल उचित नहीं है कि बम फेंके जाने पर कतल होनेपर और अशान्ति फैलने पर भी सरकार सख्ती के उपायोंको न बरते तो फिर सरकार किस लिये है ?। क्या इसका मतलब है कि अगर सरकार शांति रखने के लिये प्रयत्न

करे तो गोया जायेतका भूत उसके शिरपर चढ़गया जो कि हर दर्शवर्षे चढ़ता है ' । अगर सरकारने ऐसा किया तो क्या मि० तिलक को ऐसा कहनेका अधिकार है? कि "जुल्महोताहै और राज्याधिकारी इसको नरोकेंगे तो हम उनपर बम फेंकेंगे" असलमें ममला यह है और जूरीसे यह बतलाने की प्रार्थना है कि जो यह ऊपर कहा गया है राज विद्रोह है या नहीं ' सरकारी वकीलने तब श्रीयुत तिलकके भाषणके अंतिम भागकी ओर (जो १९३ ए धारासे सम्बन्ध रखताथा) ध्यान दिया और कहा कि मि० तिलक का यह कहना है कि वह यह नहीं समझे कि उनके ऊपर कौन कौन से आरोप हैं, आरोप भली प्रकार पहिले बतला दिये गये थे उन्होंने स्वयं १९३ ए धाराके ऊपर ध्यान नहीं दिया ।

रशिया में "बम" बननेकी बाबत मि० तिलकका कहना बिलकुल झूंठा है, अगर उस लेखको सच मान लिया जावे कि रशियामें "बम" से राजनीति का सुधार होगया तो इसके यह माने हैं कि यहां भी रशिया के समान करना चाहिये । तमाम लेख से जाहिर होता है कि भारतमें दुःखका कारण अधिकारी वर्ग हैं, जिनके सख्तीके कामों से युवाओंकी बुद्धि फिर गई और "बम" फेंकना राजनीति पाने का एक तरीका मान लिया गया । इसमें यहभी दिखलाया गया है कि युवाओंने "गोलों" फेंकने में बड़ी भूलकी है बनाया और

के लिये और फेंका दूसरे के ऊपर, मिसाल के लिये लिखा हुआ है कि " खुदी राम बोस भी स्वयं इस बात के लिये अफसोस करता है कि मि० किंग्सफर्ड के धोखे दो निरपराध स्त्रियों का खून किया" इसका यह मतलब है कि अगर "बमगोला मि० किंग्सफर्ड के ऊपर पड़ते तो ठीक था इस लेखका यह प्रयोजन है कि "बमगोला" सीधे फेको मूल मतकरो, और तब मि० तिलक और उनके अनुयायी तुमपर प्रसन्न होंगे। उसमें यह भी लिखा है कि "इंग्रेजी हुकूमतने हिन्दुस्तानको नामर्द बनादिया" यह हिन्दुस्तानी कौमके लिये एक बड़ी भारी बदनामी की बात है क्योंकि हर जगह लड़ाई के मैदानमें इसने अपनी बहादुरी दिखलाई है।

एडवोकेट जनरलने इन लेखोंमें से कुछ और विद्रोही शब्द बतलाकर अपना भाषण समाप्त किया॥

जज साहबका जूरीको समझाना।

जजसाहब—मैं अब आपका अधिक समय नहीं लूंगा क्योंकि ८ दिनसे आप बराबर इस मुकद्दमें को सुनरहे हैं इसकी बाबत आप लोगोंने अपने घरपर भी विचार किया होगा और अपने मित्रोंद्वारा बहुत कुछ जानाहोगा। मैं प्रार्थना करताहूं कि आप उनसब विचारों को मनसे बाहर निकाल दें और आरोपी के उन शब्दोंपर जो उसने कहे हैं, दया के साथ न्याय करोगे आप यह न ख्याल करना कि

यह मुकदमा सरकार की तरफसे चलाया गया है, बल्कि जो न्याय हो वही करना मेरी यही इच्छा है कि आरोपीका मुकदमा न्याय से होना चाहिये।

जजने तब जाब्ते फौजदारीकी वह दफा पढके सुनाई (जिनमें जूरियों का कर्तव्य बतलाया है) और कहा-आरोपीने भी अपना विश्वास आपके ऊपर जाहिर किया है फिर जज महोदयने मुख्य २ जजों के फैसल किये हुये मुकदमो का हवाला दिया और श्री०तिलकपर जो दफा लगाई गई थी उनका अर्थ भी पढकर सुनाया और कहा कि पत्रकारोंको इस बातका अधिकार दिया गया है कि वह सरकारके कामोंकी उचित आलोचना करसकें लेकिन यह अधिकार कदापि नहीं है कि वह सरकारको बे इनाम या बद नियत बतलाय आरोपीने जो कुछ मुद्रण स्वातन्त्र्यके विषयमें कहा है उसको भी विचार लेना यहबात जानने के लिये की आरोपीने लिखते समय यह लेख किस नियतसे लिखे थे। आपको वह लेख पढने पडेंगे और इस विषयपर आरोपीने जो कुछ कहा है उसपर भी ध्यान देना। (अंगरेजी अनुवाद की बाबत कहा कि) आरोपी अंगरेजी अनुवादको अशुद्ध बतलाताहै मि० जोशीका इजहार अभी आप सुनही चुके हैं और यह अनुवाद मि० जोशीके किये हुये भी नहीं है बल्कि हाईकोर्टके एक प्रतिष्ठित अनुवादकके किये हुये हैं आरोपीने अपनी कोई दुश्मनी भी अनुवादकसे नहीं दिखलाई है यह सम्भव है कि

अनुवादमें कुछ जोश कम हो गया हो इस लिये मि॰ तिलकने जो इसमें सुधारा किया है वह ठीक मान लिया जाय! लेखककी नीयत जानने के लिये और कोई उपाय नहीं है सिवाय इसके कि आप उन लेखोंको पढ़ें, यह कुछ गवाही व साबित नहीं हो सकता आरोपी यह स्वीकार कर चुका हैं कि उनके अखबारका निकास ज्यादा है अब आप अनुमान कर सकेंगे कि उन लेखोंका प्रभाव इतने मनुष्यों पर क्या पड़ाहोगा? क्योंकि उनको २॥ बजेतक किसीने नहीं समझाया होगा जैसाकि आरोपीने आपको समझाया है। गवाही से यह साबित करनाकि आरोपीकी नियत घृणा फैलाने की थी बिलकुल असंभव है इस विषयपर आप स्वयं अपनी बुद्धीसे विचारना और यह लेख पढते समय हिंदुस्तानी तर्ज और ढंगपर ध्यान रखना चाहिये अगर आपको किसी जगह जराभी संदेह मालुम पड़े तो उसका फायदा आरोपीको पहुंचना चाहिये

(काईकी बाबत कहा) आरोपीका उजुर वाजिब मालुम होना है अंतमें जजसाहबने यह कहा कि आरोपीने आपलेगोंसे प्रार्थना की है कि आप भिन्न भिन्न रायदें परन्तु मेरी आपसे यह प्रार्थना है कि आप सब मिलकर एकही रायदें और इस विषयपर बहुत दयाके साथ विचार करें और बाहरका कोई विषय ध्यानमें न आनेदें

"इस समय ८ बजके ९ मिनिट होगये, इस समय जूरी दूसरे कमरे

में विचार करने के लिये चलीगई जिसमें १ घंटा और २० मिनिट बैठने के बाद लौटकर अदालतमें आबैठी।

और कहा गयाकि ७ अंगरेजोंसे २ पारसियों की रायनहीं मिलती जजके पूछने पर यह कहागया कि इनसब की एक रायहोगी ऐसी आशामी नहीं है।

जूरीका अभिप्राय।

फोरमैन—अभियुक्त को उसपर लगाये हुये तीन आरोपों के लिये २ मत निर्दोष और ७ मत अपराधी ठयराते हैं।

श्री० तिलक—मै अदालतसे कुछ विनय करना चाहता हू

जज महोदय—वह क्या विनय है ? कहो।

श्री० तिलक—मेरे ऊपर जो दोष लगाये गयेहैं वह कानून के विरुद्ध हैं इस कारण पेनलकोडके नियमसे मैं यह मुकद्दमा फुलबेंच के सामने लेजानेकी प्रार्थना करता हू (यहांपर श्री० तिलकने कानून के प्रश्नोंका अलग अलग कारण बांचकर सुनाये) लेकिन जज साहबने प्रार्थना अस्वीकारकी और कहा कि फैसला सुनाने के पहिले तुम कुछ कहना चाहते हो ? इसपर श्रीयुत तिलक महोदने कहाकि—

"जूरीने यद्यपि मुझे अपराधी ठहराया है तौभी मेरा मन मुझे गवाही देता है कि मैं पूर्ण रूपसे निर्दोष हू। मानवी-शक्तिसे अधिक बलवान और ऊंचे दर्जेकी शक्ति संसारके सूत्र हिला रही है, ईश्वरका

ऐसा मनोगत सङ्केत दिखाई पड़ता है कि मैंने जिस कार्यके लिये प्रयत्न जारी कर रखाहै उस कार्यको मेरे दुःख और सङ्कटोंमे ही अधिक जोर मिले। "

नामदार जजका फैसला

बाल्गगाधर तिलक इससमय तुमको सजा देने में मेरा चित्त अत्यन्त दुःख पाताहै, मैं नहीं कह सकता कि मेरे चित्तको इससमय तुमको ऐसी स्थिती में देखना कैसा दुखदायक मालूम होता है। निश्चय तुम विद्वान तथा प्रभाव शाली मनुष्यहो, यदि तुम इस विद्वता और प्रभाव को अपने देशके भलाई के वास्ते भली प्रकार काम में लाते तो तुम उन मनुष्यों को जिनके कि बीचमें तुम रहतेहो अधिक सुख पहुचानेमें कारण भूतहोते। १० वर्ष पूर्व जब तुमको सजाहुईथी तब सरकारने तुम्हारे साथ अधिक दयाकीथी।

डेढ वर्ष की सादी सजा भुगतनेके बाद तुम्हारी प्रतिज्ञाओं पर जो तुमने स्वीकार किईं थीं तुमको छोडदिया गया था।

मुझको मालुम होताहै कि वह मनुष्य जो तुम्हारे लेखको नियमानुसार बतलावे वह खोई हुई बुद्धिका मनुष्य होगा तुम्हारे लेख राज्य विद्रोही हैं तुम बमके गोलों से लोगों का मारनाही अच्छा नहीं समझते हो किन्तु तुम यह समझतेहो कि बम भारत की उन्नति के लिये पैदा हुआ है जैसा कि मै पहले कह चुकाहू कि वह कोई खोईहुई

बुद्धिका मनुष्य होगा जो यह विचार करेगा कि यमका उपयोग करना कायदेके अनुसार है और यह भी एक लाईहुई बुद्धिका मनुष्य होगा जो तुम्हारे लेखको राज विद्रोही न बतलाय।

इन पिछले १० वर्ष में तुम्हारी राज करने वाली जाति से घृणा गई नहीं। और यह लेख प्रति सनाहकी सम्पत्में तुम ने बड़ी स्वतंत्रता के साथ लिखा। जिसके १९ दिवस पिछे दो निरपराधि नी अबलाओं की हत्या हुई। तुम यमको नराजकतामें योग्यढंग समझतेहो ऐसा सम्पादक देशके लिये फाइदायक है मुझे तुमको सजा करने में बहुत रंज मालुम होता है मैंने बड़ी गंभीरताई से विचार कर लिया है कि अगर तुम अपराधी ठहरगये जाव तो तुमको क्या सजा देनी चाहिये। और मैंने जो सजा देना निश्चयकीहै यह बहुत हलकी है अपने कर्त्तव्य और तुम्हारे अपराधको सोचकर मैं इससे हलकी सजा नहीं दे सकता और मैं स्वीकार करताहु तुम्हारी जैसी स्थिती वाले आदमीको वह सजा न्यायके अनुसार होगी।

तुम्हारे पहले अपराधमें तुम यावज्जीवन काले पानी भेजे जासकतेहो मैंने विचारकर लिया है कि तुमको कालापानी भेजना चाहिये या जेलखाने तुम्हारी अवस्था और दशाओं को विचार कर मैं ख्याल करताहूं कि यह बहुतही उत्तम बातहै कि शांति रखनेके लिये और

उस देशकी उन्नति के वास्ते जिसको कि तुम प्यारकरने का दावा करते हो कुछ समयके लिये उसके वाहर भेज दिये जाव।

दफा १२४ में मुझे तुमको जिन्दगी भरके लिये देश निकाला करनेका अधिकार है। परंतु मैं तुह्मारे प्रथमके दो अपराधों पर तीन तीन वर्ष के लिये अर्थात दोनों आरोपों पर ६ वर्ष के लिये देश निकाला, तीसरे अपराध में एक हजार रुपया जुरमाना और चौथे अपराधमें तुमको बिल्कुल छोड़े देताहूं।

श्रीयुत तिलककी अपील

शनिवार ता० १ अगस्त १९०८ को

१ अर्जी एडवोकेट जनरल महोदयकी सेवामें मि० वी० रायवाला अटरनी एटला हाईकोर्ट बम्बई ने श्रीयुत तिलककी तरफसे भेजी थी जिसमें प्रार्थना की था कि हाईकार्टके अमेंन्डेडलेटर्स पेटेन्ट की धारा २६ एवं २४—२९ बयान १०४ के अनुसार एक सार्टिफिकेट इस विषयका आपदेदें कि जज महोदय मि० जस्टिस डावर ने निम्न-लिखित (सबयाकुछ) भूलें इस मुकदमे के फैसला करने में कीहै और जूरीको कुछ गलतफहमी है।

(१) जज महोदयने कैदीको जमानत लेनेसे इनकार किया और कहाकि अगर मैं इसका मयव समझूंगा तो कैदीको उससे नुकसान पहुंचेगा यह उन्होंने भूलकी क्योंकि असलमें उसके जाहिर करनेसे ऐसा नुकसान कैदीको न पहुंचता जैसा कि अब पहुंचा।

बुद्धिका मनुष्य होगा जो यह विचार करना कायदेके अनुसार है और यह भी ए होगा जो तुम्हारे लेखको राज विद्रोही न यस

इन पिछले १० वर्ष में तुम्हारी वान था गई नहीं । और यह लेख प्रति सनाहकी स्वतंत्रता के साथ लिखा । जिसके १९ दि नी अबलाओं की हत्या हुई । तुम बमको नाराजके ऐसा सम्पादक देशके लिये कष्टदायक है मुझे बहुत रंज मालुम होता है मैंने बड़ी गंभीरताई है कि अगर तुम अपराधी ठहराये जाव तो तुमको और मैंने जो सजा देना निश्चयकी है वह बहुत और तुम्हारे अपराधको सोचकर मैं इसमें हु और मैं ख्याल करताहू तुम्हारी जैसी स्थिति न्यायके अनुसार होगा ।

तुम्हारे पहले अपराधमें तुम याव, और मैंने विचारकर लिया है कि, तुमको भेजता । मारे जेलखाने तुम्हारी अवस्था और द कर मैं करताहू कि यह बहुतही उत्तम म रखनेके लिये

उस देशकी उन्नति के वास्ते जिसको कि तुम प्यारकरने का दावा करते हो कुछ समयके लिये उसके बाहर भेज दिये जाव।

दफा १२४ में मुझे तुमको जिन्दगी भरके लिये देश निकाला करनेका अधिकार है। परंतु मैं तुम्हारे प्रथमके दो अपराधों पर तीन तीन वर्ष के लिये अर्थात दोनों आरोपों पर ६ वर्ष [illegible] देश निकाला, तीसरे अपराध में एक हजार रुपया जुरमाना [illegible] अपराधमें तुमको बिल्कुल छोडे देताहूं।

श्रीयुत तिलककी अपील

शनिवार ता० १ अगस्त १९०८ को

१ अर्जी एडवोकेट जनरल महोदयकी सेवामें मि० बोर्ड [illegible] अटरनी एटला हाईकोर्ट बम्बई ने श्रीयुत तिलककी तरफसे [illegible] में प्रार्थना की थी कि [illegible] एमेन्डेड लेटर्स पेटेन्ट २६ एक्ट, २४—२१ वय [illegible] ०४ के अनुसार एक [illegible] इस विषयका आपदेवें [illegible] जस्टिस दावर [illegible] फैसला करने [illegible]

'रिवीस' (सत्यमुक्त)

[illegible]

(२) जज महोदयके खास जूरी नियत करने में कैदीने इस वजह से विरोध कियाथा कि जूरीमें ऐसे आदमी होने चाहिये जो मराठी भाषा जानतेहों और मेरे लेखों को समझकर ठीक रायदेसकें। लेकिन जज महोदयने उसके कहनेकी कुछ परवाहनकी।

(३) जज महोदयने इन १६ और १७ नम्बरवाले दोनों मुकद्मोंको एकहीसाथ मिलादेनेमें भूलकी क्योंकि यहदोनों मुकद्मे एक दूसरे से अलगथे जज महोदयने चारों आरोपोंमेंसे एक आरोपपर वे कसूर ठहराकर तीनों आरोपोंपर एक साथही मुकद्मा चलाना चाहा लेकिन एडवोकेट जनरल महोदयने प्रार्थनाकी कि जबतक मुकद्मा खतम नहो जाय इस चौथे आरोपकी बाबत कुछ हुक्म न सुनाया जाय मेरी इच्छा आरोपीपर तीनही आरोप लगानेकी है यद्यपि मुझे चारों आरोपोंके चलाने का अधिकार है तबभी मैं यह वायदा करताहूं कि चौथा आरोप आरोपी पर नहीं लगाऊँगा। अन्तमें जज महोदने इन दोनों मुकद्मे के तीनों आरोपों पर एकसाथही मुकद्मा चलाने का हुकुम दिया।

(४) यह आरोप (जो आरोपी पर लगाये गये हैं) उन शब्दों के ऊपर नहीं लगायेगये जो आरोपीने लिखेथे बल्कि उनके अंगरेजी अनुवाद के आधार पर लगाये गये हैं मो बिल्कुल अशुद्ध थे इस लिये मुकद्मों की तमाम कार्य्यवाही नाजायज होगई।

(५) जज महोदयने उन तीनों आरोपोंका (जिनका एक दूसरेसे सम्बन्धभी नहीं था) एक साथ फैसला करने में जाब्ते फौजदारी की दफा २३३ के विरुद्ध किया है और विशेषकर ऐसे अवसर पर जबकि आरोपी ने भी इस पर आपत्तिकी थी।

(६) जज महोदयने जाब्ते फौजदारी दफे २७३ की परवाह न करके चारों आरोपों में से एक आरोपको मुकदमा आरम्भ होने के पहलेही रोकलेनेका हुकुम दिया।

(७) जज महोदयने सरकारी वकीलको पहला मुकदमा जिसमें अभियुक्तको १२४ ए धारा वाले अपराधमें सजा होचुकी थी साबित करने के लिये परवानगी देदी। यह इस वजहसे किया गया था जिसमें कि जज महोदय अभियुक्तको सख्त सजा देसकें जो जज महोदयके फैसले के शब्दों से साफ जाहिर है।

(८) अगर यह मानभी लिया जाय कि यह दोनों मुकदमे इस वजहसे मिलादिये गये हैं कि यह सब एक ही मामला है [असलमें आरोपी की प्रार्थना के अनुसार यह सब एक मामला नहीं है) तौभी जज महोदयने हर आरोप पर जुदी जुदी सजा करनेमें कानून के विरुद्ध किया है

(९) जज महोदयने तमाम सबूत देनेका बोझभी आरोपी के ऊपर ही रख दिया।

(१०) जाब्ते फौजदारी की दफा १९६ के अनुसार इस मुकदमे

को भड़कानेके लिये मुथा सरकारकी आज्ञामें काफी तौर से नहीं दी गईथी।

(११) जज महोदयने सभामी बहुत सख्ती है।

(१२) जज म० को यह चाहिये था कि जूरी को यह समझा देते कि यह लेख अंगरेजी अखबारवालों के उन लेखों के उत्तरमें था जिनमें कि हिन्दुस्तानी लोगों तथा भगुओं पर दोषलगाये गये थे।

(१३) जज म० ने और बहुतसी त्रुटियां जूरी को समझानेमें की हैं जिनसे यह कहा जासकताहै कि अगर जज महोदयने जूरी को बहकाया न होता तो कदापि अभियुक्त के विरुद्ध जूरीका बहुमत नहोता।

(१४) आरोपी की नियत (लिखते समयकी) जाहिर करने के लिये " केशरी " के और कई अंक सबूतमें पेशकिये गये थे और उनपर जज महोदयने जूरी को समझाया था कि इन लेखों से सरकार की तरफ घृणा बढती है इसी कारण जूरी ने रायदेतेसमय इनमेंसे प्रत्येक लेखको (जो किसी प्रकार आरोपमें शामिल नहीं थे) ध्यानमें रखकर अभियुक्तको अपराधी ठहराया इस लेखकी बाबत जूरीको यह विचारना चाहिये था कि इन लेखोंसे असलमें कुछ हानिहुई है या केवल आरोपी ने प्रयत्न ही किया है। यदि उसने प्रयत्नही किया है तो ऐसी दशा में भी कोई जज वैसी सजा देगा जैसी कि असल कसूर करनेमें दी जाती।

३१३

इनके सिवाय जज म० की बहुतसी भौरभी भूलें बताई गई कानूनके अनुसार इस ऊपर की अर्जी के साथ एक सार्टिफिकट मि० जोसफ बपटिस्टा बार एटलॉ का सही किया हुआ नत्थी कियागया था जिसमें कि यह लिखा था कि जज महोदयने अपने फैसले में कुछ गलतियां की हैं और जूरी को कुछ बहकाया भी है।

एडवोकेट जनरल महोदयका जवाब

यह पत्र उसी तारीखका लिखा हुआ मि० बी रावमलके नाम पहुंचा इसमें यह लिखा हुआ था कि—मैं लेटर्स पेटेन्टकी २६ वीं धाराके अनुसार कोई सार्टिफिकिट जिस प्रकार का तुम मांगतेहो नहीं दे सकता क्योंकि मेरी रायमें जजसाहबने अपने फैसलेमें ऐसी कोई बात नहीं छोड़ी है जिसपर कि आगे कुछ विचार किया जाय और न जज साहेबने जूरीको किसी प्रकार बहकायाही है जैसा कि तुम लिखते हो।

मंगलवार ता० २५ अगस्त

एडवोकेट जनरल महोदयके दरख्वास्त नामंजुर करने के बाद चीफ जस्टिस मि० स्कॉट और मि० जस्टिस बैचुलर की इजलास बम्बई हाईकोर्ट में श्रीयुत तिलक की ओरसे यह प्रार्थना की गई कि इस मुकदमे में कुछ कानूनी त्रुटियां रहगई हैं इससे इसकी प्रिवीकौंसिल में अपील करने की आज्ञा दी जावे।

मि० बैपटिस्टा (जो श्री० तिलककी ओरसे वकीलथे) ने प्रार्थना की कि यह मुकदमा प्रिवीकौंसिल में जानेके योग्य है।

जज महोदय मि० जस्टिस डावरने और बहुत सी [illegible] की हैं (जो हम पाठकों को पहले बता चुके है) इनभूलोंको प्रीवीकौंसिल में दरशाया गया, जिसपर चीफ जस्टिस महोदयने हुकुम दिया कि सरकार को यह बतलाना चाहिये कि कैदी को क्यों न इसबातका सार्टिफिकेट देदिया जाय कि यह मुकदमा, प्रिवीकौंसिलमें जाने योग्य है। क्योंकि इसमें सब आरोपों को एकही साथ सङ्गठित करके विचार कियागया, और एक लेखके लिये जुदे जुदे दण्ड दियेगये हैं इत्यादि और यह भी कहा कि जूरीके बहकाने की बाबत फिर विचार करके हम उत्तर देंगे।

बुधवार और वृहस्पतिवार ता० २—३ सितम्बर

आज फिर उन्हीं दो जज महोदयों के इजलास में यह मामला पेश कियागया। श्रीयुक्त तिलक के वकीलने कहा, चूंकि इस मुकदमें की कार्य्यवाही नियमानुसार नहीं हुई है इसलिये इसमें अभियुक्त के साथ अन्यायहुआ है अगर आरोपों का मिलादेना बेकायदा है तो ऐसा करना अदालत के अधिकार से बाहर था, और मि० जस्टिस फैरन वाले फैसले के अनुसार हर मुकदमा, जो अदालतने अपने अधिकारके विरुद्ध किया हो, अथवा अन्याय कियाहो, या कानून की कोई कार्य्यवाही रहगई हो, तो ऐसी हालतमें मुकदमा, प्रिवीकौंसिलमें लेजाने के योग्य है।

सरकारी वकील मि० रोबर्टसनने कहा कि अबतक यह जाहिर ना-किया गया कि अभियुक्त के साथ महा अन्याय हुआ है केवल भाइन संबंधी त्रुटियां होजोनेसहा प्रिवीकौंसिल्में अपील नहीं होसकती। लॉर्ड हॅल्सबरीके फैसले के अनुसार जबतक कोई मुकदमा पूर्ण तौरसे कानून विरुद्ध न हुआहो तबतक उसकी अपील नहीं होसकती। सजाके बढ़ाने घटानेके लिये प्रिवीकौंसिल्में अपील नहीं होती इस समय यह साबित करना चाहिये कि अभियुक्त पर स्पष्ट महा अन्याय हुआहै मि० बैपटिस्टाने वही शब्द जो पहले कहे थे उत्तर में कहे। इस समय जज महोदयाने फैसले को मुल्तवी रक्खा।

मंगलवार ता०८ सितम्बर ०८

लीजिये आज तीनों दो जज साहबोंने फैसला सुनादिया कि— अभियुक्त के साथ इस मुकदमे में बहुत ध्यानदेने योग्य अन्याय नहीं हुआहै और इस कारण इस मुकदमें की अपील प्रिवीकौंसिल्में होने की कुछ आवश्यता नहीं जान पड़ती।

भगवानसे विनय

लावनी

दुख भारतवर्ष पै करके कृपा प्रभु जल्दी इनको छुड़ा तो सही। हुआ दुखसे निष्फल रही जान निकल कुछ अमृत बूँद पिला तो सही ॥ टेक ॥

सब भारतवासी अनाथ दुखी तुही नाथ इन्हें अपना तो सही। अनुराग अभागोंके मनसे गया उत्साहकी नींव जमा तो सही ॥ सब ज्ञानकी भूल गलीसी गये दया दृष्टिसे राह बताओ सही । उपकार परस्पर करते नहीं अपकारकी बानि छुड़ा तो सही ॥ दोहा ॥ पतन करत हैं बढ़नको, नहि त्यागत अभिमान ॥ राग द्वेष घटता नहीं, स्वारथ बश अज्ञान ॥ चौबोला ॥ स्वारथ बश अज्ञान प्रभू जी मृग तृष्णामें भूले ॥ घरका धन भण्डार त्यागके तर्क पन्थमें चूले ॥ निरमल जलको करें निरादर ढूँढे हाय बबूले ॥ फैशन बना विदेशी अपना नहीं समाते फूले ॥ टूट ॥ बने दास दुखदास विनाश मेहीं इन्हें देशकी ओर झुका तो सही ॥ १ ॥

कभी सिंह थे हस्तीसे भेड़े भये भूल वीर्यकी याद दिला तो सही। । गयी सुबुद्धि कुबुद्धि समाय रही प्रभु आलस नींद हटाओ सही । कोई अभिक्ष बश हो अभक्ष्य भखें कोई भेषज शुद्ध चखाओ सही । बाटि-दानेक मेंढे हो घास चरें इन्हें सोतेसे नाथ जगाओ सही ॥ दोहा ॥

मारी मारी दुख भरी, फिरे तड़पती गाय ॥ बिना आपके हे प्रभु, को करिसकै सहाय ॥ चौबोला ॥ कोकरिसकै सहाय विदेशी आकर मौज उड़ावें भारत वासी मुठी अन्नको सौसौ हाहा खावें ॥ मरें भूक्से बिना अन्नके गैया जार चबावें । तिसपरभी जगली बताकर मेम्टिबमेन बिनावें ॥ टूट ॥ अति आरत भारत योंही हुआ इसे छतीसे अबमी छ्या तो सही ॥ २ ॥

पुनि प्रेगने देश मथन सा किया यह दीनोंका शूल मिटाओ सही । इन घोर दुकालोंसे अब तो बचा निज दासोंकी पीर घटाओ सही ॥ अनुकूल समय पैही वृष्टि करें यह इन्द्रको हुक्म सुना तो सही । इस उजड़े बगीचेको सब्ज करे किसी मालीको भेज कराओ सही ॥ दोहा ॥ भारतवासी सुस्त हो काटें सुखकी मूल, मूरख दुखको सुख लखें, फिरें फांकते धूल ॥ चौबोला ॥ फिरें फांकते धूल चमप्पी ठोकरसे ठुकरावें ॥ एक टूक या दो अक्षरहित सौ सौ नाच नचावें ॥ हानि लाभ अपना नहि समझें तनका मांस कटावें ॥ आपसमें मेंढ़ेसे छड़ते ताली गैर बजावें ॥ टूट ॥ मझधारमें भारत नैया फँसी प्रभु दौड़ दयाका उठा तो सही ॥ ३ ॥

निज देशसे प्रेम तनक न प्रभूपर दुःसमें मरना सिखा तो सही । दुख सहतेही सैकड़ों वर्ष गये अब भाग्यका चक्र घुमा तो सही ॥ योंही भूठे भटकते बहकते फिरें निज कोमल हाथ गहा तो सही ।

दुखे दीनोंको कैसे भी अनके मिटा प्रभु दीनोंका नाथ कहा तो सही ॥ दो० ॥ सर्व शक्ति है आपकी, कहते वेद बखान ॥ सभी प्रकाशित आपसे, दीनबन्धु भगवान ॥ चौबोला ॥ दीनबन्धु भगवान देशका अब तो भाग जगादो ॥ आलस बैर खुशामद सुस्ती इनको दूर भगा दो ॥ पुरुषार्थ और बुद्धि बढ़े कोई ऐसा मन्त्र सिखादो ॥ बीच धारमें डूब गयी प्रभु नैया पार लगादो ॥ टूट ॥ छेदालालका प्रेम समुद्र हिये प्रभु इसमें पू बैठ नहीं तो सही ॥ ४ ॥

स्वदेशी व्रत

हिन्दकी दौलत जो यारो, हिन्दके अन्दर रहे । मिले सबको सुख कोई गमी, हममेंसे दुख नहिं सहे ॥ मत विदेशी माल लेओ, लाभ हो सस्ता चहे । ना उन्हें छूना जो, बेदामों कोई देने, कहे ॥ एकसे एक चीजें नई, बनती हैं हिन्दुस्थानमें । फिर उन्हींसे तुम निकालो, काम सब हर आनमें ॥ अब तो हुई उन्नति मिलोंकी, चाहे जो सामान लो । प्रेमसे प्रीती बढ़ाओ, यही शिक्षा मानलो ॥

स्वदेशी गजल

अब तो विदेशी माल मगाना नहीं अच्छा । निज देश भक्तिसे हट जाना नहीं अच्छा ॥ टेक ॥ बनता है अपने देशमें हर किसका । हमको विदेशी वस्त्र सजाना नहीं अच्छा ॥ १ ॥ जिसमें

पड़े है रक्त औ हड्डी गऊकी हाय । ऐसी विदेशी खांड़को खाना नहीं अच्छा ॥ २ ॥ जो हैं नृशंस दुष्ट मद निज देशके द्रोही । उनसे मुहब्बत यार लगाना नहीं अच्छा ॥ ३ ॥ जन्मे हैं हम इस देशमें पलते हैं हम यहीं निज देशका उपकार भुलाना नहीं अच्छा ॥ ४ ॥ देखो मरे हैं भूखसे निज देशके वासी । उनका कहो यह कष्ट नागाना नहीं अच्छा ॥ ५ ॥ खाते हैं जो भर पेट भखे देख भाईको । उनके लिये यह पाप कमाना नहीं अच्छा ॥ ६ ॥ करते रहो धन प्राणसे निज देश भलाई । इस पुण्य कमानेसे भगाना नहीं अच्छा ॥ ७ ॥ जाताहै वक्त हाथसे फिर कर नहीं आता । आया हुआ यह वक्त गँवाना नहीं अच्छा ॥ ८ ॥ देखो पितामह भीष्म अर्जुन क्या सिखा गये । करके प्रतिज्ञा फेर फिर जाना नहीं अच्छा ॥ ९ ॥ त्यागी प्रतिज्ञा भूलसे करके तो क्या हुआ । चेतो अभी अब इसमें पछताना नहीं अच्छा ॥ १० ॥ यह है समय अब धर्मका करिये जो हो सकै । करिये प्रतिज्ञा फेर लजाना नहीं अच्छा ॥ ११ ॥ त्यागा है जिसने जन्म पर उपकारके लिये । उनके बचनको टार दुखाना नहीं अच्छा ॥ १२ ॥ फिरते हैं देश देश लाखों दुःख सहते हैं । उनकी सुकीरत्ति क्यों भला गाना नहीं अच्छा ॥ १३ ॥ करता रहै कर जोरके विनती यही शिवदास । अब तो दया करु नाथ! सताना नहीं अच्छा ॥ १४॥

अन्योक्ति सप्तक

आभा विहीन निशि का न पता रहा है। होके हताश तम भी अब जा रहा है। छाई छटा दिन करोदय आरहा है। हे चक्र! क्यों अब तू मुरझा रहा है। १। शार्दूल वृन्द! यदि आपसमें लड़ोगे। हो खंड खंड इस भूतल पै पड़ोगे। होंगे मदांध फिर तो गज यूथ भाई। त्यागो सुमित्र इससे निजकी लड़ाई। २। प्रारम्भमें रवि हुआ यदि राहुग्रास। होना नहीं तदपि हे कमलो उदास। वैरी विनाश करके, करकी प्रभासे। देगा सुदर्श तुमको सविता त्वरासे। ३। हे कीश वृन्द! तुम क्यों मनुनारि होते। आजीविका निज वृथा शठ हो डुबोते। छूटो विवेक तजि जो रिपुता रखोगे। आस्वाद शीघ्र इसका तुम तो चखोगे। ४। पीयूष तुल्य पय भी तुमको पिलाते। तौ भी भुजंग तुम हो विषही बढ़ाते। क्रूरो! नहीं यदि हलाहलको तजोगे। प्राणांत दंड सहके तुमही मरोगे। ५। हे गर्दभो! वृषभ हैं हलको चलाते। होनीच नित्य तुम तत्कृत अन्न खाते। तौ भी उन्हें दुलतियां तुमही लगाते। क्या पामरो तुम नहीं इससे लजाते। ६। जागो मृगेन्द्र गण हैं अनख्या मनोंमें भागो शृगाल अब तो न रहो वनोंमें। आलस्यसे यदि यहां फिर भी रहोगे। पीड़ा मृगारि नखकी तुमही सहोगे। ७।

जननी जन्म भूमि—जन्मभूमिको ईशदेव सम,पूजो दम्पति मन चितलाय तन मन धनसबउसपर अर्पण, करना चहिये अति हर्षाय ॥ १॥ जन्म-भूमि स्वर्गादपि उत्तम, हियमें इसको खूब धरो॥दृढ़तासे कर्त्तव्यकरो निज, मातृभूमिके लिये मरो ॥२॥ दीन शूरहो यदपि निश्चयर विमल तापसी तपोधनी विधि युतकर्म विहृयरहोवे, नृपतापसि नर मुकुटमनी ॥ ३॥ निज कर्त्तव्य करारे पनसे अरि दलको नीचाकरनो । शुचि आदर्श दिखाय मनुजको सहर्षजाता सुरपुरको ॥ ४ तपकरने वाले शुचि तापस, निज हित मांग सावते हाथ । दाता वही कहाता जगमें जो देता है धनको पाथ ॥ ५ ॥ ये सब परमस्वार्थी जगमें निज मोचन हित करते ध्यान । शूर तरैं औरोंकोतारें इससे उनका मानमहान॥ ६ देश कार्य करते २ जो, तन देता है तन अपना । वही तापसी कहलाता है, नहिं माला पड़ता जपना ॥७॥ शत्रुपक्षके गुप्त भेदको जो करता योगी साधन । वाल्मरण सम वह चमकेगी जल्यव हो चाहे कानन ॥ ८ शूरवीर जो देशकार्य हित, कर देता सिर अम्बुज दान । सब प्रकारके कष्ट दुःख वह सह लेता है फूल समान ॥ ९ ॥ ऐसेयाला योगदानसे स्वय नहीं तरते भवसे । दासपकसे देशमाइयोंको छेड़ते अरि करते ॥ १० पुण्यवान भगवान साधु नहिं इनकी समता कर सकते ॥ सदा तापसी योगी दानी भी इनसे नहिं बढ़ सकते ॥ ११ ॥ पुण्य भूमि है वही जगतमें जहं मातृ हित देते जान । तनमन धन कर्त्तव्य शोकसा, का सबस कर देते दान ॥ १२ ॥ जननी जन्मभूमि मेरी यह, सबको यह रटना चहिये । मातारूण सब चुकता करके, माणिक वीर बना चहिये ॥१३॥

* ओ३म् *

दयानन्दचरित्र

मुरादाबाद निवासी

जगन्नाथदास संकलित

जिसको

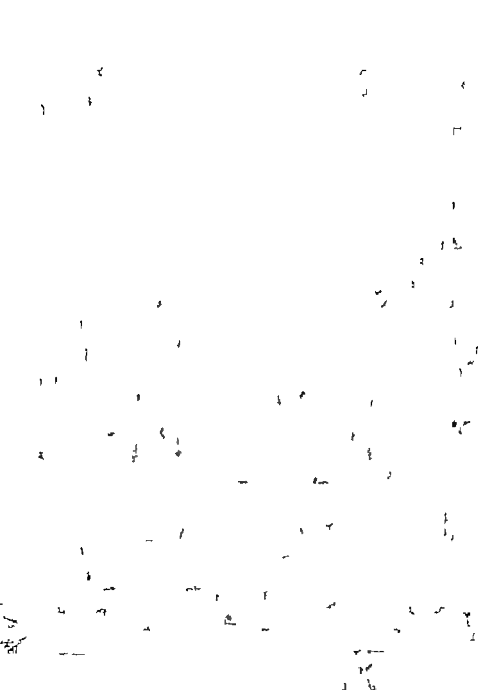
शिवलाल गणेशीलाल ने

अपने "लक्ष्मीनारायण" प्रेस

मुरादाबाद मे

छपवाकर प्रकाशित किया

द्वितीयावृत्ति सन् १९ ६



॥ श्री परमात्मानमयामि ॥

दयानन्दचरित्र

ईश्वरस्तुति।

आयाहूं शरण तुम्हारी भगवान। दो मुझको कृपा से तुम अभयदान ॥१॥
अपराधों की मेरे है न गिनती। करता हूं सभी की तुम से विनती ॥२॥
नहिं धर्म अधर्म का ज्ञान मुझको। है एक तेराही ध्यान मुझको ॥३॥
स्वामी है तुहि मैं दास तेरा। क्योंकर न करेगा पार बेड़ा ॥४॥
सत्शास्त्र तुम्हें कहते हैं कृपालु। क्यों मुझपै दया नहीं दयालु ॥५॥
रटता हूं तेराही रात दिन नाम। है तेरे सिवा किसी से क्या काम ॥६॥
शिव विष्णु तेरेही हैं उपासक। भक्तों का तुही है दुःख नाशक ॥७॥
ज्ञान अपना मेरे हृदय में भरदो। भव सिंधु से शीघ्र पार करदो ॥८॥
याचक न बनूं कभी किसी का। तेराही रहे सदा भरोसा ॥९॥
नहिं औरको मैं उपास्य जानूं। एक तुमकोही अपना इष्ट मानूं ॥१०॥
सन्मार्ग में तुम मुझ चलाओ। दुष्कर्मों से मन मेरा हटाओ ॥११॥

कलिकाल वर्णन।

कलिकाल ने आगमन किया है। सद्धर्म समूल हर लिया है ॥१॥

विद्याकी हुई है जबसे हानि । सबहीको होगई है ग्लानि ॥२॥
बौद्धोंका हुआ जो राज्य यांपर । गये धर्मकी मूछ ले छिपाकर ॥३॥
यमनोंका यहां जो राज्य आया । सद्धर्म उन्होंने सब मिटाया ॥४॥
बल करके चलाया धर्म अपना । निर्बलसे कराया कर्म अपना ॥५॥
धन देके किसीका छीनिया धर्म । करने न दिया किसीको सत्कर्म ॥६॥
ईश्वर ने कृपाकी दृष्टि फिर की । डूबीथी ये नाव सो पकड़ली ॥७॥
अंग्रेजों को यांका नृप बनाया । शीतल है प्रजापै जिनकी छाया ॥८॥
मतसे नहीं द्वेष है किसी के । जो चाहे करे जिसे सुनावें ॥९॥
मतमें न किसी के हाथ डाले । हिंदू सर्व सुख समान पालें ॥१०॥
फिर यमनोंने फिर जो कुछ उठाया । ईश्वरने उन्हें वहीं दबाया ॥११॥
किया इन्द्रमणीने उनका खंडन । निजमतका दिखाया इनको मंडन ॥१२॥
अब परमें हुआ जो एक मतिमंद । नाम उसका प्रसिद्ध है दयानंद ॥१३॥
ज्ञानवृक्षको न दीया सत् असत् का । अभिमान था जिसको वेदमतका ॥१४॥
सद्धर्मका यह हुआ है नाशक । अज्ञानकी जड़ हुआ प्रकाशक ॥१५॥
थिया तुम्हें उसकी मैं दिखाऊं । छल उसके सही उसे हराऊं ॥१६॥
देखो दयानंद का पराक्रम । जिससे दयानंदियों को है भ्रम ॥१७॥
स्वामीजीकी या अशुद्धियां हैं । साथ उनके हमारी युक्तियां हैं ॥१८॥
संक्षेप उसीका जानो इसको । दयानंद भारैमें माना इसको ॥१९॥
[illegible] ॥२०॥

अनुकारी सत्य मान लीजे । और झूठ दूरही त्यागदीजे ॥२१॥
सत्यार्थ में काहेंय क्यों लिखाहै । ये ग्रंथ अधर्मकी शिक्षा है ॥२२॥
गोवध भी लिखा करो तो भाई स्वामीजीकी कुछ दयाभी आई ॥२३॥
सौ बार लिखी मद्दों को मुक्ति । ऐसी फिर उनके यह कौन युक्ति ॥२४॥
मुक्तिसे लिखा जो लौट आना । ऋषियों का लिखा भूपाही जाना ॥२५॥
काहिय तो ये थोथ बुद्धि की है । स्वामीजीने या अशुद्धि कीहै ॥२६॥
मुक्तों के लियेहै लोक सारे । लिखते हैं ये स्वामीजी तुम्हारे ॥२७॥
फिर कहने लगे वह बात कैसी । क्यों न करे कदापि जैसी ॥२८॥
मुक्तिमें नहो जो लौट माना । तो भीड़का बाकी क्या ठिकाना ॥२९॥
स्वामीजीको छायाकैसा अज्ञान । इस बुद्धिपै रोवें क्यों न विद्वान् ॥३०॥
मुक्तिसे नहीं कदापि बंधन । सद्शास्त्र करेहै इसका मंडन ॥३१॥
विद्वानोंका यासे है मंतव्य है । व्यास आदिको कर्मोका पै लिखाहै ॥३२॥
मृत पुरुषोंका श्राद्ध पहिले माना । फिर आप विरुद्ध उसको जाना ॥३३॥
दशपुरुषोंसे जो नियोग बतलाया । फिर और अधर्मसे क्यों घबराये ॥३४॥

२६—सत्यार्थप्रकाश पहिला मुद्रित सन् १८७५ का पृष्ठ १०६ । २४—मुक्तिप्रकाश में देखो । २५—सत्यार्थप्रकाश दूसरा मुद्रित सन् १८८४ का पृष्ठ २९ तथा २८८ । २९—सत्यार्थप्रकाश पहिला पृष्ठ ४ तथा ७७ । ३४—ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका पृष्ठ २१४ और सत्यार्थ प्रकाश दूसरा पृष्ठ ११८ ।

जो गर्भवती पति से होजे । करतेहैं नियोग वहभी करले ३५॥
वद्दपश करे फिर उसकी संतान । देखोतागुरुका अपने अज्ञान३६॥
गाभ उदरमें मिसके पहिला । कैसे उसे गर्भ फिर रहेगा ३७॥
स्वामीजीने धर्म यहा बताया । व्यभिचारकाक्रमतुम्हें सिखाया३८॥
इअरन उदित हैं सेद चारो । सर्गादि में श्रीमुजापति को ३९॥
क्यों छतहो अग्नि वायुका नाम । निकलेगान कुछभी इससेकाम४०॥
कहना मेरा तुम यह सत्यमानो । श्वताश्वर उपनिषत्को मानो४१॥
ब्रह्माकी है वेदमें बड़ाई । कौन उनकी सदृश हुआहै भाई ४२॥
ते सबसे प्रथमहुए हैं उत्पन्न । कौन उनमें प्रथम हुआहैउत्पन्न४३॥
अध्याय में य कैसी टीका की है । ईश्वरकी परिक्रमा लिखीहै४४॥
कार्मिवहविष्णुहै या परिच्छिन्न या बुद्धिहीस्वामीजीकीकुण्ठितम४५॥
स्वर्ग और नरक न लोक माने । सुख दुःखमईको भोगमाने४६॥
कठ वल्लीका पाठकीजे निर्भय । वो लिक्खा है स्वर्गलोक प्रत्यक्ष४७॥
व्रत-पशुकाभी सुनो जो पाठ करको स्वर्गलोक अनेकवारदेखो४८॥
पंद मुन्नु इस श्रुतिको भाई । छांदोग्य में उसने जो बताई४९॥
मांहे नहीं उक्त उपनिषद में । विद्वानों ने ऐसे लख हो है५०॥

३८—३९—सत्यार्थप्रकाश दूसरा पृष्ठ १२० । ४४—पञ्चयज्ञमहाविधि मुद्रित संवत् १९३४ का पृष्ठ १४ । ४५—सत्यार्थप्रकाश दूसरा पृष्ठ ५९० । ४९—सत्यार्थप्रकाशपरीक्षा पृष्ठ १२७ ।

गायत्रीको चारों वेदमें जो। संध्यामे लिखा तुम्हारी देखो ५१॥
दिखलाओ अथर्व में कहां है। स्वामीजीकी अज्ञतो यहां है ५२॥
लिक्खा है जो सामनाथका हाल। वहभी दयानन्दजीकाहैजाल ५३॥
चुंबक की वहां शिला लगी थी। आकाश में मूर्ति खड़ी थी ५४॥
दिखलाओ तो यहकहां लिखा है। बतलाओ प्रमाण इसमें क्याहै ५५॥
स्वामीजीने झूठ यह बनाया। शंकरको किसने विषखिलाया ५६॥
फिरउनके बदन पे निकल फोड़े। इस खेदसे प्राण उन्होंने छोड़े ५७॥
दिखलाओ तो यह कहां लिखा है। बतलाओ प्रमाण इसमें क्याहै ५८॥
जो वर्ण विषयपै श्लोक मनुका। स्वामीने तुम्हारे घेरमसीटा ५९॥
देखोतो वहां प्रसंग क्याहै। स्वामीजीने छल कपट कियाहै ६०॥
प्रह्लादकी जो कथा कही है। स्वामीजीकी है य भागवतमें ६१॥
एक खम्ब था लोहे का बनाया। अग्नि में उसे बहुत तपाया ६२॥
प्रह्लादसे फिर कहा पकड़ ले। देखें तेरा राम किस जगहहै ६३॥
भ्रम दिलमें जो उसके कुछ समाया ईश्वरने दिखाई अपनीमाया ६४॥
चिवटी लगीं चलने खम ऊपर। प्रह्लादके मनसे तबगयाडर ६५॥
ये बात नहीं है भागवत में। स्वामी जीकी सारी कल्पना है ६६॥

५१–उक्त पञ्चमहायज्ञविधि पृष्ठ २६। ५३–सत्यार्थप्रकाश दूसरा पृष्ठ ३१९। ५६–सत्यार्थप्रकाश दूसरा पृष्ठ २८७।५९–उक्त सत्यार्थप्रकाश पृष्ठ ८८।६१–उक्त सत्यार्थप्रकाश पृष्ठ ३१३।

मच्छर की, जो, कथा, लिखी है। स्वामीजीने यह मृषा लिखी है।६७।
दोष अपना छुपाया दूसरों पर। ईश्वर का भी उनको भान नहीं डर६८।
मान उनको नहीं था भागवत का। देखो तो लिखा है झूठ कैसा।६९।
पृथ्वी को असुर का लेके जाना। इसें भागवत में तुम दिखाना।७०।
लिखी है कथा जो पुराना की। नहीं भागवत में सर्वथा भी ७१॥
छः कोश का था, मधु कैटभ का। सच्चा है तो भागवत में दिखलाना॥
इत्यादि में भागवत की गाथा। लिखी है झूठ कहो तो भ्राता ७२॥
जयदेव का गोपदेव भाई। सेवक भी वो वेदुकी मिलाई ७३॥
इस बात को सिद्ध करके दिखला। था झूठ गुरु का अपने बचका ७५॥
जो श्लोक ग्रहण विषय में लिखता। कहते हैं उस शिरोमणी का ७६॥
यह श्लोक शिरोमणी में कब है। स्वामीजी का लेख झूठ सब है ७७॥
पृथ्वी का जो भ्रमण लिखा है। यह श्लोक भी लल्ल से मृषा है ७८॥
स्वामीजीने यह श्रुति रे लिखी। जिसमें कि भूषा लिखी है पृथ्वी ७९॥

६७–वक्त सत्यार्थप्रकाश पृष्ठ २४। ६८–सत्यार्थप्रकाश दूसरा पृष्ठ २१३। ७१–वक्त सत्यार्थप्रकाश पृष्ठ १२४। ७२–वक्त सत्यार्थ प्रकाश पृष्ठ २१५। ७४–वक्त सत्यार्थप्रकाश पृष्ठ २१६। ७६–वक्त सत्यार्थप्रकाश पृष्ठ २२८। ७८–ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका के पृष्ठ १३५ से १३९ तक तथा दूसरे सत्यार्थप्रकाश के पृष्ठ २१८। ७९–दूसरी बार की छपी संस्कारविधि का पृष्ठ १२७। पृ॰ [illegible]

पीछलिखा व्यासजी कोविद्वाना।पहिले रखा वुनके शिरपे सम्मान ८० ॥
सूत्र उनका विरुद्ध वेद जाना।सत्यादि काके किये क्या ठिकाना ८१॥
है वेद में पद नया विचाय। निंदक है स्वामीजी, इसके भावः ८२॥
स्वामीजीने इसकी निंदा की है।मात उनकी विरुद्ध वेद की है ८३॥
करते हैं, पद होके द्वैत वादी। ईश्वरका जीव काई विजाती ८४॥
स्वामीजी का ज्ञान अन्यथा है। पद मत करो द्वैत वादका है ८५॥
मिथ्येहि स्वतंत्रताका अभिमानी परतंत्र सदा ही जीव को जान ८६॥
जीवोंको जो तुमने भ्रान्त माना। गणना इसे वेदमें दिखाना ८७॥
वेदों में अनंत उन्हें कहा है। सब शिष्टोंका मत यही रहा है ८८॥
जब शुक्ल यजु का वेद माना। श्री कृष्ण से क्या विरोध ठाना ८९॥
शाखा और को वेद तुम न मानो।व्याख्यान उन्हें वेदका बखानो ९०॥
शाखाहैं प्रकट पे संहिता चार।तुम करते हो जिनका वेद स्वीकार ९१॥
इनमें भी जो सत्य उसको जाना।जो जिसको सभीने सत्य माना ९२॥

८०–सत्यार्थप्रकाश दूसरा पृष्ठ २३७ तथा ११८। ८१–उक्त। सत्यार्थप्रकाश पृष्ठ ३१९। ८३–उक्त सत्यार्थप्रकाश पृष्ठ १४९ ८५–उक्त सत्यार्थप्रकाश पृष्ठ २४। ८६–सत्यार्थप्रकाश दूसरा पृष्ठ ५९०। ८७–भ्रांततत्वप्रकाश देखो। ९१–उक्त संहिता–शाकल माध्यन्दिन–कौथुमी–और शौनकीय नामक शाखा हैं। ९२–सत्यार्थप्रकाश दूसरा पृष्ठ ३८२।

कहताहै तू इसकी भेद मंडन । मत्यक्ष है जोकि उसका खंडन ९३ ॥
स्वामीजीकी इती कुछ भी पुष्टिता करते ने ऐसी वरअशुद्धि ९४ ॥
अद्वैत में नहीं कभी भलाई । नहीं सत्य में है कोई बुराई ९५ ॥
क्यों सत्यमें तुमको शत्रुताहै । अनृतका हित् समझ लिया है ९६॥
कहना मेराअबभी तुमको मानोसितमतको असत् असत्को जानो ९७॥
पीताथा वह भांगभी अमूठी । दाँप खानेस मरे दिन उतरी ९८ ॥
भगड़काहा एसे कैस विश्राम । दिनरात रहे जो भांगका दास ९९ ॥
गईभांगमें उसकी बुद्धि मारी । लिखी इससेही उलटीबातसारी १०० ॥
वह सांड कहांहै हमको दिखला । जिसमें सरा स्वामी घुमगयाथा १ ॥
जब रोकने उसको आ दबायाथा कहिये उसे किसने यों बचाया २ ॥
दोक्रोध से वो महायक आये । इस लव में वाल भी हँसाये ३ ॥
गावध जिन्हें आप करते दखा भोजन किया उनसे ठोक सीधा ४ ॥
मिनलोगोंको मृतपरमजाना स्वीकार किया न उनको खाना ५ ॥
राजा से लिया है द्रव्य है दसा शिव मूर्ति है जिन का इष्ट मत्पक्ष ६ ॥
षट् मास उन्हींका खाना खाया । सबभांति वहां स्वमतगवाया ७ ॥
पुस्तक जो छपाये व्याकरण के । ये येभी उपाये धन हरण के ८ ॥

१९८—दयानंदजीवनचरित्र

१—उक्त जीवनचरित्र पृष्ठ १०॥ जीवनचरि० १०

४—उक्त जीवनचरित्र पृष्ठ २।

५—उक्त जीवनचरित्र पृष्ठ

धनउसमेंमिन्दोसेत्रण किंयाथासर्वकहियेकिवनकोफिरादियाथा९॥
छलवलसेदरणकियाईपरधनाछवझीनपांचसकोपनमें तनमन१०॥
मुंशीजीको द्रव्य कैसा मारो । जाने है इस जमाना सारा ११ ॥
जोवालदुर्धासेरखतोहोपासोकांदियेतो फिरउसकोकैसासंन्यास१२॥
धन जिसका जमा होसेठ के पासहिर्पूण उसीका योग संन्यास१३।
टाइपका सुकजो कारखाना। क्यों लक्ष से न्यून हो खजाना१४ ॥
बाईकोला अपने पास बुलवायें।सन्यासीकलिमें बहरी कहलायें१५॥
सवकमीहोमिनकेसायदाचार।सन्यासकाी उन्हींको अधिकार१६॥
धनमेंरहा जिनकारातदिन ध्यान।सन्यासीकहोउन्होंकोधीमान१७॥
कर बैठे जो वेद कामी खंडन।फिर क्या वह करेंगे और मंडन१८॥
दयसेभीअधिक दुखाव्हाजिनेपरिव्राट्का पद न क्योंमिले तब१९॥
मुरदेका उन्होंने चीरा लाशा। संन्यास के धर्मको प्रकाशा २०॥
वह तेज छुरी कहांसे आई। मुरदे के जा अंगपर चलाई २१॥
कहिय कहीं डाक्टरीपदी थी। या माग गुरुजी को पढी थी२२॥

दोहावली।

लिखा निषेध आपनि प्रथम, शूद्र वर्ण को वेद ।
फिर उसके लिये की विधि, हुआ परस्पर भेद ॥ १॥
निज कर्मोंसे मनुजके पाप होंय सब नष्ट।

२०–उक्त जीवनचरित्र पृष्ठ ८१।

२–सत्यार्थप्रकाशद्वितीयमुद्रित सन् १८८४कापृष्ठ ४४फिर७४

निज ग्रंथोंमें आपने, लिखे वचन ये स्पष्ट ॥ २ ॥
फिर क्या मनमें आगई लिख बैठे यह आप ।
मन भोगे इच्छा नहीं किसी भांति कोई पाप ॥ ३ ॥
लिखा समाधि निर्मूल इति वचन उपनिषत्प्रमान ।
जो द्वादशमें है नहीं इसेका क्यों विधान ॥ ४ ॥
लिखा नाम परमात्मा का नारायण आप ।
स्वामीजी को फिर उदय हुआ कौनसा पाप ॥ ५ ॥
नारायणाय नमः इति है यह वेद विरुद्ध ।
लिख बैठे क्रम यथा एसा आप अशुद्ध ॥ ६ ॥
लिखा मनुके नाम से मिथ्यावादी श्रीमान ।
विविध तरह और स्वर्णका सन्यासी को दान ॥ ७ ॥
मनुस्मृति में है नहीं कहीं यह अर्द्धश्लोक ।
स्वामीजीकी बुद्धि पर महाशोक महाशोक ॥ ८ ॥
धन सग्रह के हेतुहीं करी लिखा पर जाल ।

३—सत्यार्थप्रकाश दूसरा पृष्ठ १३ १८७८ ।
४—उक्त सत्यार्थप्रकाश पृष्ठ १८७ ।
५—उक्त सत्यार्थप्रकाश का पृष्ठ-१९ ।
६—उक्त सत्यार्थप्रकाश पृष्ठ २६ ।
७—उक्त सत्यार्थप्रकाश पृष्ठ ६१५ ।

संन्यासी का दोष भया है पापी कलिकाल ॥ ९ ॥

युद्धे चाप्यपलायनं का लखा किया अनर्थ।
ऐसे मिथ्या कथन को किसको हुई समर्थ ॥ १० ॥
पोस्ता दुर्ग भागन से होती हाजीत।
सो ऐसाही कीजिये दयानन्द की नीत ॥ ११ ॥
युद्धे चाप्यपलायनं काहे सीधा अर्थ।
नहीं भागनी युद्ध से और कथनसब व्यर्थ ॥ १२ ॥

शिखा सूत्र जिसके नहीं वह ईसाई समान।
स्वामीजी यह लिख चुके हैं सत्यार्थ प्रमान ॥ १३ ॥
शिखा सहित छेदन करो यहभी उनका लेख।
जो सत्यार्थप्रकाश में दोनोंही को देख ॥ १४ ॥
शिखासूत्र का त्याग वे कर बैठे थे आप।
सत्य कहो किस कर्म से हुए पुन निष्पाप ॥ १५ ॥
साठ वर्ष गत आपकी लिखी व्यवस्था मूल।
दो किरोड से अधिक है स्वामीजीकी भूल ॥ १६ ॥

११—सत्यार्थप्रकाश दूसरा पृष्ठ ९१।
१३—उक्त सत्यार्थप्रकाश पृष्ठ १७६।
१४—उक्त सत्यार्थप्रकाश पृष्ठ १५८।
१६—ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका के पृष्ठ २२। २४।

करै आर्यावर्त में जो सर्वदिन से वास ।
यही आर्य्य जो धर्म में निशि दिन करे प्रयास ॥ १७ ॥
कही आर्यों की पुनः तिब्बत में उत्पत्ति ।
वहां से यां आकर बस ऐसी पड़ी विपत्ति ॥ १८ ॥
स्वामीजी के लेख से प्रकट हुई यह बात ।
आदि सृष्टि के ऋषि मुनि थे अनार्य विख्यात ॥ १९ ॥
नहिं सत्यात् इसप्रवचनको वचन उपनिषद् बताय ।
स्वामीजी ने बुद्धिको अपनी दिया दिखाय ॥ २० ॥
कहें वेदसम श्रुतिको वैत्तिरयकी आप ।
वह उसमें कहीं है नहीं कहिये किसका पाप ॥ २१ ॥
स्वामीजी की अज्ञता नेत्र खोलकर देख ।
ब्राह्मणस्य विज्ञानत नहीं वेद का लेख ॥ २२ ॥
लिखा मुक्तिको आपने कारागार समान ।

१७–आर्य्योद्देश्यरत्नमाला पृष्ठ ११ सत्यार्थप्रकाश दूसरा पृष्ठ ५८० ।
१८–सत्यार्थप्रकाश दूसरा पृष्ठ २१४ ।
२०–सत्यार्थप्रकाश दूसरा पृष्ठ ५८९ ।
२१–सत्यार्थप्रकाश दूसरा पृष्ठ २१७ ।
२२–उक्त सत्यार्थप्रकाश पृष्ठ १२६ ।

सदृश आपकी है नहीं कोई नास्तिक मान ॥ २३ ॥
जिस मत में काहीं पुरुष चर झूठा नहीं होय ।
जो झूठा उसका करे जाता झूठा सोय ॥ २४ ॥
स्वामीजी निज लेख से ठहरे झूठे आप ।
मुसलमान ईसाई सब सच और निष्पाप ॥ २५ ॥
स्वामीजी ने वेदकी शाखाली जा मान ।
महाभाष्यसे चारका उन में अंतर जान ॥ २६ ॥
शारीरक संक्षेप का जीवशो यह श्लोक ।
दयानंदजी ने लिखा महाशोक महाशोक ॥ २७ ॥
जिस मत के चले हुए रहे जहां दिन रात ।
उस मतकी जानी नहीं एक सुलझी बात ॥ २८ ॥
फिर शारीरकभाष्यकाकहा जो उक्त श्लोक ।
उस में भी वह है नहीं देख सकलन लोक ॥ २९ ॥
रूप रूप यह वचन मुंडक का बतलाय ।

२३–उक्त सत्यार्थप्रकाश पृष्ठ २४१ ।
२४–उक्त सत्यार्थप्रकाश पृष्ठ ९४९ ।
२६–उक्त सत्यार्थप्रकाश पृष्ठ ९८७ ।
२७ । २९–सत्यार्थ प्रकाश दूसरा पृष्ठ १९

स्वामीजी ने अङ्गता अपनी दी दिखलाई ॥ २० ॥
ईश्वर का आदिसृष्टि में प्रत्यक्ष होना इत्यादि बातें ॥ ॥
उन के मत में होगया परिच्छिन्न भगवान ॥ २१ ॥
है अभाव संतान में तो नियोग स्वीकार ।
तो दश संतति का पुनः कैसे किया विचार ॥ २२ ॥
स्वामीजीका कथनहै जो न मांस कोई खाय ।
मत्स्यादि जल जंतु की वृद्धिबहुत बढ़जाय ॥ २३ ॥
फिर मनुष्यगणको वही मार मारकर खायँ ।
धान्य न उपजे खेतमें सब मनुष्य मर जायँ ॥ २४ ॥
धन्य आपकी बुद्धि को धन्य आपका धर्म ।
क्योंकि मनके युक्ति लिखी मिलत न आईमर्म ॥ २५ ॥
वृषभादिक का वध लिखा यह धर्म के कार्य ।
हाय हाय कलिकाल में उपजे ऐसे आर्य ॥ २६ ॥

२०–उक्त सत्यार्थप्रकाश पृष्ठ १९० ।
२१–संस्कारविधि मुद्रित १९११ पृष्ठ २४७ ।
२२–ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका पृष्ठ २१४ सत्यार्थप्रकाश दूसरा पृष्ठ ११८ ।
२३–सत्यार्थप्रकाश मुद्रित सन् १८७५ पृष्ठ ३०२ ।
२४–उक्त सत्यार्थप्रकाश पृष्ठ ३०१ ।

मांस आदि से होम की विधि की दोनों काठ।
रचा वेदके नामसे कैसा मिथ्या जाठ ॥ ३७ ॥
नहीं मांस के पिंडभी देने में कुछपाप।
स्वामीजी का लेखहै करलो निर्णय आप ॥ ३८ ॥
स्वामीजी के लेख में है बहु शास्त्र विरुद्ध।
मैंने दिखलाया यहां किंचिन्मात्र अशुद्ध ॥ ३९ ॥
इतनेही से सिद्ध है सब उनका अज्ञान।
बुद्धिमान कैसे कहें फिर उनको विद्वान ॥ ४० ॥
थोड़ाभी जिस ग्रन्थ में हो असत्य तुम देख।
छोड़ो उसका सत्य भी स्वामीजी का लेख ॥ ४१ ॥
उन के ग्रन्थों में दिया हमने अनृत दिखाय।
जो कुछ उन में सत्यहो सो भी चलो विहाय ॥ ४२ ॥
केवल तुमको संहिता हैं प्रमाण जो चार।
तो अपने मतव्य को करो वेद अनुसार ॥ ४३ ॥
स्वामीजी ने जो लिखा पुनर्जन्म विचार।
दिखलाओ वह वेद में हमको उसी प्रकार ॥ ४४ ॥

३७—उक्त सत्यार्थप्रकाश पृष्ठ ४५।
३८—उक्त सत्यार्थप्रकाश पृष्ठ १०९।
४१—सत्यार्थप्रकाश दूसरा पृष्ठ ७२। ७३।

सब मनुष्य सब देश से लो स्त्री का दान ।
स्वामीजी के लेख में दीजे श्रुति प्रमाण ॥ ४५ ॥
ऋतु नदी पर्वत, अरु वृक्षादिक परत्याग ।
ऐसी कन्या से वर्जित नहीं विवाह का काम ॥ ४६ ॥
स्वामीजी का यह कथन करो वेद से सिद्ध ।
नहिं तो इन की असत्यता है सर्वत्र प्रसिद्ध ॥ ४७ ॥
कहां लिखा निज ग्राम में करें विवाह न आर्य ।
और सपिंड माता कुल में नहीं उचित यह कार्य ॥ ४८ ॥
आठ प्रकार के वेद में लिखे विवाह कहां मित्र ।
दिखलाओ लक्षण सहित सब को आप पवित्र ॥ ४९ ॥
प्रत्यक्षादिक आठ हैं स्वामीजी के मान ।
चार वेद में नाम का इनके नहीं निशान ॥ ५० ॥
जो आहुति गर्भाधान में है तुम को स्वीकार ।
कहो कौनसी संहिता के हैं वे अनुसार ॥ ५१ ॥

४५—सत्यार्थप्रकाश दूसरा पृष्ठ ६७ ।
४६—सत्यार्थप्रकाश दूसरा पृष्ठ ८० ।
४८—सत्यार्थप्रकाश दूसरा पृष्ठ ७८ ।
४९—उक्त सत्यार्थप्रकाश पृष्ठ ९२ ।
५०—उक्त सत्यार्थप्रकाश पृष्ठ १४ ।

पंचयज्ञविधि में लिखा जो जो क्रिया विधान ।
दिखलावे तो वेद में हमको कोई विद्वान ॥ ५२ ॥
संस्कारविधि में लिखा जो, जो कुछ व्यवहार ।
नहीं वेद में यह कहीं हुई तुम्हारी हार ॥ ५३ ॥
गुप्त लिंग की शिष्य के करे गुरू क्या शुद्धि ।
यजुर्वेद के भाष्य में देखा गुरु की बुद्धि ॥ ५४ ॥
नीलगाय घोड़ी लिखो आज्ञा जिसने आर्य ।
कहां दया उस में रही कैसे वह निष्पाप ॥ ५५ ॥
बकरे का घी दूध भी लिख बैठे महाराज ।
महा असंभव लिख के आई कुछ भी लाज ॥ ५६॥
माता समसुत्ववर्द्धिनी पत्नी को हो मात ।
दयानन्द का लेख है हँसे न क्यों फिर आप्त ॥ ५७ ॥
गध्र और उल्लूक को पालें क्यों नहीं आर्य ।
वदभाष्य में लिखगया जब उनका आचार्य॥ ५८ ॥

५४-दयानंदकृत यजुर्वेदभाष्य अध्याय६मंत्र १४ का पदार्थ
५५-उक्त भाष्य अध्याय १३ मंत्र ४८ का भावार्थ ।
५६-उक्त भाष्य अध्याय २१ मंत्र ४३ का पदार्थ ।
५७-उक्त भाष्य अध्याय २१ मंत्र ४० का भावार्थ ।
५८-अध्याय ९ मंत्र ३२ का पदार्थ तथा अध्याय २४ मंत्र
२३ का पदार्थ ।

स्वामी जी विद्वान् को कहैं जमाई समान।
कर समागम कथनपर अपने गुरु के ध्यान ॥ ५९ ॥
दयानंद की प्रार्थना देखे सो व्युत्पन्न ।
हे परमेश्वर कीजिये सर्पों को उत्पन्न ॥ ६० ॥
हे जगदीश्वर मच्छियों से जीवें जो लोग ।
उन को भी उत्पन्नकर यह क्या किया प्रयोग ॥ ६१ ॥
बहुपशु वाला होयकर और हुताशन खाय ।
दयानंद यह लिख गये सोई प्रशंसा पाय ॥ ६२ ॥
परम ऐश्वर्य निमित्त हो कर बैल से भोग ।
दयानंद के लेख को समझें सज्जन लोग ॥ ६३ ॥
चिकने पशुओं के प्रति वस्तु पचाने योग ।
ग्रहण करें यह क्या लगा दयानंद को रोग ॥ ६४ ॥
माने वाले सूअर सम हे राजन् यह लेख ।
यजुर्वेद के भाष्य में गुरुजी का को देख ॥ ६५ ॥

५९–अध्याय २७ मंत्र २४ का पदार्थ ।
६० अध्याय २० मंत्र ३१ का पदार्थ ।
६१–अध्याय २० मंत्र ३१ का पदार्थ ।
६२–अध्याय १९ मंत्र १० का भावार्थ ।
६३ । ६४–अध्याय ११ मंत्र ६० का पदार्थ
६५–अध्याय १९ मंत्र ९२ का पदार्थ ।

दयानद ने वैश्य को लिखा है ऊंट समान ।
चेले गुरु के वचन को करें अवश्य प्रमान ॥ ६६ ॥
करें परिक्षा परस्पर कन्या पुरुष सप्रीति ।
फिर विवाह अपना रचें दयानन्द की रीति ॥ ६७ ॥
सेना तियगणकी करे सभापति स्वीकार ।
स्वामीजी की आज्ञा चेले लें सिर धार ॥ ६८ ॥
पशुहानिकारक जो हों उनको मारे दक्ष ।
दयानद ने क्या किया हिंसारत यह लेख ॥ ६९ ॥
सच्चापण सत्आचरण यही धर्म की मूल ।
धम निकट उसके नहीं जो इन के प्रतिकूल ॥ ७० ॥
जो अपना चाहे भला कर सब सत् व्यवहार ।
सत् से है जय सर्वदा और असत् से हार ॥ ७१ ॥
एक पुरुष का क्यों बने अनुयायी धीमान् ।
वृथा पराये दोष को शिर न धरें विद्वान् ॥ ७२ ॥
पयको पीवे प्रीति से हंस नीर तज देय ।

६६–अध्याय १४ मंत्र ९ का पदार्थ ।
६७–अध्याय १९ मंत्र ९१ का भावार्थ ।
६८–अध्याय १७ मंत्र ४४ का भावार्थ ।
६९–अध्याय १३ मंत्र ४८ का भावार्थ ।

तू असत्य को त्याग दे सत्य ग्रहण कर लेय ॥ ७३ ॥
काम क्रोध मद लोभ से राखो मन को रोक ।
ये सुखदाता के नहीं, देंय दारुण शोक ॥ ७४ ॥
परधन और परदार में कभी न कर अनुराग ।
परद्रोही तू मत बने परनिंदा को त्याग ॥ ७५ ॥
किसी मांस में भूलकर कभी न कीजे प्रीति ।
निरपराधियों का हनन है मत्तास अनीति ॥ ७६ ॥
कन्याविक्रय का करें जो पापी व्यवहार ।
दड नहीं उनके लिये कैसा धर्मप्रचार ॥ ७७ ॥
त्याग दिया उपनयन को और द्विजत्व का मान ।
मनुस्मृति को देखलो हैं वे शूद्र समान ॥ ७८ ॥
करा यज्ञ उपवीत का अर्थ भी शीघ्र प्रचार ।
और धर्म का है नहीं बिन इसके अधिकार ॥ ७९ ॥
गायत्री त्रयवर्ण की लिखी शास्त्र में एक ।
कहें विरुद्ध इसके वही जिनको नहीं विवेक ॥ ८० ॥
ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य में, रहें जो वेद विहीन ।
हों सवश शूद्रत्व को प्राप्त शीघ्र ये तीन ॥ ८१ ॥
प्रबल आज्ञा वेद की लिखी जिन्हें ऋषिराज ।
क-ख-ग-जानें नहीं प्राय वश में आज ॥ ८२ ॥

उस वर्ण को आज कल है सबका अभिमान ।
क्या इसको कर्तव्य है इसका नहीं कुछ ज्ञान ॥ ८३ ॥
मद्य मांस करने लगे ग्रहण द्विजाती लोग ।
वेश्या और परपत्नि से करें अशु संयोग ॥ ८४ ॥
करो प्रतिज्ञा यों सफल मुखसे कहो विचार ।
जो वाणी मिथ्या हुई सो जीवन धिक्कार ॥ ८५ ॥
परब्रह्म परमात्मा एक उपास्य के जान ।
बने उपासक अन्यका सो है पशु समान ॥ ८६ ॥
सत्य बात जो रिपु कहे सो भी लीजे मान ।
और असत्य गुरु कथन को सुरा समान के जान ॥ ८७ ॥
जगन्नाथ जगदीश को मेरा नवावो शीश ।
सकल मनोरथ सफल हो रहे बात इक्कीस ॥ ८८ ॥

इति ।

स्वर्गसिद्धि ।

आजकल दयानदानुयायी लोग कहते हैं कि स्वर्ग नरक कोई
…क विशेष नहीं है किंतु सुख विशेषका नाम स्वर्ग और दु:ख
…षका नाम नरक है अब समय में उनके गुरु ऐसाही उपदेश
…र गये हैं (विनाशकाले विपरीतबुद्धि) देखो दूसरी बारका

छपा हुआ सत्यार्थप्रकाश पृष्ठ ५९० स्वर्ग नाम सुख विशेष भाग और उसकी सामग्रीकी प्राप्ति का है—नरकजो दुःख विशेष भोग और उसकी सामग्रीका प्राप्त होनाहै दयानन्दजीका यहकथन सर्वथा शास्त्रविरुद्ध है क्योंकि सत्शास्त्रों में स्वर्ग, नरक लोक वि शेषही मानेहैं अब हम दयानन्दजीके मत वालोंका प्रथम उनके गुरुहीके लखस स्वर्ग नरक लोक विशेष दिखाते हैं और उनके स्वामीका परस्पर विरुद्धकथन बतलातेहैं देखो पूर्व सत्यार्थप्र काश पृष्ठ १३७ उसका वही धर्म परलोक अर्थात् स्वर्ग लोक अथवा परमानन्द परमेश्वर को प्राप्त करदताहै पृष्ठ १८९ शूर वीरतासे उत्साह पूर्वक निर्भय समय में देहका जो छूटना सोही स्वर्ग जानका कारणहै पृष्ठ १९७ जो राजा अन्याय करनेवाले को दंड नहीं देता और अनपराधीको दंड देताहै उसकीबड़ी अपकीर्ति होतीहै और नरक को भी वह जाताहै पृष्ठ२०४ कुम्भी पाकादिक दुःख रूपी लोक पृष्ठ १०७ जोराजा आर्त नाम दुःखी त्याग गाली तकभी दें तौभी सहनकरताहै सोई राजा स्वर्गमें पूज्य होताहै और जो ऐश्वर्यके अभिमान से किसीका सहन नहीं करता इसी से वह नरकको जाताहै पृष्ठ २१० वह नामा भम लोक अर्थात् स्वर्गके राज्यका भागी होताहै पृष्ठ २११ सोई पर मेश्वर पृथ्वी से लेके स्वर्ग पर्यन्त जगत्‌को रचके धारण करता

भया पृष्ठ ११३ जीव स्वर्ग नरक जन्म और मरण इत्यादिकोंमें भ्रमण करताहै पृष्ठ २९४ प्रश्न स्वर्ग और नरक लोकहैं या नहीं उत्तर—सब कुछहै क्योंकि परमेश्वरके रचे असख्यात लोकहैं। उन मेंसे जिन लोकोंमें सुख अधिक है और दुःख थोड़ा उनको स्वर्ग कहते हैं तथा जिन लोकोंमें दुःख अधिक है और सुख थोडाहै उनको नरक कहतेहैं और जिन लोकों में सुख और दुःख तुल्य हैं उनको मर्त्यलोक कहतेहैं इस प्रकारके स्वर्ग मर्त्य और नरक लोक बहुतहैं इत्यादि—पृष्ठ २६७ स्वर्गादिक सबलोक संयोग से बने हैं पृष्ठ ३११ उसको स्वर्गवास मिलताहै यहां स्वर्ग शब्द बहि श्तके पर्याय में लिखाहै जोमुसल्मानों के मत में स्थान विशेषहै— सत्यार्थप्रकाश मुद्रित सन् १८८४ कापृष्ठ २४८ जिनाक्रिये कर्मों के सुख दुःख मिलतेहैं तो आगे नरक स्वर्ग भी न होना चाहिये क्योंकि जैसे परमेश्वर ने इस समय बिना कर्मों के सुख दुःख दियाहै वैसे मर पीछे भी जिसको चाहेगा उसको स्वर्ग में और जिसको चाहे नरक में भमदेगा इत्यादि यहां स्वर्ग नरक लोक विशेष स्पष्ट मान लिये आर्याभिविनय पहिला पृष्ठ ४७ स्वर्ग सुखसाधन लोक पृष्ठ ९१ पृथ्वी से लेके स्वर्ग पर्यंत जगत का कर्ताहै पृष्ठ ९६ स्वर्ग सुख विशेष स्थान और भूमि मध्य सुखवा का लोक तथा दुःख विशेष नरक सबलोकोंका रचाहै संस्कार

मिथि मुद्रित सनत् १६२२ पृष्ठ १९ हे धावक भूलोक अंतरिक्ष का और स्वर्लोक अर्थात् तीन लोकों का जो ऐश्वर्य सो तुमने धारण करता हूं पृष्ठ ९६ स्वर्ग पृथिवी पृष्ठ १४२ स्वर्गाय लोकाय स्वाहा पृष्ठ १४५ ईश्वर कृपा से महात्मा सुखरूप प्राप्त होय तथा इस जीव को स्वर्ग के समीप सुखों को प्राप्त करे ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका पृष्ठ १०९ सत्य पर पर सत्य सत्येन न स्वर्गाल्लोका च्यवन्ते पृष्ठ ३२४ जैसे मनुष्य स्वर्गलोक प्राप्त होंगे वैसे स्वर्ग लोक प्राप्त वेद० प्र० का० ०३ अ० ३ धा० १२ करे पृष्ठ ३२८ ता उभौ चतुर पदः संप्रसारयाव स्वर्गे लोके प्रोर्णुवाथां वृषावा जीरेतो धारेतो दधातु यजुर्वेद अध्याय २३ मंत्र २० सत्यार्थ ता उभौ चतुरः पद संप्रसारयावेति मिथुनस्यावरुद्ध्यै स्वर्गे लोके प्रोर्णुवाथामित्येषवै स्वर्गो लोको यत्र पशु संज्ञपयन्ति तस्मात् देवमाहवृषा वाजीरेता धारेतो दधात्विति मिथुनस्यैवावरुद्ध्यै श० कां० १३-आ०-२ ब्रा० ४ उक्त श्रुति में स्वर्ग लोक स्पष्ट और दयानन्दजी भी अपने भाष्य में लिखते हैं कि स्वर्गे सुखविशेष लोके द्रष्टव्ये भोक्तव्ये नियानन्दसाक्षिण्त्वायनेन सर्वान्प्राणिन सुखेनाच्छादयेवहि) भावार्थ—यह है कि दोनों को अत्यन्त सुखरूप स्वर्गलोक में नित्य आनन्द की स्थिति के लिये जिसमें हम दोनों परस्पर तथा सब प्राणियों को सुख से परिपूर्ण करदेवें इत्यादि यह

ब्राह्मण और मनु के वचनानुसार हमने स्वामी जी ही के लेख से स्वर्ग नरक लोक विशेष सिद्ध करदिये और इस विषय में हमारे और दयानंदानुयायियों का मतव्य में इतनाही अन्तर है कि हम स्वर्ग नरक लोक विशेष मानते हैं और वो मत्यलोक ही में जो सुख दुःख का भोग विशेष है उसको स्वर्ग नरक कहते हैं यह भी ध्यान करना चाहिये कि जो कोई मर्त्यलोकान्तर्गत सुख दुःखही को स्वर्ग नरक मानेगा उसके मत में सपूर्ण मनुष्यों को एक क्षण में स्वर्ग और द्वितीय क्षण में नरक का भाग सिद्ध होगा क्योंकि प्रत्येक मनुष्य का एक क्षण में सुख होता है और द्वितीय क्षण में दुःख बल्कि सपूर्ण मनुष्यों के लिये सर्वकाल स्वर्गभोग मानना पड़ेगा और सपूर्ण मनुष्यों के लिये सर्वकाल नरकभोग क्योंकि एककी अपेक्षा एकका सुख भोग होता है और एककी अपेक्षा उसीको दुःख भोग है दयानंदानुयायियों हम तुमको श्रेष्ठ उपदेश करते हैं कि इस मिथ्या मतव्य को छोड़ो और सत्य बातको ग्रहण करो तुम्हारे स्वामी ने दस जगह सद् ब्राह्मण और मनुके प्रमाणसे स्वर्ग नरक लोक विशेष माना है और एक दो जगह केवल अपनी कपोलकल्पनासे सुख दुःख विशेषका नाम स्वर्ग नरक लिखा है अब यदि तुम लोग उनकी कपोलकल्पनाही पर हठ दुराग्रह करते रहोगे तो उनके लिख

हुए उक्त वचनोंका क्या अर्थ करोगे तुम्हारेस्वामीपर परस्पर
विरुद्ध लेखका दोष आयगा हर कोई उनको अज्ञानी ठहरायगा
तुम लोग वेदादि सत्शास्त्रों के विरोधी बनोगे और नास्तिकताका
भार अपने शिरपर धरोगे अतएव तुमको यही उचित है कि
वेदादि सत्शास्त्रानुकूल और अपने स्वामी के लेखानुसार, स्वर्ग
नरक लोक विशेष मानो और उन्होंने जाकि एक दो जगह
सुख दु ख के भाग हीका स्वर्ग नरक लिखाहै उसे सर्वथा मिथ्या
जानो वा उन वाक्यों का अर्थ सत्शास्त्रानुकूल बनाओ और
अपने गुरुका शास्त्रप्रतिकूल तथा च परस्पर विरुद्ध लिखने
के दोष से बचाओ अंत में और भी स्वर्ग लोक प्रतिपादक वचन
निवेदन करता हूं और दयानन्दानुयायियों का अज्ञान मूल
सहित हरता हूं यथाहि योवा एतामेवं वेदापहत्यपाप्मानमनन्ते
स्वर्गे लोकेज्ये प्रतितिष्ठति प्रतितिष्ठति तवल्कारोपनिषदि
स्वर्ग लोके नभयं किंचनास्ति न तत्रत्वं न जरया बिभेति उभे
तीर्त्वाऽशनाया पिपासे शोकातिगो मोदते स्वर्गलोके ॥१॥ अर्थात्
स्वर्गलोकमें कुछभी भय नहीं है (हे मृत्यु) तू वहां नहीं है और
न वहां कोई बुढ़ापेका भय करता है भूख पियास दोनों से उत्तीर्ण
होकर और शोकको अतिक्रम करके स्वर्गलोक में आनंद भोग
करता है ॥२॥ हे बुद्धिमानों विचार करो कि यदि मर्त्यलोकांतर्गत

सुख विशेषहीको स्वर्ग मानाजाय तो यहा ऐसा कौन पुरुष है जिसको क्षुधाषा और मृत्यु नहीं और जिसने भूख पियासको जीत लिया और देखो "तस्वर्गलोक म त—स्वर्गलोक ममाश्नुवत्' स्वर्गलोकमपश्यते—स्वर्गलोक समभुत—देखा गीता "स्वर्गलोकमभिवदंति यज्ञन स्वर्गलोकं समाश्नुवत्—शतपथब्राह्मण स्वर्गलोके बहुस्रैणमेपाम् ॥ १ ॥ स्वर्गोलाके मधुमतिपन्वमाना ॥ २ ॥ अन्न पक्व स्वर्गलोके दयाति ॥ ३ ॥ स्वर्गोलाकइति य वदति ॥ ४ ॥ स्वर्गलोकमधिरोहयैनम् ॥ ५ अथर्ववेदे ।

वेदादि सत्शास्त्रों में स्वर्गलोक प्रतिपादन के और भी बहुत वचन हैं यहां विस्तार भय से नहीं लिखे जिनको सत्य का निर्णय करना है उन के लिये वेद का एकही वचन बहुत है और जिनको वावावाक्य प्रमाण है व सहस्रों वचनों से भी अपना हठ दुराग्रह न छोड़ेंगे ॥

॥ इति ॥

सपुर्ण दयानन्दियोंसे निवेदन ।

हाशयो समस्त विद्वानोंने, ११३१ शाखाओं को वेदही है शाखाओं को वेद से भिन्न नहीं जाना और दयानन्दजी शाखाओं को वेद नहीं माना किंतु उन को ब्रह्मादि मह-

र्षियों के बनाये वेदों के व्याख्यानरूप ग्रंथ माना है परन्तु इन्होंने मिन ऋगादि चार संहिताओं को ईश्वरप्रणीत वेद माना है वास्तव में वे मो १९३१ शाखान्तर्गत चार शाखाहीं हैं शाखाओं से पृथक् कदापि नहीं जिसका आप लोग ऋग्वेद मानतेहैं वह आश्वलायन गृह्यसूत्र और कात्यायनमुनिकृत ऋग्वेद सर्वानुक्रमणिका के लेखानुसार शाकल नाम शाखा है जिस को आप यजुर्वेद कहतेहैं उसके प्रत्येक अध्याय की इति श्री में उस का माध्यन्दिनशाखा लिखा है उक्त वेद का शतपथ ब्राह्मण है उसके पृष्ठ पृष्ठ को यजुर्वेद माध्यन्दिन शाखा का ब्राह्मण लिखा है महीधर उवट भाष्यकारोंने अपनी भूमिका में उसको माध्यन्दिन शाखा लिखा है कात्यायन महर्षिने अपने बनाये प्रतिज्ञा सूत्र और सर्वानुक्रम ग्रन्थों के आरम्भ में उनको माध्यन्दिन शाखाही लिखा है जिस का तुम सामवेद कहते हो वह कौथुमी शाखा है इसकी व्याख्या चरणव्यूह में स्पष्ट है आप लोग जिस को अथर्व वेद मानतेहैं भाष्याचार्यने अपने भाष्य के आरम्भ में उसको शौनकी यशाखा लिखा है इत्यादि प्रमाणों से स्पष्ट सिद्ध है कि उक्त ऋगादि चारों संहिता जिनको आप मूल वेद मानतेहैं वे ११३१ शाखान्तर्गत चार शाखाहैं उनसे पृथक् कदापि नहीं अब यदि आप लोग स्वामीजी के लेखानुसार हठ दुराग्रह से शाखाओं

को वेद न मानें तो उक्त चार संहिताओं को भी वेद न मानें किंतु उनको ब्रह्मादि महर्षियों के बनाये वेदों के व्याख्यानरूप ग्रंथ बतलाये और अन्य चार वेदों का पता लगाये जबतक आपके मतानुसार प्रबल प्रमाण पूर्वक वेदोंका पता न लगे तबतक आप लोग मत विषयक वार्त्ता में किसी के स मुख किसीप्रकार जिह्वा न हिलायें किंतु सर्वथा मौन होजायें क्योंकि आपको धर्माधर्म के निर्णय में केवल वदही प्रमाणहै और उनका पता नहीं जिन को आपके गुरुने वेद माना था वे शाखा सिद्ध होगई और शाखा आपके मत में वदहैं नहीं अब उक्त ऋगादि चार संहिताओं को ब्रह्मादि महर्षियों के बनाय वेदों के व्याख्यानरूप ग्रंथ बतलाइये और वेद क्या पदार्थहै इसका सम्यक् पता लगाइए अथवा पूर्व विद्वानों के मतानुसार ११३१ शाखाओं को वेद मानिये और स्वामी जी के सिद्धांतको उनका कपोलकल्पित सर्वथा मिथ्या और त्याज्य जानिये यदि आप बलात्कार उक्तचार शाखाओं को ही वद मानें तो स्वामी जी का लिखा हुआ सपूर्णविधिनिषेध उनही में दिखाइये अथवा उसस हाथ उठाइये, इत्यलम् ॥

श्रीनिकुञ्जविहारिणेनम ।

अजब कृष्णलीला.

अर्थात्

नानाप्रकारके तबदील पलटकर दिखलानेके विषयका किताब

यह पुस्तक

जादूके खेलोंका सामान तयार करनेवाले

बेचनेवाले तथा खेल सिखलानेवाले

प्रोफेसर-जी एम् कारलेकरने

निर्माणकर

बंबईमें "विश्वंभर" छापखानेमें मुद्रित कराय प्रगट किया

संवत् १९६६, शके १८३१

मूल्य १ रुपया

प्रस्तावना

इस पुस्तकेको यदि मोटी नजरसे देखनेपर इसमें कोई कुशलता न माळूम होकर कदाचित् दर्शकोंको इसका मूल्यभी अधिक माळूम होगा किंतु सूक्ष्मरीतिसे देखनेपर माळूम होगा कि, इसके तयार करनेमें कितना परिश्रम और तयारी करनी पडती है. अर्थात् फीतके अनेक टुकडे हरएक पट्टीपर कैसे उटल पलट केजाकर उनके कितनेही सिरे, बडी खबरदारीसे मिळाने पडते हैं और चित्रकी पट्टिया कितनी होशियारीके साथ बैठाना पडती हैं कि जिसका केवल विचार करनेसे उसकी खूबी सहजहीमें ध्यानमें आवेगी । यह इतनी पट्टी जोडनेमें जो कुशलता की है वह इतनी खूबी की है कि, एक पट्टीका एकही किनारी उठानेसे पिछला सब भाग आगे आना और आगेका पीछे होजाना उसी प्रकार एक पट्टीके फिरानेसे सब पट्टियोंके टुकडे गिरकर दृश्यस्थितीमें बदल होना इत्यादि बातें क्या कम कुशलता की हैं ? सारांश—उसकी रचना, मिलावट रूपांतर दिखलानेके प्रकार इत्यादि देखकर विचारवान् मनुष्योंको उसकी रचना और कल्पकता की महती समझे विना नहीं रहेगी उपरोक्त बातोंपर ध्यान देनेसे इस नये तर्जकी ईजादके लिये दी हुई कीमत बहुत नहीं है ऐसाही हर किसीको माळूम होगा

तयार करनेवाले,

जी. एम. कालेकर.

अजब कृष्णलीला.

और

उसके रूपांतर कर दिखलाने की रीति

पुतले की रचना

यह पुतला कुल आठ पट्टियोंकी मिलावटसे तयार किया गया है उसकी तय खोलकर खडी पकडनेसे एक और मुरलीधर श्रीकृष्ण महाराजका पुतला दृग्गोचर होताहै और उसके सिरपर मराठी भाषामें हमारा नाम, ठिकाना लिखा है और पैरके नीचेकी पट्टीपर मराठी भाषामे खेल सबधि सूचना लिखी है इसके दूसरी ओर सीधा श्रीराधाजीका पुतला दिया है जिसके माथेपरकी पट्टीपर हिंदुस्तानी भाषामें हमारा नाम ठिकाना वगैरे लिखाहै नामके माथेपर मध्यभागमें (१) यह आंकिक अक लिखाहै और पतेके नीचे मध्यभागमें " गिरगांव " इस शब्दके नीचे (२) का अक डाला है उसी तरह राधाजीके पैरके नीचेकी पट्टीपर हिंदुस्तानी भाषामें खेलके सामानके विषय सूचना लिखी जाकर उसपरकी पहिली पक्तिके लेकर " इस शब्दके माथेपर (५) का अक लिखाहै और नीचेकी पक्तिके नीचे मध्यभागपर (४) का अक दियागयाहै इस प्रकारसे आठ पट्टियोंपर एक ओर राधाजीका पुतला दुसरी ओर श्रीकृष्णजीका पुतला दिया जाकर, इन आठों पट्टियोंकी रचना तथा मिलावट दोनों ओर के किनारेपरकी कपडेकी फीतसे इस पु-

शाल्तासे साथ की है कि जिससे निम्नलिखित रीतिसे इस पुतलेके पृथक्पृथक् रूपांतर सरलतासे दिखलाई दिये जा सकते हैं

---

(१) मुरलीधरका पुतला दिखलाना

यह दिखलानेके समय जैसी हमने उसकी तयपर तय जमा कर रखे भेजी हैं उसी तरह अर्थात् नीचकी पट्टीपर हिंदुस्तानी सूचना नीचे रहकर, बाकी की पट्टियां क्रमसे एकपर एक रखकर ऊपर सबसे यह बड़ी पट्टी रखो जिसपर कि हिंदुस्तानी नाम बाहरकी ओर स्पष्ट नजर आवे इस प्रकार तय जमानेसे ऊपर (१) व नीचे (४) यह अंक अपने बदनकी तरफ कलाईकी ओर रहेंगे और ऊपरके (२) तथा नीचेके (३) यह अंक सामने बैठे हुए दर्शकों की ओर अर्थात् अपनी उंगलियोंके अग्रभागकी ओर रहेंगे, इस तरह अपने बाँयें हाथका पंजा फैलाकर सीधा करके उसपर यह पूरी तय आडी रखना चाहिये इसके बाद अपने दर्शक मंडलीको कहना चाहिये " प्रेक्षक महाशयो ! श्रीकृष्ण भगवान् समयानुसार बाल, तरुण, विराट, स्त्री, मोहिनी इत्यादि अनेकरूप धारण करते थे, इस प्रकार पुराणमें कथा कही है उसीके अनुसार मैं तुमको मुरलीधर श्रीकृष्णके रूपांतरोंको इस कृत्रिम पुतलेपरसे दिखलाता हूं, यह ध्यान पूर्वक अवलोकन करिये " इसपर मुरलीधर, श्रीकृष्णजीका पुतला है वह आपको दिखलाता हूं सावधान चित्त से देखिये " एक-दो-तीन " इस तरह मुंहसे कहकर हाथके पंजेको थाप ऊपरकी पट्टीके बड़े हुए भागपर मारकर दिखलावे,

हुए ऊपरकी पट्टीका (२) का अंकवाला मछलीकी ओरका किनारा दहिने हाथका अँगूठा तथा उसके पासकी उँगली इन दोनोंके बीच पकड़कर शीघ्रतासे ऊपर खींचकर सीधा रखना चाहिये और नीचेकी पट्टीका (१) से अंकके ओरका किनारा बायें हाथपरही रहने देना, जिससे सब पट्टियां खुलकर दर्शकोंकी ओर श्रीकृष्णका कुछ पुतला दृगोचर होगा यह दर्शकोंको दिखलाते हुए कहना चाहिये कि "देखिये, यह मुरलीधर श्रीकृष्णका सरल पुतला है" ऐसा कहकर फिर से वह पट्टियां एकपर एक रखकर पूर्वोक्त लिखे अनुसार फैले हुए पंजेपर तब रक्खे चाहे सो फिर ऊपरकी पट्टीपर दहिने हाथकी थाप मारकर (२) अंकके ओरका किनारा दो उंगलियोंके बीच में पकड़कर पहिले की तरह झटसे ऊपर खींचकर पकड़ रखना चाहिये और एक बार कहना चाहिये कि, "जरा देखिये, यह श्रीकृष्णजी काही पुतला है और उसके मस्तकसे पैर तक शरीरके सर्व भाग क्रमानुसार समान हैं इसका कोईभी भाग उलट पुलट नहीं है अब जैसी यह सब उठाई थी वैसीही फिर रखता हूं इसकी आगकी बाजू पाछे अ रा पीछेकी बाजू आगे बिलकुल न हटाते हुए, जैसी पहिले थी वैसीही अब रख देताहू, यद्यपि इस तप में कोई हेरफेर कुछभी नहीं किया है तथापि इस श्रीकृष्णके कैसे रूपांतर होंगे सो अवलोकन करिये"

---

(२) कृष्णके बदले श्रीराधाजीको दिखलाना

यह दिखलाते हुए दर्शकोंको कहना चाहिये कि "इस पुतलेकी

३ श्रीकृष्णजीके शरीरके टेढे बांके भाग दिखलाई पडते हैं

इस समय तल हाथपर इस प्रकार तय जमाओ कि, ऊपरकी वडी हुई पट्टीपरका (१) व नीचेकी पट्टी परका (४) ये अकवाला किनारा अपने हाथकी तरफ अर्थात् कलाईकी तरफ जो था वह अब दर्शकलोंकी ओर घुमाकर, ऊपरकी पट्टीपरका (२) तथा तलेका (३) यह अकवाली बाजू अपनी ओर अर्थात् अपनी कलाईकी ओर क रना चाहिये और इस प्रकार पट्टियां हाथपर किये बाद प्रेक्षकोंसे कहना चाहिये कि, "देखिये इसीपर आपको श्रीकृष्ण तथा श्रीराधाजी दिखलाई पडीथीं, परन्तु अब देखिये कि क्या होता है; " एक-दो तीन इस तरह कहकर अपना दहिना हाथ तयके ऊपर मारकर दर्श कोंकी ओरका (१) वाली पट्टीका किनारा दोनों उंगलियोंके बिच पकडकर खींचो और उसे सीधा खडा करके पकड रक्खो जिससे मस्तकसे पेरतक श्रीकृष्णके शरीरके सीधे तथा आडे भाग दिखलाई देंगे इसके बाद पहिलेकी तरह फिर तय करके फिरसे एकबार उसी प्रकार किनारा पकडकर खींचो और कहो, कि, " पूर्वमें आपको दिखलाये हुए दोनो राधाकृष्णके सीधे पुतले अतर्धान होकर अब यह टेढा बांका कृष्ण अचानक कैसा बनगया यह देखिये. ले-किन इतने हीसे अभी कुछ नहीं हुआ है आगे औरभी देखियेकी क्या होता है, " इस तरह कहके फिर तय पूर्ववत् करके रखदेना चाहिये

४ श्री राधाजीके शरीरके टेढे बांके भाग दिखलाई पडते हैं

इसके बाद फिर अपने दहिने हाथकी थाप सयपर मारकर उसका अपनी ओरका (२) का अंक वाला किनारा दो अंगलियोंमें पकडकर झटसे ऊपर खींचकर पकड रक्खो जिससे उल्ट पुल्ट कृष्णके बदले उल्ट पुल्ट भाग वाली राधा दिखलाई देगी अब अपने दर्शकोंसे तुमको कहना चाहिये कि, " मैंने आपको अभी टेढे बांके अवयववाले श्रीकृष्णजीको दिखलाया था वह अचानक गुप्त होकर उसकी जगह राधाजी उत्पन्न हुई है सो देखिये आपकी शकानुसार केवल दोही तरह इस पुतलेकी दिखलाई देना चाहिये थीं परंतु उसके एवजमें अब आपको चार प्रकार दिखलाई पडे इसपरसे आपकी पहिली शकाका तो समाधान होगया है अथवा आपकी वही कल्पना सत्य समझ लेवें तो एकही तय परसे चार प्रकार पृथक्पृथक्से अचानक दिखलाई देते हैं यह कितने भारी आश्चर्यकी बात है ! इस बातका आप ही विचार करें अब उपरोक्त दिखलाई हुई रीति से चार प्रकार दिखलाई देतेहैं, इसके सिवाय इन्हींपरसे अचानक और भी कैसे रूपांतर होते जायेंगे, उसकी रीति दूसरी है वहभी आपको दिखलाई जायेंगी

---

५ देखते देखते टुकडे पडकर श्रीराधाजीसे श्रीकृष्णका बनना. यह करने के लिये यह पुतला बनी हुई पटीपरके " क-क"

बडल नबर ७—मनमें धारण किया हुआ अंकको बतला देने वाले पत्ते (पत्ते ६)

इससे किसीने अपनी समरका या और कोनसाभी अंक मनमें सोचा हो सो आप बिना पूछे तरत कहसकते हैं

इस रीतके खेल यह ७ बडलोंसे हो सकते हैं यह देखवे तमाशबीन आश्चर्य चकित होते हैं यह खेल इन बडलोंसे किस रीतिसे कर दिखलाना इसके खुलासे की एक पुस्तकभी यह बंडलोंके साथ मिलती है वह बांचनेसे ऊपरके सब खेल कोई भी आदमी तरत कर दिखलाता है इसलिये बडल साथ यह पुस्तक प्रत्येक कुटुंबमें अवस्य सग्रह रखना चाहिये

यह पुस्तक मय ऊपर लिखित ७ बडलोंके पत्तो सहित दाम मूल्य २॥ रु० है

परतु २ महिनके अंदर लेनेवालेकू मूल्य केवळ रु १॥। व्ही पी डाकव्ययके दो आने अधिक पडेंगे यह ताश सप्तक हमारे पास मिळ सकता है

म्याजिक प्रोफेसर—जी एम् कालेकर

जादूके खेलोंका सामान तयार करने वाले, बेचने वाले और खेल सिखलाने वाले

ठिकाना:—ठकनरोडपर दुर्गादेवीके पासका घर २ रा मजला—बंबई
पोष्ट नं० ८।

॥ श्री॰ ॥

प्राचीनभजनमाला

जिसको

दुर्गाप्रसाद शर्म्मा ने

संग्रह किया

उसीको

शिवलाल गणेशीलाल ने

अपने "लक्ष्मीनारायण" प्रेस मे

छापकर प्रकाशित किया

मुरादाबाद

द्वितीयवार सन् १९०४



॥ श्री ॥

प्राचीनभजनमाला

॥ प्रभाती गणेशजीकी ॥

जयगणेश जयगणेश सकलविघ्न हारी।
दुःखहरणसुक्खकरणआनँदउरमोदभरण
ऋद्धि सिद्धि सगलिये भक्तन हितकारी॥
धूम्रकेतु गणाध्यक्ष भालचन्द्र सर्वरक्ष वि-
घ्नराज हरो विघ्नली शरण तुम्हारी। मैंतो
अतिदीन नाथ तुमहोप्रभु दीनानाथ कीजे
अब मोहि सनाथ सकल कष्ट टारी॥

प्रथम सुमर वक्रतुड शिवसुत सुखदाई।
मगलके करन हार, सोहत शुभ भुजाचार,
मूषक असवार, नाथ भक्तन वरदाई ॥१॥
जय जय जन रक्षपाल, सोभा अद्भुत वि-
साल, सकटको हरत हाल, गवरलालधा-
ई ॥२॥ एकदंत दयावंत, विघननको करत
अत, गावत नितशेपसत, महिमाहरखा-
ई ॥३॥ राजत दृग लाल लाल, सेंदुरको ति-
लक भाल पुष्पनकी गलेमाल, अद्भुत छ-
बिछाई ॥ ४ ॥ राजत तिरशूल हाथ, ऋद्ध
सिद्ध सदा साथ, बुद्धि शुद्ध देतनाथ, मोद
मन बढाई ॥ ५ ॥ आनँदके आदि मूल,
शुण्ड साहि कमल फूल, जन पर अनुकूल,
८। भक्तके सहाई ॥ ६ ॥ वरके दाता गुण

की खान, दूजो नहीं तुम समान, अगम निगम करैं गान, तुमरा गणराई ॥ ७ ॥ ललितटेर गुण निधान, चरणन रज देओ दान, शंभुसुवन जनकी आन, त्रासदो मिटाई ॥ ८ ॥

—प्रभाती महादेवजीकी-॥

शंकर सुख करन सदा सन्तन उद्धारन। पंचवदन अति विशाल, जय जय जय शिवदयाल, सोहत दृग लाल लाल भक्तन भय हारन ॥ १ ॥ प्रेत नाथ प्रणतपाल, राजतगलमुंडमाल महा ज्योति महाकाल, दक्षमद संहारन ॥ २ ॥ बालचंद्रलसत भाल, भूषण भुजदिये व्याल, भस्म अंग-कर कपाल, भस्मासुरजारन ॥ ३ ॥ सैन संग अति विशाल, सोहत वैताल ताल,

भाल चक्षुअति कराल,त्रिपुरासुर मारन ४
शूलपाणि विश्वभर, विश्वनाथ गगाधर,
रक्षत हर सचराचर, सर्व तरन तारन ॥५॥
नैक तोर भ्रूमरोर, नाशतवसुधा किरोड,
करत प्रलय महाघोर, प्रभुहो सबकारन६
हरहर पद त्राहि माम, भक्त वछल दमन
काम, महिमा श्री शम्भु नाम राम की उ-
चारन ॥ ७ ॥ ज्ञान भक्ति मुक्ति हाल, देत
ललित विप्रवाल, नाशत कलिकेकुचाल,
काल चक्रटारन ॥ ९ ॥

शकर महादेव देव सेवक सुरजाके।
भस्म अङ्ग शीसगङ्ग वाहन अति वल प्र-
चण्ड गौरी अर्धंग सङ्ग भंग रंग छाके ॥
झपटि झपटि जात व्याल ओढे तन मि-

रगछाल मुण्डमाल चन्द्रभाल दृग विशाल बाँके ॥ ध्यावत सुर नर मुनीश गावत गिरजा गणेश पावत नहिं पार शेष ब्रह्म आदि थाके । बर्णत जन तुलसीदास गिरजापति चरणआश ऐसेवर भेषनाथ भक्तहेतु राखे।

प्रभाती श्रीकृष्णजी की ।

मोहन ब्रजराज श्याम लाजके रखैया। नंदनन्दन भक्तवन्दन कंस के निकन्दन हो कालिनाग नाथ्यो बलदेवजू के भैया॥ गोपीमनहरण चरण जमलादिक तारण। सन्तन सुखदेन रमारमण हो कन्हैया॥ बार बार हेरत हो बंशी सुखटेरत हो, आयो मैं शरण तेरी बंशी के बजैया॥ तुमही लव ठौर और तुमहीं कहँ जैहो, कृष्णलाल भोर भयो लागत हों पैयाँ॥

मेरे तो गिरधर गोपाल दूसरो न कोई असुवन जल सींच २ प्रेमबेल बोई। जाके शिर मोरमुकुट मेरो पति सोई॥ आई हों भक्ति जान जगत देख मोई, तात मात भाई बन्धु अपना नहिं कोई॥ साधुन सँग बैठि २ लोकलाज खोई, अब तो बात फैल गई जानें सब कोई, छोडदई कुलकी लाज क्या करैगा कोई, दास मीरा शरण आई होनी हो सो होई॥

जय जय जय जय मुकुन्द नंदके दुलारे। शीश मुकुट तिलक भाल, कानन कुण्डल विशाल, कण्ठ माहिं गुन्जमाल, मुरली कर धारे॥१॥ ग्वाल बाल लिये संग, रचत सदा रासरंग, बजत बाँसुरी सुचंग,

जमुन के किनारे ॥ काहू को फोरत घट काहू की पकरत लट, काहू को घूंघट झट खोलत ढिग आरे ॥ ३ ॥ धन धन धन श्रीमुकुन्द, काटहु दुख हरहु द्वन्द, हे गोविन्द श्री गोविन्द प्यारे ॥ ४ ॥ कृपा सिन्धु विश्वनाथ,माँगत वरजोरहाथ,बसहु सदा रमासाथ, हृदय में हमारे ॥

देखोरी यह कैसो बालक रानि यशोमति जायो है ॥ सुन्दर वदन कमलदल लोचन देखत चन्द्र लजायो है ॥ पूरण-ब्रह्म अलख अविनाशी प्रकट नंदघर आयो है ॥ मोरमुकुट पीताम्बर सोहै केशर तिलक लगायो है ॥ कानन कुण्डल गलबिचमाला कोटिकाम छविछायो है ।

वनियाँ ॥ सूरश्याम देखि सब भूलीं गोप धनियाँ ॥

प्रात समय ब्रजनारि सकल मिलि घट जमुनाजल भरनचलीं । और पास तारागण सजनी बीच चन्द्रमुख भानुलली पगनूपुर कटि किंकिणि बाजें पूरि रही ध्वनि कुंजगली । इत उत तकत चलत नारायण आय न जावें श्याम छली ॥

छोड़दे गलवहियांश्याम भोरभयोलल- ना । बटहारी बाटजात पंछीजात चुगना, पनिहारी पनघटको जात हमहू जात ज- मुना । मुखके तंबूल गये नयननहू के अँ- जना, दीप ज्योति फीकी औ चन्दहूके चँ- दना । बाँह सोहैं बाजूबन्द हाथ सोहै कं-

गाना। भाल तिलक शीस सोहै गोदसोहै ललना। उठियो तुम सुघर नारि झारिडारो अँगना ॥ सूरश्याम द्वारे ठाढे नन्दजू के ललना ॥

दधिके मतवारे कान्ह, खोलो प्यारे पलकें। शीशमुकुट लटा छुटीं और छुटीं अलकें॥ सुरनर मुनि द्वारे ठाढे, दरशदेख किलकें। नासिकामेंमोती सोहैं बीचलाल ललकें॥ कटि पीताम्बर मुरली कर में श्रवण कुण्डल झलके। सूरदास प्रभु मदनमोहन दरश देहु झलकें ॥

गङ्गा स्तुति।

जय जय श्रीगङ्गदेव जय महेशरानी। गौर वरण तनविशाल, मकरासन कण्ठमाल, सेवत सुर लोकपाल, चतुरफल निदानी॥१॥

पावन आनँद निदान दूजो को तुम समान, कविजन गुण करत गान श्रुति पुराण वानी ।२। रवि कुल नृप धन्य हेत, प्रघटी भव सिन्धु शेत, विष्णुपदी सुख निकेत, विधसुरेशमानी ॥ ३ ॥ निरमल वर वहत नीर, भंजन भव अमित भीर, हरविलास वास तीर, देओ दनि जानी ॥ ४ ॥

प्रभाती शिवजी की

जय जय जगदीश ईश शंकर गुण खानी । स्वेत अंग सीस गङ्ग लिपटे गळ में भुजङ्ग नन्दीगन लिये संग, गिरजा महारानी ॥ १ ॥ ज० ॥ इन्दु भाल नेत्रज्वाल सोंहे उर मुण्डमाल रटं त्रिकाल शिवदयाल सेवक सुखदानी ॥२॥ ज० ॥ उमा शान्तिभुवन दोषदमन शोकशमन

गावत गुन सहस बदन शारद बर वानी ॥ ३ ॥ ज० ॥ विश्वकरन विश्वहरन विश्वभरन विश्वधरन निश दिन रह चरन शरन गुरु गणेश ज्ञानी ॥

शङ्कर संसारसार वं व वं भोला शीश गंग चन्द्रभाल चिताभस्म चोला । लोचन विशाललाल जटामुकुट मुण्डमाल नीलकण्ठ कर सुमाल श्मसान टोला ॥ राजत भुजङ्ग अङ्ग लीन्हे प्रभु गौरि संग प्यावत घन घोटि २ भरें भग झोला ॥ चरण पद्म वृष विमान डमरू कर करत गान गावत अति ललित राग सुनि मुनि मन डोला ॥ निशिदिन करि २ प्रणाम सुमिरत शिवरामनाम रटत शेष वेद भेद

जिन को नाहिं खोला ॥ नारद शारद सुरेश शिव गुण गावत गणेश चतुरानन विष्णु करत अस्तुति मृदु बोला ॥

भजन ॥

राधेकृष्णा क्यों नहीं जपते पीछे पछताओगे । जाने तोको जन्म दियो ताको नाम क्यों ना लियो यह तो मानुष देही वन्दे फेरि नहीं पाओगे ॥ तिरिया और कुटुम्ब की खातर पच पचके कमाओगे, आएँगे वे जम के दूत पकरले जायगे मजबूत, तुमसे मांगेगे हिसाब फेर क्या बताओगे । सूर प्रभुकी शरण आओ, आवागमनको मिटाओ, ठाकुरजी को ध्यान धरलो पार लगजाओगे ॥

राग धनाश्री—प्रीतम जान लेहु मन

माहीं । अपने सुख से सब जग बाँध्यो को काहू को नाहीं ॥ सुखमें आय सभी मिल बैठत रहत चहूं दिशिघेरे । विपति परे सबहीसंग छोडत कोऊ न आवत नेरे॥ घरकी नारि बहुत हितजासों सदा रहत सँगलागी । जबहीं हंस तजी यह काया प्रेत २ करभागी ॥ या विधिको व्योहार बन्यो है जासोंनेह लगायो । अन्तकाल नानक बिनहरजी कोऊ काम न आयो।

रागबरवा—हरिनाम लाहा लेत रे तेरो जन्म बीत्योजात । जैसे वृक्ष पक्षी आन बैठे उठ चले परभात ॥ गयो श्वास न बहु-रियो तेरी पलक लखियो न जात । जुए जुआरी धन हार्‍यो मन खेलने दे चाउ॥

खेलकर पछतायगारे तु हार क्यों घरजात बनजारे ने बैल जैसे टांडा लादियो जाय लाहे कारन आयो प्रानी चल्यो मूल गँ-वाय ॥ आछे दिन दिन पाछे गए तैं हरिसों कियो न हेत । अब पछताये होत क्या जब चिडिया चुगगई खेत ॥ काचीकाया कांचकीरे समझ देखो लोय । सगुरे को समझत परत है निगुरा जावे खोय ॥ जब लग तेल दीवे में वाती सूझत है सब कोय जलगया तेल निकस गईवाती लेचल रहोय रल मिल सखी सागर चली शिरफूट गा-गर परी । पछतायँगी पनिहार जिउकर रीतघर क्योंजात ॥ फटी सुरनाही फूक-... जायसुनी अवधेहि । कहे नानक

दास प्रभू का तेरी अन्त हो जाऊ खेहि ।

रा० कान्हरा—दिन नीके बीते जाते हैं । सुमरन कर श्रीरामनाम, तज विषय भोग सब और काम तेरे संग न चलसी एक दाम जो देते हैं सो पाते हैं ॥ कौन तुम्हारा कुटुम्ब परिवारा किसके तुम और कौन तुम्हारा किस के बल हरिनाम बिसारा सभ जीते जीके नाते हैं । लख चौरासी भ्रम के आया बड़े भाग्य मानुष तन पाया तापर भी नहिं करी कमाई फिरपाछे पछताते हैं । जो तू लागे विषय विलासा मूरख फँसे मौज की फांसा क्या देखे श्वासन की आशा गए फेर नाहिं आते हैं ॥

ऐसी चतुरता पर छार । वृथा बाद

विवाद जित तित हित न नन्दकुमार मातपितु सुत भ्रात मरगए और सकल परिवार ॥ जानत हैं हमहु मरैंगे तऊ न तजत विकार॥काम क्रोध और लोभहु व्यापो मोहमदहंकार ॥ सूरप्रभुकी शरण गहु सतसङ्ग बारम्बार ॥

कृष्णस्तुति।

नाचत हरि थिरक थिरक उरग शीश आली । नटवर वरभेसकरे, मुक्ता फल माल गरे, मोर मुकट शीशधरे अखियन कुछ काली ॥ १॥ नूपुर पद दहत मान, तोरत अहि शीश तान, चरन परत गिर समान, रुधिरवमत काली ॥ २॥ कद्रु सुत गति अधीन, पाहि२करत दीन, मैं जड खल भक्ति हीन, वृथा देह पाली ॥ ३॥ ‌‌अबतो प्रभु समझ दास, कीजे मोह जन

निरास, सरणागति हरिविलास, सुधले वनमाली ॥ ४ ॥

भयो प्रभात कहत कौशिल्या जागो-राम पियारे, ऊगेभानु कमल दल खोले मधुकर करत गुजारे । चरणकमल मुख निरखि रामके हर्पत नयन हमारे जननी वचन सुनत उठि बैठे नयनन पलक उघारे, गावेंगुण मुनिजनगंधर्व मिलि द्विजवर निगम उचारे, शिव सनकादि भेष धरि आये दर्शन हेतु तुम्हारे, अनुज सखा सबद्वारे ठाडे सोहत न्यारे न्यारे, करि अस्नान दान नृप दीनो भूषन वसन अपारे, तुलसीदास आश रघुवर की ले सतन-उरधारे ॥ ५ ॥

प्रातसमय कौशल्यारानी अपनो पुत्र

विवाद जित तित हित नं नन्दकुमार मातपितु सुत भ्रात मरगए और सकल परिवार ॥ जानत हैं हमहु मरैंगे तऊ न तजत विकार॥काम क्रोध और लोभहु व्यापो मोहमदहंकार ॥ सूरप्रभुकी शरण गहु संतसङ्ग बारम्बार ॥

कृष्णस्तुति ।

नाचत हरि थिरक थिरक उरग शीश आली । नटवर वरभेसकरे, मुक्ता फल माल गरे, मोर मुकट शीशधरे अखियन कुछ काली ॥ १ ॥ नूपुर पद दहत मान, तोरत अहि शीश तान, चरन परत गिर समान, रुधिरवमत काली ॥ २ ॥ कद्रु सुत गति अधीन, पाहि२करत दीन, मैं जड खल भक्ति हीन, वृथा देह पाली ॥ ३ ॥ अवतो प्रभु समझ दास, कीजे मोह जन

निरास, सरणागति हरिविलास, सुधले वनमाली ॥४॥

भयो प्रभात कहत कौशल्या जागो राम पियारे, ऊगेभानु कमल दल खोले मधुकर करत गुजारे। चरणकमल मुख निरखि रामके हर्षत नयन हमारे। जननी बचन सुनत उठि बैठे नयनन पलक उघारे, गावेंगुण मुनिजनगधर्व मिलि द्विजवर निगम उचारे, शिव सनकादि भेष धरि आये दर्शन हेतु तुम्हारे, अनुज सखा सबद्वारे ठाडे सोहत न्यारे न्यारे, करि अस्नान दान नृप दीनो भूषन वसन अपारे, तुलसीदास आश रघुवर की ले सतन उरधारे ॥५॥

प्रातसमय कौशल्यारानी ८

जगावै,नीलअंगपर पीत झिंगुलिया हर्षि निरखि पहिरावैं, सुदर श्याम कमल-दल लोचन निरखि परम सुख पावैं, नेत नेत कह वेद वखाने ब्रह्मा ध्यान लगावैं, सोइ करुणामय राम दयानिधि दशरथ पुत्र कहावैं, कवहु पालना घालि झुलावै कवहूं गोदखिलावैं, कवहूं पाँवन चलन सिखावैं मातु सवै सुखपावैं,धन्य धन्य रानी कौशल्या दशरथधन्य कहावैं,धन्यअयोध्या नगर निवासी तुल्सी दर्शन पावैं ॥६॥

दशरथ सुत देख देख जनक सुतामोही मोर मुकुट मकराकृत कुण्डल गरे वैजन्ती माला सोही, पीताम्वर की कछनी काछे, धनुष वाणालियें ठाढे दोई, सुन्दर -दन राम लक्ष्मण को, सव सखियां सी-

ताकी मोही, जनकपौर में गये लाडिले, दशरथ ढोटा दोई, तुलसीदास कृपा कर आये, जनक के यज्ञ सुधारे दोई ॥ ७॥

पीलेरे हो अवध मतवाला प्याला प्रेम हरी रसकारे, पाप पुण्य दोउ भुगतनआ ए कौन तेरा है तू किसकारे, जो दम जीवे हरिगुणगाले धन जोवन सुपना निशिकारे वाल अवस्था खेल गँवाई तरुण भयोनारी वश कारे, वृद्ध भयो कफवाई घेऱ्यो खाट पडा नहिं जाय मसकारे, नाभि कमल में है कस्तुरी कैसे भिरम मिटे पशुकारे, वि- नसतगुरु ऐसे दुख पावे जैसे मिरग फिरे वनकारे, लाख चोरासी उबऱ्यो चाहे छोड कामिनी का चसकारे, प्रेम मग्न चरणदास कहतहै नख शिखरूप भऱ्यो विषकारे॥८॥

प्रभाती द्रौपदीजीकी ।

हे गोविन्दराखो लाजआयके हमारी, दुस्सासन चीर खींचले आयो सभाबीच मानत नाहिं अधम नीच मोहिं कर उघारी, गहे केश झटकतहे शीश मोर चटकत हे नयन नीर टपकत हे दर्द ना विचारी, अवलापर करत जोर हाहाकर करत शोर तुम विन को सुने मोर श्यामजी हमारी, कटि ऊपर चीर रह्यो तनपर दुख बहुत सह्यो, धीरजनहिं जात गह्यो द्रौपदी पुकारी, फटजा तु धरणि माय तामें जाऊ समाय, जासोंये प्राण जायँ पतरहेखरारी सिंहगाय घेर लई नाथ मैं अनाथ भई, हारी तव टेर दई हेरिये बिहारी, दुश्शास ─ ॅ भयो खेंच खेंच हार गयो, द्रौप-

दीने नाम लयो गोवर्धनधारी, सुनिये ब्र
जराज आज शंकर की राखो लाज, चरण
शरण आयो भाज, आस रख तिहारी ॥९॥
साहिबकी यादकरो बाबा यकदिन उस
घर जाना होगा ॥ टेक ॥ किस कारन पाप
करें निश दिन माया में फँसा रहे छिन
छिन । शिर धर यह भार तुझेयक दिन
सँग अपनेलेजाना होगा ॥ मुखसेकहो बन्दे
राम नाम नहिंलागे तेरा एक दाम फिर
पिंजरा आवे कौन काम जब हंस यह रवा
ना होगा ॥ कोई यहां न रहने पावेगा जो
आया है सो जावेगा । जो नहिं हरिके गुण
गावेगा आखिर को पछताना होगा ॥ बद
कहाया जो बदकाम हुआ नेकीसे किसी
का नाम हुआ पण्डित यह कारमुदाम

हुआ अब नित हरिगुणगाना होगा ॥

राधाकृष्ण रटाकर छूटे लख चौरासीका खटका॥टेक॥काम क्रोध मद लोभ मोह में फँसा फिरे भटका भटकारे॥राम कथा सुन आलस आवे कैसे खुलैतेरे पट घटकारे॥ टेढा बांका बना फिरे क्याबांध जरकसीका पटकारे। कलकल टूटजायतेरी जिस समैकालदेगाझटकारे॥२॥झोंटेखाय अघाय नहींअज्ञानरूप रजुमेंलटकारे। कैसे छुटे बिन रामकृपा शठ लगरहा डरउर झटकारे ॥३॥ छोड मोह माया ममताकर वाससदा बसीबटकारे । श्यामा सहज तरैंभवसागर भजन तु कर नागर नटकारे ॥

इति समाप्त।

हमारे यहा की छपी पुस्तकें इन २ पतोंपर मिलतीहैं

पं० नीलकण्ठ–द्वारकाप्रसाद
अमीनाबाद–लखनऊ

मुंशीस्वामीदयाल
ताजरकुतब–निवारघाट
पटना सिटी

बाबू गोकुलचन्द
ताजरकुतब–अलीगढ

लक्ष्मीनारायण प्रेस
मुरादाबाद

॥ श्री ॥

अनारकली

उपन्यास



मुरादाबाद निवासी–
पं०–बलदेवप्रसाद मिश्र द्वारा लिखित

जिसको
शिवलाल-गणेशीलाल ने
अपने "लक्ष्मीनारायण" प्रेस
मुरादाबाद में
छपवाया
प्रथमबार सन् १९०५

समर्पण.

परम मित्र, विख्यात उपन्यास लेखक बाबू देवकीनंदनजी खत्री महोदय !

आपके चन्द्रकान्ता उपन्यासने उपन्यासश्रेणी में अच्छा नामप्राप्त कियाहै; आपकी लेखप्रणालीने गद्य-साहित्य का मुख एक नए मार्ग की ओर फेर दिया है। आजकल बहुत से लेखकगण आपकी भाषाप्रणाली का अनुकरण करने लगे हैं, इसही रीति के अनुसार यह अनारकली आपको समर्पण है इसको भी चन्द्रकान्ता की सहेलियों में बिठलाकर विमला से कुछ वार्तालाप कराइये ॥

चिरपरिचित

पं० बलदेवप्रसाद मिश्र

दीनदारपुरा मुरादाबाद

॥ श्रीगणेशायनमः ॥

अनारकली उपन्यास ।

१ परिच्छेद ।

सवेरेसेही वर्षा होरही थी । घर पर कुछ कामथा, इस लिये शीघ्रता से दफ्तर का सब काम पूरा करके चलने का बिचार करने लगा । मुझे तो घर पर कामथा, परन्तु मालूम होताहै कि राजा इन्द्र के मकान पर उस दिन कोई भी कार्य नहीं था, यही कारण था जो वह मुरादाबाद के मार्ग घाट मे निःशंक होकर जलकी वर्षा कर रहे थे। जब कीचड उडाता हुआ भीगे कपडोके साथ स्टेशन पर पहुचा, उस

समय इन्द्र देवताका क्रोध कुछ अधिक बढ़गया सा जान पडताथा। क्योकि उस समय से उन्होने मूसलधार पानी छोड ना आरम्भ किया। मैंनें अपने बड़े भाग्य से रेलगाडी का एक खाली कमरा पालिया इसही कारण से लोक लाज का कुछ भय न करके भींगे हुए कपड़ों को स्प्रिंग मे टांग जूतो को छोड मुँह मोड कर बेंच पर लेट रहा गाडी छूटनाही चाहती थी कि-टिकट कलक्टरने एक भींगे भागे जेनटिलमैन को उस कमरे में लाकर बिठला दिया कि जहांपर मेरा बिस्तर लगा हुआथा। दरजे मे उस समय गाढा अँधियाराथा। मनहीं मन में कहनें लगा कि—जो कोईभी हो

अबतो गीले कपड़े नहीं पहरूंगा। भीगे हुए जनटिलमेंननेभी चोगा उतार कर एक ओर को फैलादिया। स्टेशन को छोड़ कर गाड़ी उजालेमें आई, उस समय मैंने अचानक अपने पुराने मित्र बालमुकुन्द जी को अपने पास कमरे में बैठेहुए देखा।

बालमुकुन्दजी बम्बई को गयेथे, उन का आना मुझको विदित नहीं था। आज अचानचक इस घटादार अँधेरेउजाले वर्षा के दिन मे अपनी ही समान उनको भी भीगा हुआ देखकर मैं कह उठा," कब्आये मित्र! तुम तो बम्बई गयेथे न?

मित्रजी ने इसका उत्तर न दिया, और शीघ्रता से मेरे हाथको शेकहेड से मुलायम करते हुए बोले।

"इस वार तुम्हारे मासिक पत्र में छापने को वहुत सी सामग्री इकठी कर ला याहूं।क्या कहूं,हिन्दी लिखना मुझपरनहीं आता नही तो मैं भी आज हिन्दी का एक विख्यात लेखक गिनाजाता"।

मित्र के स्वभाव को मैं भली भाति से जानता था, जवकिउन्होंने सामग्री शव्द कहा, मैं उस ही समय समझगया कि इस वक्त यह कोई अद्भुत कहानी सुनावेंगे। मित्र के कमरे में आने से पहिले मैंने समझ रक्खा था कि अकेले चुप चापजाना पड़ेगा,इस समय कहानी सुनते हुए जाना विचार वहुतही प्रसन्न होकर मित्र सेकहने लगा। "वहुत अच्छा ! आपकी सामग्री लेकर उस को काम में लाने के

लिये मैं तय्यार हूँ, लेकिन इस तरफ की खिड़की तो लगादीजिये, हवा बहुतठंढी आतीहै ।चारों तरफ से कमरे को बन्द करके ज़रा गरम होजावे ॥ "

"गरम होंगे ! अबतक क्यों न कहा" यह कहकर बालमुकुन्दजी न मनीबेग मे से एक जोड़ा सिगरेटके साथ दियासलाई निकाली । मैंने भी सिगरेट को मुँह से लगाया और शीशा लगीहुई खिड़की मे से देखने लगा कि मूसल धार पानी गिर रहाहै । पवन अपने पूरे बलसे वृक्षोंके गले पकड़२करकीचड़में फेकदेनाचाहताहै वृक्षभी अपनी शाखाओंको हिलातेडुलाते हुए, "नहीं नहीं"कहकरखड़े होनेकी कोशि

श कर रहे हैं वृक्षोंका यह तड़फड़ाना देख कर बायु "शन शन" शब्द करके उनको बड़े जोरसे झकझोरनेलगा। यह देखकर कुछकविता सूझी और चट कहउठाकि;–

भांतिरीति कीजेताहीसों बुधिबलजीतिसके जाहीसों

आज सबेरेके समय यही पवन इन्हीं वृक्षो के पत्तो से भांति भांति के खेल कर रहाथा–धीर समीर,–नवीनकोपल–मित्र बीच मेही बोल उठे कि"अनार कली की कहानी सुनी है ?"

"अनारकली? अबतक बहुतसी अनारकली तोड ताडकर फेंकदी, तुम एकही अनारकली की कहानी लिये फिरतेहो ॥

"वृक्षकी अनारकली नहीं, लाहौर की अनारकली।"

। फिर उस अनारकली की कहानी सुना इये, तब सब हाल मालूम होजायगा ॥ बालमुकन्दने सिगरेटमे एक लम्बादम लगाकर कहानीका आरम किया ।

दूसरा परिच्छेद ।

पूर्णिमाके दिन एक समय लीचीके बाग मे टहलने को गया।शाम होगई थी । पूर्व मे एक ओर चन्द्रमा भी उदय होगयाथा। परन्तु बाग मे रहने के कारण चन्द्रमा का गोल और कमनीय मुखमण्डल भली भांति से दिखलाई नहीं देता था।

आकाश का उजाला, पृथ्वी का अंधेरा, दक्षिणी पवन, गुलशब्बो (रजनीगन्धा) की सुगन्ध और कई एक पपइये एकसाथ

मिलकर कुछ कपट जाल फैलारहे थे। मैं अनमना होकर इधर उधर घूमरहाथा, कि—इतने हीं में किसी नें पीछे से आकर पुकारा—"पण्डितजी!"

फिर कर देखा कि निकट के लीची वृक्ष के नीचे गलीचे के ऊपर एक बूढा मुसलमान बैठा हुआ है। मैंने उसके पास जा बंदगी कर के कहा। "आप मुझको पुकारते हैं?"

मुसल्मान ने बंदगी का जवाब देकर कहा' हां, मैंने ही आप को पुकाराहै, आज इस—चांदनी रात में मुझको एक पुरानी कहानी याद आती है, दिल चाहताहै कि किसी को सुनाऊं, अगर आप-

को फुरसत हो तो वराहे नवाजिश इस ग़रीव के पास बैठ जाइये।

खूब कही, यह बूढा पागल तो नहीं है। नजाने कौनसी कहानी सुनावेगा, यह सोचकर उसके पास गलीचे पर बैठगया। पाव धरतेही समझ गया कि-गलीचा ईरान का बना हुआ अधिक मूल्यकाहै, परन्तु इस समय पुराना होजाने से बीचर में छेद होरहेहैं। जिस समय मैं वैठा उस समय वृक्ष के पत्तो के बिच मे होकर चंद्रमा की किरणें बूढे के मुखपर पडरहीं थीं। उसकाल मुझको जानपडा कि गलीचे की समान गलीचे का अधिकारी भी 'आली खान्दान', प्राचीन और बुढा है। एक ओर हु-

क्काभरा हुआ रक्खा था, जिस के कस्तूरी दार तम्बाकूसे मीठी२ महक आरही थी बैठतेही मैंने बूढेसे कहा।

"फरमाइये जनाब",

'आप इस बाग की तवारीख जानतेहैं"?

"जो कुछ यहाकी तवारीख किताबों में पढीहै वही जानता हूँ ज्यादा कुछ नहीं।

"किताबो में पढी है। शायद अंगरेजो किताबों मे? उसका मालूम होना न होना बराबर है। क्या किताब में तवारीख होतीहै? किताबो में तो गुरूर होता है, पराई बदनामी, बुराइयोंसे आज कल की किताबें भरी रहती हैं, हमारी तवारीख को वह लोग कहांसे लावेंगे"

"किताबों पर बूढे की सम्मति जानकर

मुझको हसी आई, परन्तु उस के निकट असभ्यता का प्रगट करना अनुचित जान कर सँभलगया, मनहींमनमें कहनें लगाकि क्या यह भी कोईबात है कि आज कलके इतिहासो मे सत्यबात नहीं रहती। प्रगट में कहा, "अच्छा तो अब अपनी तवारीख कह डालिये।"

चन्द्रमा की चटकीली चांदनीमेंदेखाकि वूढे नें कुछ शोकाकुल होकर धीरे २ अपने नेत्रो को उंगली से पोंछा और कुछ देर पीछे कहा।

"करीब २ चारसो बरस की वात है कि यंहा पर शहनशाह सलीमका एक दौलत खाना था इस वक्त जहांपर यह बाग नजर

आता है ठीक यहीं पर किला था, आज जिस जगह पर हम और आप एक साथ गलीचा बिछाकर बैठे हुए हैं, पेश्तर यहा कसीर पानी था, शाहजादासलीम इस मुकाम पर अपने दोस्त अहबाव और बीवियो के साथ डोगी में चढे हुए सैर किया करते थे और दूरपर जो वह संगमरमर की कब्र दिखाई देती है, उसही के अन्दर शाहनशाह सलीम की प्यारी वेगम अनारकली आराम कररही है।—पडित साहव!शायद आप कहतेहोगे कि सलीम की वेगम नूरजहाँकी कब्रतो आगरेमें वनी हुईहै,फिर यह दूसरी अनारकली कहासे आई।लेकिन जिस वक्त नूरजहाका

नाम नूरजहा नहींथा उसवक्त अनारकली की खूबसूरतीपरबादशाह लोटपोटहोरहेथे। क्या इन बातो को भी आपने अंगरेजी किताबों में पढ़ा है ॥ ",

"नहीं।"–

इसही सबबसे गुजारिश थी कि दूसरे मुल्क के बाशिन्दे इन बातोंसे महज़ नावाकिफहोते हैं। अनारकली को सलीम ने मोललिया, उसके नामको भी कोई नहीं जानता था। ईरानके बाजार से एक आफताबेहुस्न लौंडी खरीदी जाकर हिन्दोस्थानके होनहार बादशाहकी खिदमतके लिये रवाना की गई बादशाहो मे पुराना रिवाज है के कोई

लौंडी—जबतक के वह जवान नहीं होती शाहके सामने नहीं लाई जाती। बादलाँ एक दिन—उस दिन भी शायद इसही तरह का पूरा चाद अपनी चांदनी से हुस्न परस्तो की आतिश इश्क को भड़का रहा था—शाहजादा सलीम यहां जहां यह कब्र दिखाई देती है, उस वक्त यहा सगमरमर का एक चबूतरा बना हुआ था- उस चबूतरे पर तकिये के सहारे बैठाहुआ कुछ सोचरहा था। फीरोजी रङ्गका ओढना ओढेहुए दो लौंडियां शाह जादे के पावदबारहीं थीं, उनको देखनेसे ऐसा मालूमहोता था कि गोया बहिश्तसेदो परिया उतर आई हैं। इतनेही में एक लौंडी एक

नाजुक अदाम नई लौंडी को साथ लियेहु-ए शाहजादे के पास आई, और दस्तूर के मुआफिक कोर्निसकरके अर्ज किया।

"क्या ईरान की लौंडी पर बादशाह की मेहरबानी होगी ?"

शाहजादे ने कहा 'कहांहै वह नाजनी ?'

लौंडी आहिस्ता२आगे बढी और शाह-जादेको कदमबोसी हासिलकी। शाहजादे ने उस शरमीले बदन को इस तरह देखा कि गोया चादका टुकड़ा उतर आया है। पहिले तो एक नजर से उस परी को देखते रहे फिर उसका हाथ पकड़कर पास बैठ-लाया। उस परीतिमसाल के वह गुलाबी गाल कि जिन पर-से हुस्न व जमाल

टपका पडता था,—आहूचश्म और घूंघरवाले काले २ वाल शाहजादे की नजरो मे खुदाई नूर का नमूना थे। बड़ी खातिर से ईरानी लौंडी की ठोड़ी पकड कर उसका मुँह अपनी तरफ़ को फेरा और देखते २ आहिस्ता २-बोले " नाज़नी ! तुम्हारा नाम क्या हे ? ,,

नई लौंडी ने आखे नीचीकरलीं—इसका सबब यह था कि इतने दिन से जिसका नाम बराबर सुन रही थी जिसका दिल खुश करने के लिये इतने दिनसे नाचना गाना सीखा, कई तरह की कारीगरी सीखीं, क्या आज उस ही शाहजादे से आंख मिलाकर बात करसकती हे ; यही सबबथा जो शिर झुकाकर आहिस्तेसे बोली

"नाम तो याद नहींहै। सरकार बहुत छोटे पन मे वालिदैन से अलहदा होकर हजूर की खिदमत करनेको हिन्दोस्तान में आई; सिर्फ इतनाही मालूम है कि शाहजादे की कनीज हूं।"

"तुम बादशाहकीभी बादशाह होगी, तुम्हारा नाम मैं बतलाताहू।"

वह लौंडी जो इस नई कनीजको साथ लाईथी दस्तबस्ता अर्ज करनेलगी।

"शाहजादेसाहब! गुस्ताखी मुआफ हो, इस परी का रंग गुलअनारसाहै, इस ऐसाही कुछ नाम रखदियाजावे।"

सलीमने हँसकरकहा "बेशक! तुम्हारी राय ठीकहै, आजसे इनकानाम अनारकली हुआ।" शाहज़ादेने यह कहकर उ॰॰ के

खूबसूरत लबेमुबारकपर मुहब्बतकीमुहर करदी। लाहौरकी अनारकली इसही परी के नाम को आजतक रोशन कररही है।

तीसरा परिच्छेद।

बाद छै वर्ष के एक दिन—शायद वह रात भी पूरेचादकी थी, इस ही तरह से हरसू पपइये बोलरहेथे और इसही बाग- से सवेरे के गुलाबोंकी महक आकर भीगी हुई हवा को खुशबूदार बनारही थी— बादशाह इसही बाग मे टहलने को आये थे। अब उन को कोई भी शाहजादा सलीम नहीं कहता अब तो वह जहांगीर बनकर दिल्ली के तख्तपर बैठे हैं। साथ मे कोई नहीं, अकेले ही बाग में घूमते हैं। मालूम होता है कि—उस दिन बाद-

शाह का मिजाजशरीफ नहीं था। क्योंकि कुल हिन्दोस्तानके बादशाहका मिजाजशरीफ रहना जरा मुश्किल बात है। बादशाह के दिल पर किसी रजने असर कियाथा इसही लिये वह नाखुश होकर अकेले टहल रहेथे। दोसाल तक जगोजदल में मुब्तला रहकर इस वक्त आराम करने के लिये लाहोर के दोलतखाने में आये हैं॥

हुजूरआली टहलकर महल को वापिस जारहे थे कि उन्होंने एक तरफ से कानाफूसी की आवाज सुनी। जैसे कोई बड़े खौफ के मारे किसी से कुछ कह रहा हो बादशाह को खटका हुआ और वह आहिस्तासे उस आवाज को ताके हुए उस संगमरमर के चबूतरे के नजदीक जाकर देखते

हैं कि-बसा बसायाघर वीरान होगया देखा कि-अनारकली बेगम एक जवान आदमी का हाथ पकडेहुए मुहब्बत से कहरहीहै,

"नाउम्मेद मतहो, मैं तुमको भूली नहीं-हूँ। हमेशा बादशाह के पास रहने से इतना वक्त नहीं मिलता कि-किसी वक्त तुमसे मिलूं, यही सवब है जो इतने दिन तक तुमसे नहीं मिलसकी, आज जरा फुरसत पाकर यहा आई हूं, अगर बादशाह को मालूम होजाय तो-"

बादशाह पर अब चुप नहीं रहागया और गुस्से से बोल उठे "उफ! फाहशा!"

बादशाह को देखते ही वह जवान अनारकली का हाथ छोड कर इस तरह भागा के जैसे हिरन का बच्चा शेर को

देखकर चौकडी भरता है। दरख्तों के बीच होकर वह एक लहमे मे गायब होगया और अनारकली बेहोस होकर बादशाह के कदमों मे गिरपड़ी।

गुस्से के मारे बादशाह की अक्ल जातीरही। तमाम हिन्दोस्तान का फतह करने वाला शहन्शाह जहांगीर! उसकी बेगम का यह चालचलन?

बादशाह दीवाना होगया। म्यानसे तलवार निकाली, लेकिन फौरन उसकोछोडकर खुद ब खुद कहनेलगा।

-इस नापाकके खुनसेमैं अपने हाथ लाल नहीं करूंगा, यहबेहतर होगाके कोईनापाक ही इस बदतमीज को दुनिया से दूर करदे'

-जहांगीर ने अनारकली को देखा;

नहीं और महल में पहुंच एक ख्वाजेसरा को पुकार कर कहा;

"उस सगमरमर के चबूतरे पर एक औरत पडी हुई है, उसको अभी इसी हालत मे चबूतरे के नीचेही जमीनदोज करदो।" दिलही दिल मे कहा, जहापर हम दोनोमे मुहब्बत पैदा हुई थी, अब उस ही चबूतरेपर इसकाखातमा होनाचाहिये"।

पूर्नोकी शवका चाद उसवक्तभी अनारकली के सर पर अपनी किरनोंको डालरहाथा।

चौथा परिच्छेद।

वाद दो दिन के एक रुक्का वादशाह को मिला। इसको अनारकली ने अपने हाथ से लिखाथा। मौत से कुछ ही देर पहिले उस वदकिस्मत ने आव-

दीदा होकर शौहर जहांगीर को लिखाहै, "शौहर जिसके चलन पर शकीदा होजाय उसका मरनाही बेतरहहै; एक मर्त्तव जिस का यकीन जातारहा, फिर किसी तौर उस पर यकीन नहीं होता । उस कुल दुनिया के मालिक से जाकर में अर्ज करूगी के मेरे शौहर को हमेशा शादी रहे ।"

बादशाह रुक्केके मतलबको अच्छीतरह नहीं समझसका। क्या वाकईमे अनारकली फाहशाथी? नामुमकिन! लेकिन आंखोंसे कुल बात देखी और कानों से सुनी है फिर क्यों उसका यकीन न कियाजाय ।

श्याम होतेही जहांगीर वहा गया जहा पर उस परी पैकर की कब्र बनाई गईथी, उस वक्त क्या देखता है के एक

नौजवान हाथों में फूल लियेहुए उस कब्र की तरफ को चला आता है जवान को देखते ही बादशाह आग बबूला हो गया। यह वही था कि जिसनें पोशीदा तौरपर अनारकली से बात की थी।

लेकिन जवान ने किसीका कुछ खौफ न माना, बलके आहिस्तासे नजदीक आकर आदाब के लिये कुछएक सर झुकाया, बादअजा उन फूलों से अनारकली की कब्र-का सिंगार करने लगा। बादशाह उस जवान की यह हालत देखकर हैरत मेंआया और बेसब्रीसे दरियाफ्तकिया "कौनहै" जवान ने चुपचाप रहकर क़ब्र को पूरी तौर से सजाया और फिर घुटनो के बल बैठगया। बादशाह ने बेताब होकर कहा,

"तुम कौन हो ?" बादशाह की तरफ मुखातिब होकर जवान ने साफ२ कहा, "बेकुसूर सिर्फ शकही के ज़रिये जिसको इस दुनियां से रुख्सत कर दियाहै, जिसका लायक चाहनेवाला इस सरायफानी में मिलना मुशिकल है, आपकी उस अनारकली बेगमका मैं हकीकी भाई हूमेरानाम शफीउद्दीनअहमदहै मैने सुनाथा कि-वहन जहापनाहकी बेगम हुई है, यही सबब था जो उसके पास से कुछ लेने के लिये आया था, अब हजूर से यही गुजारिश है कि-मुझको सताइयेगा नहीं, मेरी उस हकीकी वहनको के जिसका जिस्म फूलों से भी ज्यादा मुलायम था तुम्ह सगदिल ने पत्थरों से दबादिया लेकिन मैं तेरी नाम

बरी को फूलों से ढकने के लिये आयाहूँ,
अब ज्यादा सलीमपर नहीं सुनागया। आसमान के तारे, महल दुमहलोंके बुर्ज, बाग़ के दरख्त उसकी आखों के सामने से गायब होगये।

"अफसोस प्यारी अनारकली" कहकर बादशाह शफीउद्दीन की छातीपर गिरपडा

कहानी सुनने में अत्यन्तही मगन होगया था। अचानक घंटी की टंटननन टंटननन सुनाई दी। मेरे उतरने का स्टेशन आगया। शीघ्रता से भीजीहुई अचकन और चादर जूतेको सँभालता हुआ गाडी से उतरपड़ा।

समाप्त।